



श्री चीतरागायनमः

जैन तत्त्व प्रकाश

॥ अथ श्रीनमोष्कार महामन्त्र ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमोआयस्सिआणं
 णमो उवज्झायाणं, णमो लोए, सब्ब साहुणं
 एसो पंचणमोष्कारो सब्ब पावप्पणासणो मंगलाणं
 च सब्बेसि पठमं हवइ
 मंगलं ॥ १ ॥

॥ अथ सबइया घनासरी चालरा लिख्यते ॥

चोधे आरे केरा वर्ष तीन भाढ़ी आठ महिना,
 वाकी रखा जदवीर मुगत पधान्या है ।
 गीछे जिन शासनमें मोटा मुनिराज थया,
 आप तिन्या संसार थी, घणा जीव तान्या है
 सम्वत् अठारे पनरंके साल, चेत सुदि नवम,
 शुक्रवार दिन निलव नेकाल्या है ।

द्वेष करी देव गुरु धर्मतीमें भेद करी,

खोटो मत झाल्यो सठा ज्यांनै गुरु धान्या है
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो,

कृपा राम कहै खेवो पार दया पाल्यां हैं ॥१॥

चौबीसमा महावीर देव ज्यांनै चूका कहै,

ज्यांके नाम सेती माथो मुण्डी माग खावै है

गुरु गीतारथ दया देखी काढ्यो संसार थी,

ज्यांकी निन्द्याकर सठ जनम गमावै है

जीवके वचावै मांहे पाप कहै दश आठ,

कां करा मेलीनें वोधा लोकानें वहकावै है

देव गुरु धर्म तीन, तीनांमें बतावै भिन्न,

सिद्ध पावड़ेमें कह्यो न्याय नर्क जावै है

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कृपाराम कहै दया पुन्यवान पावै है ॥२॥

सात निहव आगे हूवा उवाईमें जिन कहा,

आठमो निहव सिद्ध पावडियेमें चाल्यो है

वाणियेको सुत ग्राम कंटालेको वासी गुरु,

गीतारथ दया देखी दुखसों निकाल्यो है

अविनीत हुवो गुरांकर दियो जुवो, मोह कर्म

उदय हुवो सठ ग्योटो मत झाल्यो है ।

चूका कहै देव सत गुरांमें बतावे दोष,

जीव वचायां पाप कैंवें, बोले जिन झाल्यो है ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कृपाराम दया धर्म पुन्यवान झाल्यो है ॥३॥

जीव दया सुत्रां माहि ठाम ठाम कही जिन,

जीवके वचायां पाप फटेही न जाणी है ।

इशमें अंगरे मांह झाती दीनो फरमाय,

सब जीव दया काज कही जिन वाणी है ।

सूत्र आगम टीकाचूर्णी पयन्ना मांह,

जिहां तिहां जोवो जीव दया ही बखाणी है ।

दया रुचै कोई पुन्यवानरं घट मांह,

निहव कसाई मांस खावै जिणां ताणी है ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

ज्ञानीका वचन सत्य हिरदैमें आणी है ॥४॥

श्रेणिक राजारे सुत हाथी भव दया पाली,

मगरथ राजा दया काज धायो मरणो ।

धम रुचि दया धार कर गया खेवो पार,
 श्रेणिक पड़हो वजायो सूत्रोंमें निरणो ।
 नेम जिन दया पाली छोड़ दी राजुल नारी,
 मेलतारज दयापाली मेट दियो मरणो ।
 तेवीसमां जिनराय तापसके पासे जाय,
 जीवाने वचाय दियो नवकारको सरणो ।
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 जीव दया धर्म पालो जोथे चाहो तिरणो ॥५॥
 आज्ञामें आलस मत करो जिन वयण सुणी,
 आज्ञा बाहिर उद्यमतूं कदे मति कीजिये ।
 आज्ञा तीन प्रकार केरी कही जिनवर ज्ञान,
 समकित चारित्र चित्त दीजिये ।
 धर्म दोय प्रकार सूत्र चारित्र सार,
 मिथ्यात्वीरी करणी कहो किण मांहि लीजिये ।
 आहार तणो इधकार उत्तराध्यन मंझार,
 छकारण छोडिये छकारण कर लीजिये ।
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो,
 जेनं गगन ते न नन्नाये गतीजिये ॥६॥

निहव निकल इण भांत अधिकाइ कीनी,
 आरज्यानें पास बैठी राखे सारो दित्ररे ।
 छेद उत्तराध्ययन माहिं ज्ञानी दीनो फुरमाय,
 बाढमाहें दोष नहीं वस रहें मन रे ।
 थाप रूप दोष नहीं लगावां इम कही जुदो ।
 क्षेत्रवताय नित्तरोज बहिरं अन्तरे ।
 दया दान पूछ्यां कपटाइ सहित जुवाव देंवें,
 जहर जहर वटकेसुं मिल्या अन्त्यो अन्त्यरे ।
 सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 कृपाराम दया धर्म धारे सोई धन्य रे ॥७॥
 श्रावकरो खाणो पीणो गहणो अवृत कहै,
 उवाइसुत्र सुयगडांगजी वतावै है ।
 गहणा कपडाने आवृत कहें ज्याने कहणो,
 गृही लिंगी केवल पाय मुगत क्यों जावै है ।
 श्रावकने तीर्थ सुप्रती कहा जिन मुख्य,
 अराधक सेतीकी अवृत वधावै है ।
 व्रत अव्रत पर नामा केरी कही जिन,
 चौफरसी पुद्गल नजर न आवे है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव कपट कर बोधाने वहकावै है ॥८॥

पड़िमा धारी श्रावकने दान दियां पाप कहै ।

किसो पाप हुवे कहो निहवानें कैवणो ॥

तीन करण तीन जोग पाप रातो त्याग हुवा ।

जिनजी बतायो पड़िमामें माग लेवणों ।

निहव कपट करी बोधा आगे इम कहै ।

साधूके जो आहार बचे वानें क्यों नहीं देवणो ॥

कल्प संभोग मिलायां विना लेवे देवे नहीं ।

कपट क्या करो सठ कित रोक रैवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

पारख्यातो करो बहते लारे नहीं वैवणो ॥ ९ ॥

श्रावकरे तीन करण तीन जोग त्याग हुआ ।

भगवती सूत्रमांहे वीरजी बतायो है ।

अंबडजी श्रावकरा सातसे ही शिष्यलारे ।

तीन करण तीन जोग पाप वोसरायो है ॥

श्रावकने दशा श्रुत स्कन्धमें श्रमणा भूत कह्यो ।

उवाईमें जिन सुसाह वृत्तायो है ॥

ज्ञाताजी सूत्र मांह ज्ञानी दियो पुरमान ।

श्रावकनी समाप्रत श्रावक नाम पायो है ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

श्रावकने जहर बटको कहणो फटे आयो है ॥१७॥

कवाड़ देहेडी जिणमांह नहीं साधपणो ।

उत्तराध्ययन अध्ययन पैंतीसमां बतावै है ॥

जिहां नहीं कवाड़ देहेडी पहचो नाम जिहां ।

मनोहर इत्यादिक रखां दोष थावै है ॥

बृहदकल्प मांह रहणो साधुने अभङ्ग दुवार ।

आरज्यांनै रहणो जठै पडदो बंधावै है ॥

गोचरीकी पटी करो नाम ले निखेधे ज्यांनै ।

कहणो गोचरीमें साधु आरज्यांजी जावै है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

कवाड़ निखेधीचटा कवाड़या जमावै है ॥ ११ ॥

भगवती शतक पनरमें कैरो नाम लई ।

चौबीसमां महावीर ज्यांनै चूका कैवै है ॥

अणुकम्पा करी जिन आपरो वचायो शिक्ष ।

अछता ओगण बोली माथे आल देवै है ॥

आज्ञा मांहें पुन्य आज्ञा बाहिर पाप थावे है ।

ज्वाह सूर माहिं ज्ञानी दीनो फुरमाय ।

आज्ञा बाहिर पुन्य बंधे देवतामें जावे है ॥

गोसालो जमाली जाण तापसादि तज प्रण ।

देव हुवैं आराधक पद नहिं पावैं हैं ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

आज्ञाका अराधक सुख मुगतीको पावैं हैं ॥ १४ ॥

साधु आरज्यारै महाव्रत नववाड मांहें ।

ओछे अध केरो पाठ कटेही न आयो है ॥

आरज्यांनै पहलो व्रत भांग चोथो राखणेको ।

वीतराग देव ऐसो धर्म न बतायो है ॥

आरज्यांनै कवाड देवण खोलणेको नाम ।

साधु विनां न्यारो सठ मूढ़े सुं उठायो है ॥

कवाड़ देवण खोलणेको नाम आयो जठे ।

साधु आरज्यारो पाठ भेलोइ बोलायो है ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नामदीनो ।

बृहत्कल्पमें आरज्यांनै पडदो बंधायो है ॥ १५ ॥

थाप दोष लगावे जिणामें नहीं साधपणो ।

कपट सुं बोले सठ ज्यानैं इम कैवणो ॥

आडम्बर काज इण भांत पच्चक्खाण देवे ।

दरशन विना थे आश्रव नहीं सेवणो ॥

केई गांम जावै इम सोगन करावै ।

दुपच्चक्खाण उपदेश साधूने नहीं देवणो ॥

दरशण आवे केई आरम्भ करावे आय ।

भाव नाही भावे यूं साधूनें नहीं लेवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

पारख्या तो करो वहते लारे नहीं वैवणो ॥ १६ ॥

राय प्रसेणी मै परदेशी राजा मुनीपासे,

समझ्यानें व्रत लिया पीछे दान दियो है ।

आरम्भ सहित दानादिक प्रश्न पूछै,

सुयगडांग मांहै मुनिराज मून लियो है ।

दशमें अङ्गमें दान देवणो निषेधे जैनैं,

वीतरागदेव झूठा बोलो चोर कह्यो है ।

दान दया सूत्रां मांहि ठाम ठाम कही जिन,

दान दया निषेधे जिणको फूटो हियो है ।

सवइयो सावायो कीनो घनासरी नाम दीनो;

दान दया रसकेई पुन्यवान पियो है ॥ १७ ॥

कैसी समणनें चित्र प्रधान कह्यो,

परदेशी धर्म सुण्यां पणी दया पालसी ।

समण भिक्षारी सुख डंड कर थोड़ो लेसी,

दोपद चोपद घणा जीवाने' ड्वारसी ।

आगम बिहारी चित्र परधान सेती कह्यो,

जाके हाथे धर्म आवें चार बोल धारसी ।

उपायसु' राजाने' प्रधान लायो मुनिपासे,

वाणी सुणी राजा जाण्यो येही गुरु तारसी ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

राजनें असार जाण्यो देखी ज्ञान आरसी ॥१८॥

अनन्त चौबीसी सब दान दे संजमलीधो,

देवे देसी अनन्ती चौबीसी जिन कयो है ।

दान दियो वीर ज्याने' परीसह उपना,

कहै सठ ज्याने कह्यो दान मली जिन दियो है ।

पहर छदमस्त रही केवल ज्ञान लही,

आठू ही करम दही शिव सुख लियो है ।

चौदह प्रकार दान पड़ी लाभ कयो जिन,

नव भांत पुन्य न्यारो समुच्चयमें रयो है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव गाडर जेम भइये लारे भइयो है ॥१९॥

वालकनीं बोली बोल बारी शुद्ध नहीं जिम,

निन्हवने वेस्या भांड तीनूं लज्या रहितरे ।

भांड बोले विकल वेस्याके नहीं शील शर्म,

निन्हव कहै चूका देव गुरुमांहे केहतरे ।

चोरादिक सुतने सिखावै चोरी तरवानो,

जिम निहवाके दया रहित बाण देतरे ।

मूजी पणो कपटपन दया रहित हुवै कुसङ्ग,

निन्हवाको मत झाले एता बोले सहितरे ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निन्हव कोयल जिम नहीं हुवै स्वेतरे ॥२०॥

अभिग्रहो धारी मुनिराज काया वोसराई,

आगको परी सहो हुवे तोही नहीं निकलणो ।

कोई काढ़वाने आय मुनीतणोतन सहाय,

सागारी निकाल वंछै उनींको उवरणो ।

जीवको वचावणो निशीथ मांहे दूजे पद,

वारमे सतरमें उद्देसे मांहे निरणो ।

ठाणांग मांहे कलह मिटायां कोलाभ फलो,

जीवणो वंछणो फलो भगवतीमें वरणो ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

जीको खेवो पार दया धरमको सरणो ॥२१॥

फपट करीने सठ सुत्रोंको नाम लेई,

जीवणो मरणो नहीं वंछणो बतावो है ।

आहारादिक लाय आली तरे पोखे शरीरने,

ढांढादिक देखी झटवेसुं टल जावे है ।

इम कहां कहे हमे संजम जीवण वछा

कपट की फही जड़ आगे पलटावे है ।

कोई अनारज आय साधाने परी सहो देवे

श्रावाक बचावे जीनों पापकिम थावे है !

सवइवो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

संधारेको नाम गोपी बोधाने वहकावे है ॥२२॥

साधुने छकारणां सुं आहार करणो छोड़नों कखो

उत्तराध्ययन अध्ययन छत्रीसमें बखाणिये ।

आहार करवाको न्याय ज्ञानी दिया फुरमाय

ज्ञाता अध्ययन दुजेअठारेमें जाणिये ।

दशमी कालक वत्तीस बंध आजीवकानो

आहार कन्या धर्म कैवे सूत्र अणजानिये ।

धर्मक्षयोपशम भाव माहे कह्यो जिनमुख

आहारादिक उदय भाव हिरदेमें आणिये

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

ममता उत्तारी जीयां शिव सुख माणिये ॥ २३॥

दुजे अंग जिन कह्यो प्राक्रमनो इधकार

अज्ञानीको अशुद्ध ज्ञानीको शुद्ध भाखीयो

तेवीशमी गाथा पद चौथेमाहे टीकावाले

पुन्य बंधकयो निर्जराको नहीं दाखियो ।

सुयगडागमें कह्यो मिथ्या कर मास मास

संसारमें रुले कपटाइ सत्य राखीयो ।

निहव कपटक बोधां आगे इमकहे

मिथ्यात्वी आज्ञाके वारे करणीमें नाखियो

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

मिथ्यात्वी मिथ्यात एक अनुयोगद्वार साखियो ॥ २४॥

सूत्र सिद्धान्त सार चाह हृदयमें धार

निहवांको मत जाणो झूठ कपटाई हैं ।

छोड़ निहवांको संग हान रूप लागो रंग
 दयादान रुचि जांकी यड़ी ही पुन्याई है ।
 गुरु गीतारथ भेटी मिथ्यामत दियो भेटी
 क्षमाको सागर भेटया सुखदाई है ।
 छत्ती ऋद्धि छिटकाय संजमसुं मनलाय
 सुगणा मगत मुनि बड़ा गुरु भाई है ।
 सबइवो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो
 कृपा राम दयावान कीरत सवाई है ॥२५॥
 उगणीसे साल वत्तीस सबइया कीना
 छवीस सुणमति कीजो रीस हृदमें धारजो
 चारबोले नरके जाय कछो ठाणा अंगमांय
 ओरही सिद्धान्त सुण हृदय विचारजो
 जीवके वचाया मांही झानी पाप कछो नांही
 अज्ञानीके वचेनांने धूरांइ निवार जो ।
 अनन्ते चोवीसे जिनधर्म कछो भिन्न भिन्न
 इम नहीं कछो मत जीवाने उवार जो ।
 सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो
 कृपाराम कहै जीव दया नित पालजो ॥२६॥
 * इति *

अथ कुराडलिया लिख्यते ।

गृहस्थीके घर साधने, बैठण वरज्यो वीर ।
 कार लोप बैठे कदा, वधे पापकी सीर ॥
 वधे पापकी सीर, भ्रष्ट संजम सुं भाख्यो ।
 दशमी काल अध्ययन, छट्टे में जिनवर दाख्यो ॥
 सुद्ध संजम आराधतां, पहुंचे भवजल तीर ।
 गृहस्थीके घर साधने, बैठण वरज्यो वीर ॥ १ ॥
 जरा रोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर ।
 तिण कारण बैठणतणी, आज्ञा दी महावीर ॥
 आज्ञा दी महावीर, मान तज सूत्र देखो ।
 विन कारण नहीं कछो, बैठणो सूत्र पेखो ॥
 मदवावी से जिण तणा, कल्पातीत गुण धीर ।
 जरा रोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर
 तिण कारण बैठण तणी, आज्ञा दी महावीर ॥ २ ॥
 निन्हव काढी भावना, बोला बांने आय
 लीधा झोली पातरा, लारे चाल्या जाय
 लारे चाल्या जाय, पूठ दो नारी ऊठी
 पूछ्यांकहीं निरदोष, कपटसूं बोले झूठी

रसनारा गृद्धी थका, जिहां लावे जिहां स्वाग
निन्हव फाडी भावना, घोला घांने भाग ॥३॥

दोष बतावे पारका, पोते घोर अंधार
रोगान सपेतो हींगल, चित्राम बहुत प्रकार
चित्राम बहुत प्रकार, थाप घोचा भगमाघै
पूछ्यां नहीं दे जवाब, नहीं सिद्धान्त बतावे
बोधा गुर चेला मिल्या, नहीं पूछे निरधार
दोष बतावे पारका, पोते घोर अंधार ॥४॥

गृहस्थीके घर जायनें, निन्हव कथा सुणाय
बृहत्कल्पमें वरजियो, तीजे उद्देशामाय
तीजे उद्देशे मांह एक गाथाको भाख्यो
वहां नहीं विस्तार वही कारण मुं दाख्यो
कथा भट्ट ज्यू मांडियो, नहीं सूत्रको न्याय
बड़े घरांमें जायने, निन्हव कथा सुणाय ॥५॥

निन्हव महा सत्यांकहें, बैठी राखे पास
उत्तराध्ययनमें जिन कथो, होवे शील विनाश
होवे शील विनाश, लोकमें अपजस थावै
बिन भायां वह पास राखता लाज न आवै

बोधा गुरु चेली मिल्या, नहीं पृछने त्रास
निहव कैवे महा सत्यां, बैठी राखे पास ॥६॥

जिन कलपीने वरजिया, चार बोल जिन आप
निहव तीन छिपायने देवै वाड़ उथाप
देवै वाड़ उथाप, कपट बोधा भरमावै
समझ्या करै पिछान, अजाण्यां गोता खावै
निहव करता कपट सूं, एक बोल उत्थाप
जिन कलपीने वरजिया, चार बोल जिन आप ॥७॥

जङ्गलमें लै आतापना, नहिं समणी आचार
उपासरे मै रैवणो, कपड़ो बांधी बार
कपड़ो बांधी बार, वृहत्कल्पमें आयो
पांचमें उद्देशे माहिं, श्रीमुख आप बतायो
कवाड़ जड़ वोना कह्यो, लो हिरदैमें धार
आरज्याने रहवणो, कपड़ो बांधी बार ॥८॥

महा सत्यांनाम धरायने, संजाव पटली देव
दो झोल्यां ले हाथमें, धव धव करती वेव
धव धव करती वेव सीखले मेला जावे
साधू स्वांग वणाय, जिणांको लायो खावै

व्यवहार सूत्रमें बरजियो, चिन कारण नहिं लेव
 महा सत्यां नाम भरायने, संजाव पटली देव ॥९॥
 निहवाकूं पहुंचाइवा, गृहस्थी जावें लार
 आगे जाय त्यारी करे, भोजन बहुत प्रकार
 भोजन बहोत प्रकार, त्यार कर भावना भावें
 बोलावाने जाय, तुरत पातर लैं आवें
 रसनारा गृद्धि थका, जिहां लोवें जिहां खाय ।
 निहवाकूं पोहचायवा, गृहस्थी लारें जाय ॥१०॥
 भट्टारक भ्रामर कहै, जती खमासण बोल ।
 निहव कै वै भावना, ये तीनों सम तोल ।
 ये तीनूं सम तोल, बुलायां तीनूं जावें ।
 निहव साध केवाय सांग लेइ भेख लजावें ।
 बोधा गुरु चेला मिला, नहिं आचारको तोल ।
 भट्टारक भ्रामर कहै, जती खमासण बोल ॥११॥
 गोसालांने देखिया, अन्यमत बध्या अनेक ।
 जमालीने क्यों दियो ज्ञानी प्रत्यक्ष देख ।
 ज्ञानी प्रत्यक्ष देख, तिलांको छोड़ बतायो ।
 बोधाने इम कहै, इणीमें सब गुण थायो ।

जिन सोमल ब्राह्मण तणो, मरणो कह्यो विशेष ।
 जो जो कारण जिन कह्या, आगम ज्ञानी देख ॥१२॥
 आहार देवै भावसूं, थानै पासे आण ।
 रजी-आदिक देखनें, देवै फूंक अजाण ।
 देवे फूंक अजाण, देख पाछा विर जावो ।
 आडा फिर कहैं लो, तुरत अशुद्ध बतावो ।
 मारगादि करे कारणे, बतलाओ बहु बार ।
 था कारण हिंसा हुई, केम रहे आचार ॥१३॥
 काठा बन्धन बाधिया, भात करी अंतराय ।
 इत्यादि करियां कह्या, अतीचार जिनराय ।
 अतीचार जिन राय, भात अधिके रोदीयो ।
 गाढ़ा बन्धन देख, तेह ढीला कर लीयो ।
 अतीचार लागो किसो, थे निखधो किस न्याय ।
 काठा बन्धन बांधिया, भात करी अन्तराय ॥१४॥
 कह्यो लगाणे पातरे, तीन पसल्ली तेल ।
 चंदरस देनो किहां, कह्यो कहो मानकूं मेल ।
 कहो मानकूं मेल, रात राखन किहां आयो ।
 दशमी काल अध्ययन छठे; गृहस्थी समो बतायो ।

निहव घोघा आगले, यूंही चलावे फेंल ।
 कणो लगाणो पातरे, तीन पसल्ली तेल ॥१५॥
 जनम गांठ आदिक करी, मद्योच्छव मांड्यो धूड ।
 निहव साध केहवाय कर, करे जमारो धूड ।
 करे जमारो धूड, वीरने चूका भाखे ।
 पोताको निरदोष, पणों घोघाने दाखे ।
 झूठ कपट निहव तणो, जांगी रह ज्यों दूर ।
 जनम गांठ आदिक करी; मद्योच्छवमांड्यो धूड ॥१६॥
 वारी पाणी आहारकी, बांधी भर भर लाय ।
 निहव साधकेवायने, आधा कर्मी खाय ।
 आधा कर्मी खाय, हियेमें इतनी आणे ।
 निरदोषण लै आहार, जिणांसु झूठी ताणे ।
 रसनारा गृद्धी थका, आहारादिकने जाय ।
 वारी पाणी आहारकी, बांधी भर भर लाय ॥१७॥
 बाहर दिशा अरु गोचरी, गृहस्थी राखे लार ।
 आचारांग निशीथमें, वरज्यो ते दिलधार ।
 वरज्यो ते दिलधार, तइयादिक माहे वैहरै ।
 जो सूत्र मांहि निषेध, करे ते आपणे महरै ।

वोघा गुरु चेला मिला, नहिं पूछे निरधार ।
 बाहर दिशा अरु गोचरी, गृहस्थी राखै लार ॥ १८ ॥
 करे जाब तो घर तणो, खोली देखो चीत ।
 लेख करावे हाजरी, या तो कूडी रीत ।
 आतो कूडी रीत, केम परतीत न आवै ।
 जो हीवे परतीत नित्त क्यूं लेख करावै ।
 आगे जिन कीधी नहीं, नहीं बताई रीत ।
 करे जाबतो घरतणो, खोली देखो चीत ॥ १९ ॥
 आधा कर्मी आहारको, परतिख दीसे दोष ।
 हिया फूट भेला हुवै, पूजै वोघा लोक ॥
 पूजै वोघा लोक, हिये एती नहिं आणे ।
 निरदोषण जल आहार, किणी तरे लेतो जाणे ॥
 मीठो पाणी राखनो, आहारादिक दै लोक ।
 आधा कर्मी आहारको, परतक्ष दीषै दोष ॥ २० ॥
 वोघाने भर मायवा, निह मांडी जार ।
 कह कोडी कह कांकरा, पाटी रीगट कार ॥
 पाटी रीगट कार, लेख अंधाही वचावे ।
 जो देखणनें जाय, राग रंग करीं रिझावै ॥

अण समझो भगमी पड़े, नमस्तु करे विचार ।

बोधाने भरमायवा, निहय माड़ी जार ॥ २१ ॥

बिन कारण नहिं सुधपणो, निमंथी साथ विहार ।

तुच्छ पलेवण नहिं गत्यणो, नही उद्देशादिक आहार

नहीं उद्देशादिक आहार, भलोकर भूं होगेर ।

दोय बड़ी दिन रखां, जगगदिकनें पलितेरे ॥

साथ आरज्यां साथ रहे, नहीं निशीन अगिहार ।

बिन कारण नहीं सुधपणो, निमंथी साथ विहार ॥ २२ ॥

नित लावै जो एकण घरनें, वारामें एक आहार जी ।

दशमी कालिक तीजेमें कणो, साधु नहीं अणाचारजी

गाथा ॥

श्रीवीर जिनन्द अनुकम्पा कीधी, फोरी, लब्धि गोसालो

बचायो ।

छलेइया छद्मस्थके होती, मोह कर्मवत्त गगन आयो ॥ २३ ॥

जीव उठाय छांयां मेले तो, जाय मैदाग्रत पांचू ही

भागी या गाथा १९ मी बोल ४९ मा ॥

ब्राह्मन जिमायां तमतमा पौहचावै साख उत्तराध्य-
यन १४ में संजतीरी बेयाबत्र लागियां अणुकम्पा साथ

करे ३, पहला महाव्रत पूरा पड़िया आडा जडै किवाड
जी, कूंटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणा-
गारजी १ निहवारा लेख है ।

॥ जवाब ॥

मोलमें जो दाम देई, जोर सुं बचायो कोई

उपदेश दै समझाय जीव बचावियो

कारण चारमें सुं एक कारज कियो

किणमांहे नफो किण मांहे दोष थावियो

इम कहां कहै एक उपदेश माहीं धर्म

तीन मांहे पाप इम उत्तर बतावियो

इम कहे ज्यानें केणो कारणमें पाप हैंके

कारजमें पाप हेके दोनों मांहे आवियो

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

उपदेश आसरो ले बोधानें बहकावियो ॥२७॥

भगवती शतक पहले उद्देसे दूजामें कह्यो

साधुजीमें तीन भली लेख्याका उचारजी

आचारांग श्रुत स्कन्द दूजे अध्ययन पतरमें

भली लेख्या आयां जिन हुवै अणगारजी

भगवती शतक नवमे उद्देशे श्रुतीसमाहें

भली तीन लेख्या आगममें अधिकारजी
ठाणा अंगठाणे तीजे दूजे उद्देशेमें घणा

पन्नवणापद उत्तराध्ययन विस्तार जी
सवइयो सवायो कीनो घनानरी नाम दीनो

लेख्याका लक्षण सुण हिरदं विचारजी ॥२८॥

गोसालाने वीरजी वचायो जी सुं चूका केवै

कुहेत लगावै सठ झूठा देवै आलजी

निहव कपट कर बोधा आगे इम कहै

उवार्यां हो लाभ क्यों नीराख्या अणगारजी
इम कहे ज्यांने केणो केवली त्रिकाल जाणे

सावत्थी क्यों आया कर जावता विहारजी
आउखो निमित्त आयो जांणी लियो जिनराज

मेल्या नहीं दूर वज्यां राखियो व्यवहारजी
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

वीरजीने चूका कहै डूवा कालीधार जी ॥२९॥
निशीथ उद्देशे ग्यारमांमें वीर भांगा चार कछा

साधु ओर आरज्यांने भेला नहीं रैवणो

व्यवहार उद्देशे पांचमांमें साधु छतां मुनि:

आरज्यां कै पास वचन प्रायश्चित्त नही लेवणो
निशीथ उद्देशे चौथे साधु संज्ञा कियां बिना

आरज्यां रे उपासरे प्रवेश न कैवणो
साधु आरज्यांने एक उपासरे आहारादिक मने

बृहत कल्पमें उद्देशे तीजे केवणो
सवइयो सवायो कीनो घणासरी नाम दीनो

कारण सु आहारादिक लेवणो न देवणो ॥३०॥
निह्व कपट कर बोधाने बतावे पाठ

साधु आरज्यांने भेलो भोगणोनै रैवणो
व्यवहार उद्देशे सातमांमें एसो पाठ नाहीं दीखै

कठे किम वोलो पाठ देखावो यूं कैवणो
उत्तराध्ययन सोलमें अध्ययन तीजी वाडमां है

स्त्री बैठे घड़ी दोय जर्हा नहीं ठैवणो
उत्तराध्ययन निशीथ व्यवहार बृहत्कल्प आदि

स्त्रीको परचो वरज्यो पाठ देख लेवणो
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

स्त्रीको कर फरसे ज्यांने डंड काई कैवणो ॥३१॥

अचित्त द्रव्यादिक संती कोई पुन्यवान आप

आपको तो पाप टारे दूजाको टरायो है

अशुभ योग आश्रव मांहि लियो कसो

शुभ योग संवरमें ईमें किरियो पायो है

सनतकुमार तीजे देवलोक ऋद्धि पाई

चारों ही तीरथने सुख शाता उपजायो है

नेमि जिन बागमें विराज्या तिण अवसर

किसन सहाय दे संजम दिरायो है

सबइया सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

ज्ञाता अन्तगड़ मांहि एसो पाठ आयो है ॥३२॥

अनुकम्पा निरवद्य सावद्य कहीने सठ,

पोगलांके घट्ट घोचों झूठो ही फसायो है ॥

अनुकम्पा निरवद्य सावद्य हुंवाथी सठ

धरम दलाली मांहि पिण फेर थायो है

नन्दिपेण उपदेश देइने दीक्षा दराई

चित्र परदेशी केशी स्वामि समजायो है

कोई मुख जयणा करी मारग बतायो शुद्ध

कोई अजयणासु मारग दिखायो हैं

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो

मारग सावद्य निरवद्य किम थायो है ॥३३॥

भगवती सतक सोलमें उद्देशे छठा मांही ,

रतनांकी माला जोड़ा देख्यो जगन्नाथजी ।

चोथा सुपनारे मांहे छोटी बड़ी कही नहीं,

झूठी ढाला जोड़सठ बोधाने बहुकातजी ।

समकित रतन आवश्यकमें जिन कह्यो ,

सम्यक्त रत्न ज्ञाता सूत्र मांहे बातजी ।

सम्यक्त रत्न लें दोई धर्म सम कह्या,

व्रत रतनाको जो बहुत पखपातजी ।

सबइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो ।

समकित पायां निश्चै मुगतीमें जातजी ॥३४॥

अन्न वस्त्रादिक दियां अव्रत सेवाइ कहे,

अव्रत तो दीधी लीधी आवै नहिपारकी ।

निहवाके श्रद्धाएम अव्रतअरूपी जीव,

खावै देवै पुद्गलरूपी बात ये विचारकी ।

भगवती शतक पहले उद्देशे नवमेमें कह्यो,

अव्रतकी क्रिया क्षत्री राजा रङ्ग सारखी ।

चोरादिक वित्त ग्रहो आकुल व्याकुल थयो,

थोड़ी क्रिया लाधां या है वाणी अणगारकी
सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

पारखातो करो सठ खवर न पारकी ॥ ३५ ॥

मूल दृष्टान्त कुण आत्माजीव अरूपी,

निरवद्य भाव द्रव्य गुण पर्यायी है
द्रव्यादि अज्ञान ज्ञान तलावतेमें कियो,

हिंसाव निहवाकी आसुणो कपटाई है
मूल नव नाम कहेय दूजो दृष्टान्त देय,

आश्रव जीव एक जुगल मिलाई है
तलावने नालो एक उत्तर यूं देणो देख,

पुद्गल तलाव नालो एक कहवाई है
सवइयो सवायों कीनो घनासरी नाम दीनो,

यूं नाम हवेलीको उत्तर देखाई है ॥ ३६ ॥
तीन करण तीन योग अठारे पापरा,

त्याग किया वर्णना गिणती भगवतीमें जाणीयो
तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया,

अंबडजीका चेला उवाई पिछाणीयो

तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया,

आनन्दादि श्रावग उपासक दसा जाणियो ।

तीन करण तीन योग अठारा पापरा,

त्याग किया संखादिक भगवती माहिजिन वाणियो ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

अव्रतरी किसी देखो तेज पखताणियो ॥ ३७ ॥

श्रावकरो खाणो पीणो कपड़ो आदि सवाने,

अव्रतमें गिणेज्यानें इण भांत कैवणो ।

राख्यां पाप दियां पाप भलो जाणै तैमैं पाप,

तीना मांहे जिन साधूनें क्या सेवणो ।

कोई तो आगेड़ा लेवै कोई पाड़ीहारा सेवै,

इत्यादि पाप केवो थाने कलपे नहीं रैवणो ।

भगवती सतक बारमें उद्देसे पांचमामें,

पापनें चोफरसी कह्यो पाठ देख लेवणो ॥

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

पारख्या तो करो वहते लारे नहीं वैवणो ॥ ३८ ॥

भगवती सतक वीसमें उद्देसे आठमामें,

श्रावकने तीरथमें लीनों या जिन वाणी है ।

पालतजी श्रावकने महात्मा कया,

जिन सीक्ष कया उत्राध्ययन इफीसमें जाणी है ॥

धम्मिया धम्माणुया धर्म इष्ट आद देई,

सुसीला सुव्वया गुण उवाई पिछाणी है ।

सुयगडांग मांहे धर्माधर्म पक्ष दोय,

तीहां धर्म पक्षमां है साधु श्रावक दो आणी है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

साधुनें श्रावक गुण व्रतांसुं बखाणी है ॥ ३९ ॥

दशमी कालिक छठे अध्ययन आठमी गाथा

अठारे थानक जुदा जुदा किया जाणजी ।

सोलमा थानक मांहे गृहस्थी घर बैठे ताकूं,

अनाचार मिथ्यात अब्रह्म प्राण हाणजी ।

आधा कर्मी दोष थाय जाचकादि अन्तराय,

क्रोधवधे अपूठी कूशील व्रतहाणजी ।

इत्यादिक दोष घणा बैठा कया तीन जणा,

तपसी जरानें रोगादी हुसुर ठाणजी ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

दशमी कालिक देखो तज पखताणजी ॥ ४० ॥

बृहत्कल्प कह्यो तीजे उद्देसे अन्तर घर मांही,
 सतरे बोल करना बीतराग पालीया ।
 अन्तर घरको खोटी अर्थ करीनें निहव सठ,
 रसोडादिक घर कह बोघांने बहका लिया ।
 अन्तर घरमें तपसीनें जरा रोगीयां ने,
 सतरे बोल करणा कद्या ईंमें आगे चालीया ।
 दशमी कालिक सुयगडांग बृहत्कल्प,
 ओर सुत्रांमें वरज्यो पिण देखे नहीं वालीया ।
 सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,
 अज्ञानमें खूताजिणा अज्ञानी सरणा लिया ॥ ४१ ॥
 छठे गुण ठाणे मनपर जव कषाय कुशील,
 छदमस्त रागसहित करी चूका कैवै है ।
 चारित्र नियंठा योग हेतु आदिक केता पावै,
 भवकेता करे संसारमें केता रैवै है ।
 लारे पांचे ते तो भगवन्तमें बताओ सब,
 इम पूछ्यां मूढ सफा जुवाव नहीं देवै है ।
 भगवन्त जीव दया ऊपरें अध्ययन देख,
 परिक्षा तो करे नांहीं बहतां लारे वैवै है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

कल्पातीत जिनकी बराबरी लैवै है ॥ ४२ ॥

जानु परिमाणे नदी उतरे धर्म कहै,

पाणी संघट्टासुं आहार देखी टल जावै हैं ।

किमाड निखेधी अने किवाडियां जडावैमठ,

जिनके ऊपर एसी कुजुगन मिलावै है ।

लड़की बापकी कहै गर्भवन्तीको नाम लेय,

पट्मासब्रव्यां उट्यां बेटां दोष धावै है ।

इम कहै ज्याने केणो याको परमाण किसो,

किवाड किमाड़ी केता हाथको कहवावै है ।

सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

निहव कपट करी बोघाने बहकावै है ॥ ४३ ॥

इसाभद्र श्रावकाने श्रावकां वन्दनाकीनी,

भगवन्त अरु वरु जिन नहीं पालिया ।

पोष्कलीजी संखजीरी हवेलीमें आया,

जिहां उपलाजी वन्दनाकीनी आसणादिदियालिया ।

संखजीने पुष्कलीजी पोसामांह वन्दना कीनी

कह्यो चालो आहार करो संखजी नहीं हालिया ।

भगवतीमें बहुभाव ज्ञानी दिया फुरमाय,

बन्दना करी लियां पछे अपराध खमालिया ।

सबईयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

अंबडने सिष्यां बन्दना कीनी उवाईमें चालिया ॥४४॥

उत्तराध्ययन अध्यन छावीसमें छकारणसुं,

आहार करणो कश्यो नाम न्यारा न्यारा धारजी ।

वेदना वेयावच्च चैत्य इरज्याने,

संजमठाए जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी ।

छकारण छोडना वतायो वीतराग देव,

ज्यांरा न्यारा २ नाम करत उचारजी ।

रोग परीषह जीव दया ब्रह्मचर्य अर्थ,

तपहेत शरीर त्याग कर दे संथारजी ।

सबईयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो,

खाणेमें धर्म हो तो क्यों तजे अणगारजी ॥ ४५ ॥

॥ इति ऋषि कृपारामजी कृत सवाइया सम्पूर्णम् ॥

गौ साताकी पुकार

- सुणो सुणो अंग्रेज बगदुर, गड अरजो करती ।
 मुझ में क्या तकसीर आज में, बंदनाक मरती ॥१॥
- मेरा दूध सब दुनिया पीवें, मैं जगकी माता ।
 ऐसी बात विचार देख, क्यों मुझको मरवाता ॥२॥
- नर दुनियामें ज्ञान जो पाया, नजर नहीं आता ।
 मुझे मारकर पाप न जाणे, क्या गुरू सिखलाता ॥३॥
- बेदरदी तू दरद न जाणे, जुलूम हुआ जाता ।
 महां अनारज कसाइयांसें, मुझको मरवाता ॥४॥
- सभी समझके देखो साहिव, गऊ बहुत डरती ।
 गरीब और लाचार दीन मैं, दूध पिलाके सुख करती ॥५॥
- मेरा दुख मैं कहूं किसी पै, कौण सुणें अरजी ।
 ज्ञानी होय तो ज्ञानसे समझे, और सभी गरजी ॥६॥
- दूध पिलाती पुत्र जनमती, दुनिया पालन कूं ।
 जमींदारका करुं गुजारा, हासिल राजा कूं ॥७॥
- वैद्यक ग्रंथ पढ़ा जो पूरा, मेरी कदर जाणें ।
 शोध संग्रहणी अजीर्ण खोवे, मेरी छाछ स्याणें ॥८॥
- रक्त पित्त दही सिखरन सेती, अतीसार जावैं ।

नेत्र रोग सब और रतोंधी, धीसैं नास पावैं ॥९॥
 सभी रोगपर दवा घृतकी, दवा संग बणती ।
 वादी पित्त सब रोग मिटावे, ऐसा मैं सुणती ॥१०॥
 दवा शुद्ध गोबरसें केई, गोमूत्र सें होती ।
 पांडू शोथ गोमूत्रसे मिटता, जहर केई खोती ॥११॥
 दूध दही घृत छाछ बिगर नर, किसीकै नहीं सरता ।
 मुझसैं पलै और मुझको मारै ऐसा जुलुम करता ॥१२॥
 दूध दही घृत घरमें वरतै, छाछज वैटन कूं ।
 इतने सुख मेरे संघ रहते, लष्ट पुष्ट तन कूं ॥१३॥
 गाड़ी रथके पुत्र जोतते, खेती करनन कूं ।
 ईंधन और घरकी करै शोभा, गोबर नीपन कूं ॥१४॥
 नृपतीके शिर चमर ढोलावै, शोभा बहुत करती ।
 मैं अबला लाचार होयकर, सरणा हिए धरती ॥१५॥
 ॥ इति गौअरजी पदं ॥

॥ अथ साधु करणी, शिखा ढाल ॥

खुशामदी करै दातारनी रमावै वाल, जाणै आहां
 आपे आछी तरै, बांधे पेटनी पाल, ओ मारग नहीं सां
 रो (आंकड़ी) बेटा वहू मां वापना, असत्रीनै भरता

सासू वहू सगातणा, कहै सगाचार ॥ ओं० ॥ २ ॥ लाभ
 अलाभ भाखे बले, ज्योतिपने जोय । जनम मरण वताय
 दै, दोष तीसरो होय ॥ ओं० ॥ ३ ॥ जात जणावे आ-
 परी, दीन दया मणो थाय । आहारन आवे पातरै,
 मूढो दै कुमलाय ॥ ओं० ॥ ४ ॥ ओपय भैपज, फरे बले
 देवै सराप । क्रोध करी लड़ विध लिये, ज्ञानी कछो पाप ॥
 ओं० ॥ ५ ॥ मान माया लोभकरी, हूवा दोषण दश ।
 पहिला पछेनें साथे करै घणोजस ॥ ओं० ॥ ६ ॥ चारण दै
 विरदावली, भोजगने भाट । अणदीधां ओगुण करै, थो-
 थो वैठो पाट ॥ ओं० ॥ ७ ॥ विद्या फोर कामण करै, बलै
 मन्त्रने चूर्न । संजोग मेले सर्वथा, इसड़ा करै खून ॥ ओं०
 ॥ ८ ॥ उसासणारा दोषए गलावे गर्भ । उत्तम ए नहीं
 आदरै, साधू टाले सर्व ॥ ओं० ॥ ९ ॥ रसनाना लंपटी
 थका, मैलै आहार संजोग, आछो मिलियां राजी हुवे
 भूँडो मिलियां सोग ॥ ओं० ॥ १० ॥ ताक २ जावे गोचरी
 लावे ताजा माल । उवास व्रत करै नहीं कुन्दा वन रखा
 लाल ॥ ओं० ॥ ११ ॥ रसनारा गिरधी थका, आरामें जाय ।
 लघुता लागे लोकमें; निंदा धर्मनी थाय ॥ ओं० ॥ १२ ॥ उण

दिन जाय सकै नहीं, रहै रातरा ध्यान । प्रभाते जावे
 तेड़ीयो, स्युं पायो ज्ञान ॥ ओं० ॥ १३ ॥ भारी आहार भली
 तरे, खावे ठंढोठार । भागेवाड तोल्याथका, पीछै हुनै
 भांड ॥ ओं० ॥ १४ ॥ वेसवार भला घालिया, भलो दीयो
 वधार । तीवण आली तरे कियो, बले कहै छमकार ॥
 ओं० ॥ १५ ॥ चावल दालमें वी घणो सरायने खाय । चा-
 रित्रने करै कोयलो, कछो सूतर मांय ॥ ओं० ॥ १६ ॥ नि-
 रसो आहार तीवण बले, नहीं मिरचने लूण । चारित्रमें
 निकले धुओं, खावे माथो धूण ॥ ओं० ॥ १७ ॥ एकण घर-
 सुं बहरता, दश दश जणनो आहार । बाई असन करै
 मोकलो, भावना भावै तिवार ॥ ओं० ॥ १८ ॥ कोई पंथी
 पूछे क्युं खड़ा, देखुं साधारी वाट । रस गिरधाने वो जाय
 कहे, दोड्या जाय गहगाट ॥ ओं० ॥ १९ ॥ माटे पाणी मा-
 यने, नाखै म्ठी राख, बहरावणरे कारणै, बहरे साधपणो
 नाख ॥ ओं० ॥ २० ॥ आधा करमी आहार लै, वाजै मोटा
 साध । जिन पंथने तेरे तीन कियो, सेवै सुख अगाध ॥
 ओं० ॥ २१ ॥ लाखां कीडारी घातसुं, वणै रेशमी वस्त्र ।
 सो पहिरे निरदई थका, वाजै पूज पवित्र ॥ ओं० ॥ २२ ॥

दूसरे गाम पोहचाइवा, जावै गृहस्थी लार । भाव भेल
 आरम्भ करै, वहरी खावै वो आहार ॥ओं॥२३॥ जा-
 गा नीपावे आपणी, कवलू देवै फिराय । आमना जतावे
 आपरी, साधपणो उठ जाय ॥ओं॥२४॥ वस्त्र पात्र था-
 नक बलै, अतै चौथो आहार । साधू जो तृप्तता भोगवै
 ज्यांरी हू बलिहार ॥ओं॥२५॥ आरजा जीमावे हाथसुं
 वांटकर देवै आहार । पासै बैठी रहै आरज्या, चौथो
 घृत गयो हार ॥ओं॥२६॥ सुगडांग सूत्रमें कश्यो, तिरे-
 सो तारणहार । डूवे जिकै किम तारसी, जोवो हिरदै
 विचार ॥ओं॥२७॥

॥ इति पदं ॥



श्रीवीतरागाय नमः

श्री सुखविपाक-सूत्रम्

॥ अहं ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे
णायरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समो-
सढे जंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं
वयासी—जइणं भंते ! समणेणं भग-
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवा-
गाणं अयमट्ठे पणणत्ते सुहविवागाणं
भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं
जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणणत्ते ? तते.
णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं
एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं

भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं
 सुहविवाराणं दस अज्झयणा पणत्ता ।
 तंजहा-सुवाहू १ भद्वनंदीय २, सुजाण
 य ३, सुवासवे ४, तहेव जिणदासे ५,
 धणपती य ६, महव्वले ७॥१॥ भद्वनंदी
 ८, महचंदे ९ वरदत्ते १० ॥

जइणं भंते ! समणेणं जावसंपत्तेणं
 सुहविवाराणं दस अज्झयणा पणत्ता
 पढमस्स णं भंते ! अज्झयणास्स सुह-
 विवाराणं जाव के अट्ठे पणत्ते ?
 तते णं से सुहस्से अणगारे जंबू अण-
 गारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू !
 तेणं कालेणं तेणं समणं हत्थिसीसे
 णामं णयरे होत्था दिड्ढित्थिमियस-

मिच्छे, तस्स णं हत्थिस्सीसस्स णगरस्स
 बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं
 पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो
 उय० तत्थणं कयवण माल पिणस्स ज-
 वस्स जवखाययणे होत्था दिव्वे०
 तत्थणं हत्थिस्सीसे णथरे अदीणसत्तू
 णामं राया होत्था महया० वरणाओ,
 तस्स णं अदीणसत्तुस्स रणणे धारि-
 णीपामुक्खं देवीसहस्सं ओरोहेयावि-
 होत्था । तत्तेणं सा धारिणी देवी अ-
 रणया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास
 घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा
 मेहस्स जस्मणं तहा भाणियव्वं । सु-
 वान्कुमारे जाव अलं भोग समत्थे यावि

जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच
 पासायवडिंसगसयाइ' करावेति, अब्भु-
 ग्गय० भवणां एवं जहामहावलस्स रणणो,
 णवरं पुष्फचूलापामोक्खणां पंचरहं
 रायवरकरणयसयाणां एगदिवसेणां
 पाणिं गिरहावेति तहेव पंचसइओ
 दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्ट-
 माणेहिं मुइ'गमत्थएहिं जाव विहरइ ।
 तेणां कालेणां तेणां समएणां समणे भगवं
 महावीरे समोसडे. परिस्ता निग्गया,
 अदीणसत्तू जहाकूणिओ तहेव निग्गओ
 सुवाहू वि-जहा जमाली तहो रहेणां नि-
 ग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिस्ता
 पडिगया । तएणां से सुवाहुकुमारे सम-

णस्स भगवओ महावीरस्स अतिए
 धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए
 उट्ठेति जाव एवं वयासि-सदहामिणं
 भंते । णिग्गंथं पावयणं० जहाणं देवा-
 णप्पियाणं अतिए बहवे राईसर जाव
 सत्थवाहप्पभिइओ मुंडे भवित्ता अगा-
 राओ अणगारियं पठवइया नो खलु
 अहणणं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता
 अगाराओ अणगारियं पठवइत्तए अ-
 हणणं देवाणप्पियाणं अतिए पंचाणूठव-
 इयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं
 गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं
 देवाणुप्पिया । मा पडिवंधं करेह । त-
 ण्णसे सुवाहुकुमारे ससणस्स भगवओ

महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त-
 सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं
 पडिवज्जति पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं
 आसरहं दुरुहति जामेव दिसं पाउव्वभूए
 तामेवदिसं पडिगए । ते णं कालेणं
 तेणं समएणं समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं
 अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णं
 भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते २
 पिण २ मणुणणे २ मणामे २ सोमे सु-
 भगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणास्सवियणं
 भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४
 साहुजणास्सवियणं भंते ! सुवाहुकु-
 मारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे । सुवाहुणा

भंते ! कुमारेणं इमा एयाहूवा उशला
 माणुस्सरिद्धी किराणा लछा ? किराणा
 पत्ता ? किराणा अभिसमन्नागया ? के
 वा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु
 गोयमा ! तेषां कालेणां तेषां समएणां
 इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थि-
 णाउरे णामं णागरे होत्था रिद्धित्थि-
 मिय समिद्धे तत्थाणा हत्थिणाउरे
 णागरे सुमुहे नामं गाहावई परि-
 वसइ अड्ढे० तेषां कालेणां तेषां समए
 णां धम्मघोसा णामं थेरा जाति सं-
 पन्ता जाव पंचहिं समणासएहिं सद्धि-
 संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामा
 णुगामं दूइज्जमाणा जेणोव हत्थिणाउरे

णगरे जेणेव सहस्सं ववगो उज्जागो ते-
 णेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहाप-
 डिख्वं उग्गहं उग्गिहिहत्ता संजमेणं त-
 वसा अप्पाणं भवेमाणा विहरंति । ते-
 णं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं
 थेराणं अन्तेवासी सुदत्ते णासं अण-
 गारे उशले जाव लेस्से मासं मासेणं
 खममाणे विहरति । तए णं से सुदत्ते
 अणगारे मासवखमणपरणगंसि पढ-
 माये पोरिसीये सज्जायं करेति जहा
 गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं)
 थेरे आपुच्छति जाव अडमाणोउच्च-
 नीय मक्खिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहा-
 वतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे तएणं से

सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज-
 माणां पासनि २ ता हट्टुत्तुट्टे चितमाणां
 दिया आसणातो अब्भुट्टेति २ ता
 पायपीढाओ पच्चोरुहति २ ता पाउ-
 याओ ओमुयति २ ता एगसाडियं उ-
 त्तरासंगं करेति २ ता सुदत्तं अणगारं
 सत्तट्ट पयाइ अणु गच्छति २ ता ति-
 वल्लुत्तो आयाहिण पयाहिणां करेइ २ ता
 वंदति णमंसति २ ता जेणोव भत्तघरे
 तेणोव उवागच्छति २ ता सयहत्थेणां
 विउलेणां असणपाणखाइम साइमेणां
 पडिलाभेस्सामीति तुट्टे पडिलाभे मा-
 गोवि तुट्टे पडिलाभिण्वि तुट्टे । तते
 णां तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणां

दव्वसुद्धेणां दायगसुद्धेणां पडिगाहग-
 सुद्धेणां तिविहेणां तिकरणसुद्धेणां सुदत्ते
 अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे
 परित्तीकए मणुस्साउए निवद्धे गेहंसि
 य से इमाइ पंच दिव्वाइं पाउव्वमूयाइं
 तंजहा-वसुहारा बुद्धा १ दसद्धवन्ने कु-
 सुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए ३
 आहयाओ देवदुदुहीओ ४ अंतरावि-
 यणां आगासंसि अहो दाणा महोदाणा
 घुट्ठे य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिंघा-
 डग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स
 एवमाइक्खइ ४-धराणां देवाणा पिया !
 सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणा
 सत्तद्धेणां मणुस्सजस्से सकयरिद्धी य

जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तत्तेणंसे
सुमुहे गाहावई वहूइं वाससयाइं आउयं पालइत्ता काल-
मासे कालं किच्चा इहेव हत्थि- सीसे णगरे अदीण-
सत्तुस्स रत्तो धारिणीएदेवीए कुच्छिंसि पुत्तताए उव-
वन्ने । तत्तेणं साधारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजा-
गरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्पिं
पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा । सुवाहुणा इमा
एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । पभू
णं भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू । तत्ते णं
से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २
त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तत्ते णं
से समणे भगवं महावीरे अन्नया क्याइं हत्थिसीसाओ
णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स
जक्खस्स जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ ता वहिया
जणवयविहारं विहरति । तत्ते णं से सुवाहुकुमारे समणो
वासये जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विह-
रति । तत्ते णं से सुवाहुकुमारे अन्नया क्याइं चाउदस-
ठ्ठमुद्धिपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवाग-

च्छति २ ता पोसहसालं पमज्जति २ ता उवाग्गपासवण-
 भूमिं पडिलेहति २ ता दग्गम संधारं संधरेह २ ता दग्गम-
 संधारं दुरुहइ २ ता अट्टमभत्तं पगिणहइ २ ता पोसह-
 सालाए पोसहिण अट्टमभत्तिण पोसहं पडिजागारमाणे
 विहरति । तए णं तरस्स सुवाहुस्स कुमारस्स पुव्वर-
 तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे
 एयारूवे अज्झत्थिण चिंतीण पत्थीण मणोगण संकप्पे
 समुप्पन्ते धण्णा णं ते गामागर णगर जाव सन्निवेसा
 जत्थणं समणे भगवं महावीरं जाव विहरति, धन्नाण
 तेराईसरतलवर० जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स
 अंतिण मुंडा जाव पव्वयंति, धन्ना णं ते राईसरतलवर०
 जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण पंचाणु
 व्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर-
 जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण धम्म
 सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरं पुव्वानु पुव्वि-
 चरमाणे गामा णुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव
 विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स
 अंतिण मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । ततेणं समणे भगव

महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं
जाव वियाणित्ता पुब्बाणुपुब्बिं चरमाणे गामाणु गामं दूइ-
ज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे
जेणेव कयवणमालपियरस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव
उवागच्छइ २ ता अहापडिरूवं उगहं उगिण्हित्ता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति परिसा राया निग्गया
ततेणं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा
निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडगिया । तते णं
से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा अम्मापियरो
आपुच्छति; णिक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाते
ईरियासमिए जाव वंभयारी, ततेणं से सुबाहु अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए
सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ ता बहूहिं
चउत्थल्लठ्ठमं तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं
वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए
अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलो-
इयपडिक्कंते समाहिपते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे

कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से णं ततो देवलोगाओ आउक्ख-
 एणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं
 विग्गहं लभिहिति २ ता केवलं वोहिं वुज्झिहिति २ ता
 तहारूवाणं धेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सति, से णं
 तत्थ वहूइं वासाइं सामण्णं परियागं पाउणिहिति आलो-
 इयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालं करिहिति सणंजुमारे कप्पे
 देवत्ताए उववज्झिहिति, से णं तओ देवलोगाओ माणुस्सं
 पव्वज्जा वंभलोए ततो माणुस्सं महासुक्के ततो माणुस्सं
 आणते देवे ततो माणुस्सं ततो आरणे देवे ततो माणुस्सं
 सव्वट्ठसिद्धे, से णं ततो अणंतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे
 वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति वुज्झि-
 हिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्वट्ठुक्खाण मन्तं करे-
 हिति एवं खलु जंवू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहवि-
 वागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ पढमं
 अज्झयणं समत्तं ॥१॥

वित्तियस्स णं उक्खेवो—एवं खलु जम्मू ! तेणं का-
 लेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभकरंड उज्जाणे धन्नो
 जक्खो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदंसणं कहणं

जम्मणं वालत्तणं कलाओ य जुव्वणे पाणिगहणं दाओ
पासाद० भोगाय जहा सुवाहुस्स, नवरं भदनंदी कुमारे
सिरिदेवी पामोक्खा णं पच्चसया सामी समोसरणं साव
गधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी
विजयते कुमारे जुगवाहू तित्थियरे पडिलाभिए माणुस्सा-
उए निवद्धे इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुवाहुस्स जाव महा-
विदेहे वासे सिज्झिहित वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वा-
हिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ वितियं अज्झयणं
समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो—वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं
वीरकण्हे जक्खे मित्ते राया सिरी देवी सुजाए कुमारे
वलसिरिपामोक्खा पच्चसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्व-
भवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अण-
गारे पडिलाभिए मणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने जाव
महा विदेहे वासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति
परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्तं करेहिति ॥ तइयं
अज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुरं णगरं णंदणवणं

(मणोरमं) उज्जाणं असोरो जक्खो वान्णवदत्ते राया
कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दपामोक्खा णं पंचसया
जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दं
अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥ चोत्थं अज्झयणं
समत्तं ॥४॥

पञ्चमस्स उक्खेवओ—सोगंधिया णगरी नीलासोए
उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ता
देवी महचंदे कुमारे तस्स अरहदत्ता भारिया जिणदासो
पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी
मेहरहो राया सुधस्से अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥
पञ्चमं अज्झयणं समत्तं ॥५॥

छठस्स उक्खेवओ—कणगपुरं णगरं सेयासोयं
उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचन्दो राया सुभद्दा देवी
वेसमणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पञ्चसया
कन्ता पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं धनवती जुवरायपुत्ते
जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया संभूतिविजए
अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ छठं अज्झयणं
समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो—महापुरं णगरं रत्तासोगं उज्जाणं
रत्तपाओ जक्खो वले राया सुभदा देवी महच्चले कुमारे
रत्तवईपामोक्खाओ पच्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थय-
रागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्ते गाहावती
इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तमं
अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अठ्ठमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवरमणं उज्जाणं
वीरसेणो जक्खो अज्जुण्णो राया तत्तवती देवी भहनन्दी
कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पच्चसयाजाव पुव्वभवे महा-
घोसे णगरे धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडि-
लाभिए जाव सिद्धे ॥ अठ्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभहे उज्जाणे
पुन्नभहो जक्खोदत्ते राया रत्तवई देवी महचंदे कुमारे
जुवराया सिरिकंतापामोक्खा णं पच्चसयाकन्नाजाव
पुव्वभवो तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्मवीरिए
अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ नवमं अज्झयणं
समत्तं ॥ ९ ॥

जति णं दसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! तेणं
कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था उत्तरकुरु

उज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदी राया सिरिकंता
 देवी वरदत्ते कुमारं वरसेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया
 तित्थयरागमणं सावगयम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तट्टुवारं
 नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुद्धं अणगारं पडिलाभिण
 संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निवद्धे इहं उप्पन्ने सेसं
 जहा सुवाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पंत
 रिओ जाव सब्बट्टुसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइत्तो
 जाव सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति
 सब्बट्टुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंवू ! समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स
 अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सेवं भंते ! सेवं भंते !
 सुहविवागा ॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा
 दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झ-
 यणा एकसरगा दससुचेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं
 सुहविवागो वि सेसं जहा आयास्स ॥ इति एक्कारसमं
 अंगं समत्तं ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

इअ सुखविपाकसुत्तं समत्ताम् ॥

हितोपदेश

चालो २ भुगत गढ़ माहीं, थाने सतगुरु रखा सम-
झाई रे ॥टेरा॥ थाने मानवको भव पायो, चिन्तामणि
हाथज आयोरे ॥चा०॥ काया दीसै रंगी चंगी दया धर्म
करो नवरंगी रे ॥चा०॥२॥ मात पिता लाड़ लड़ावे
स्वार्थ बिना अलगा जावो रे चा०॥३॥ तू परणीने लाग्यो
लाड़ी, बापण नहिं आसी आड़ी रे ॥ चा० ॥४॥ सूरी
कंता नारी देखो, सूवर मे चाल्यो ईंको लेखो रे ॥चा०॥
॥५॥ धन दौलत माया जोड़ी, भेली कर मेली कोडी
कोडी ॥चा०॥६॥ सागर सेठ थो धनको लोभी, समुद्र
में गयो ते डूबी रे ॥चा०॥७॥ मायाजालकी माया मेटो,
सतगुरु जीने लेवो भेटी रे ॥चा०॥८॥ दया दान कमाई
कीजे, नरभवको लाहो लीजे रे ॥चा०॥९॥ उगणीसे वा-
सठ माहीं रामपुर रखा सुख पाहिरे ॥चा०॥१०॥ कहै हीरा
लाल गुणवन्ता जिन धर्म करो पुन्यवन्ता रे ॥चा०॥११॥

अथ चौबीसी लिख्यते

लावणी—अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु

समरणा, तीर्थङ्कर रतनागी माला, सुमरण नित्य करणा ॥
 समरीये माला, मेरी जान समरीये माला ॥ ज्युं कटे
 करमका जाला, ये जीव तणा रखवाला, ध्यान तीर्थंकर-
 का धरणा रे ॥ ध्या० ॥ पाच पद चौवीस जिणंदका
 नित्य लीजे सरणा ॥१॥ ए आंकणी ॥ श्री रिपभ अजित
 संभव अभिनन्दन, अति अनन्द करना ॥ सुमति पदम सु
 पार्श्वचन्द्रप्रभ, दास रहुं चरणा ॥ चरण नित्य वन्दु, मेरी
 जान चरण नित्य वन्दु ॥ ज्युं कटे करमका फन्दा,
 तुम तजो जगतका धन्धा, दीठा होये नयन अमितो ठर-
 णारे ॥दीठा॥ पाच पद ॥२॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासु
 पूज्य हिरदय मांहे धरणा ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांति
 जी, दास रहुं चरणा ॥ जिणंद मोहे तारो, मेरी जान
 जिनंद मोहे तारो ॥ संसार लो मोहे खारो, वैराग्य लो
 मोहे प्यारो, मैं सदा दास चरणारो नाथ जी, अब कृपा
 करणारे ॥नाथ०॥ पांच पद० ॥३॥ कुंथुं अर मल्लि मुनि
 सुव्रतजी, प्रभु तारण तारणा ॥ नमि नेम पार्श्व महा-
 धीरजी, पाप परा हरणा ॥ तरे भव्य प्राणी, मेरी जान
 तरे भव्य प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सूणों सूत्र सिद्धांत

स्तवन

दरशन करवादे रे पूजका दरशन करवादे । आज
मारे आनन्द उछवको दिन पूजका दरशन करवा दे ॥
टेर ।

सागर जिम गंभीर पुज्यजी ।
शीतल चन्द्र समान ॥
कल्पवृक्ष सम आप सोवता ।
महा गुणोंकी खान ॥ पु० ॥ १ ॥
सुरज सम उद्योत धर्मको ।
करता वरतो आप ॥
ग्यान ध्यान वैराग तपस्या ।
करता प्रभुका जाप ॥ पु० ॥ २ ॥
मीठी वाणी आपकी सरे ।
जैसे इमरत धार ॥
सुणता रिद्ध सिद्ध सम्पदा पामें ।
वरते मङ्गलाचार ॥ पु० ॥ ३ ॥
पञ्च महाव्रत पालतासारे ।
पांच मेरु समान ॥

दोप बयालिस टाल मुनीश्वर ।
 निरमल जाको ज्ञान ॥ पु० ॥४॥
 पांच प्रमादमें गुमीयो संगे ।
 रात दिवसके मांय ॥
 तेरेकाट्टीया चित्त बल्लभ सा ।
 क्योंकर दरशन पाय ॥ पु० ॥५॥
 काम क्रोध मद लोभमें सरे ।
 करता जै जै कार ॥
 धर्म रतन पल्ले नहीं बांध्यो ।
 क्योंकर उतरे पार ॥ पु० ॥६॥
 विषे भोगमें भम रयोसरे ।
 खान पान सुखकार ॥
 वेष्टा वेष्टी कुटुम्ब कवीलो ।
 इणसे इधको प्यार ॥ पु० ॥७॥
 राग धेस मोह जालमें सरे ।
 भम रयो जीव अपार ॥
 माया ममता मांही राच्यो ।
 याको वड़ो विचार ॥ पु० ॥८॥

भारी ओगण गावता सरे ।
 केहताने आवे पार ॥
 सब ओगणमें पेलो लम्बर ।
 खुले न मोक्ष दुवार ॥ पु० ॥ ९ ॥
 पुज २ श्री जुहारीलालजी ।
 जग वच्छल महाराज ॥
 राधालाल चरणोंका चाकर ।
 भव २ सारो काज ॥ पु० ॥ १० ॥
 उनीसे सीतन्तर सालमें ।
 बीकानेर चौमास ।
 चार तीरथमें नित सुख बरते ।
 पूरो मनकी आश ॥ पु० ॥ ११ ॥

(इति सम्पूर्ण)

સમાધિ વોધ.



આત્મ જ્ઞાનને આપણે, કરી સત્યનો શોધ;
માનવ જન્મ સફળ થવા, સમજ સમાધિ બોધ.



પવિત્ર ક્રિયા માર્ગમાં રચિયંત લગ્યાત્માઓને
વાંચવા વિચારવા માટે. . . .



ખક:-મહેતા કુલચંદ હીરાચંદ મુ. મોરબી.

પ્રકાશક:-અમરચંદ કાનજી મોરબીવાળા

હાલ—મુ. કુમુંડા—(માનભુમ).



૧. ૧૬૯૩]

[સને ૧૯૨૭]



ધી પરમાર પ્રીન્ટીંગ પ્રેસ—રાજકોટ.



પ્રસ્તાવના.



આખી દુનિયામાં જેટલી મનુષ્યની વસ્તી છે તેમાંની તદ્દન જંગલી લોકોની સંખ્યા ઊઠ કરતાં, બાકીના તમામ લોકો ધર્મને જીવ સાટે ગણી ધર્મ સાટે જીન આપવા તૈયાર થાય છે. પણ તેમાં અનેક મતમતાંતરોના ફાંટા પડી સૌ પોત પોતાને મોક્ષના અભિલાષી માને છે, છતાં આચરણ એક બીજાથી તદ્દન ઉલટાં હોય છે; વળી દરેક પંથનું મૂળ તપાસીશું તો ઘણાખરામાં અહિંસા, સત્ય, અદત્ત, બ્રહ્મચર્ય, દાન, તપ અને ભાવ છે. એ બધું શાને માટે? સંસારથી મુક્ત થવા માટેજ.

મનુષ્ય ભવ મળવો ઘણો દુર્લભ છે, છતાં આજે તે આપણે મેળવવાને શક્તિવાન થયા છીએ, તે

આત્માનું સાર્થક કરવા માટેનું છે, નહિ કે અધમ
આચરણ આચરી પાછું અધોગતિની શ્રેણીએ ઉતરવા.

જાનીઓ પરમાર્થ ખાતર અતિ પરિશ્રમ વેઠી,
સૂત્ર સિદ્ધાંતોથી સમજ આપવાનું કાંઈ બાકી રાખી
ગયા નથી, તો તે રસ્તે ચાલી આત્માનો ઉદ્ધાર
કરવાનું મનુષ્ય કર્તવ્ય ભૂલી અધોગતિમાં જવાનું
કાણું ધર્યો?

મોક્ષ માર્ગને અનુસરવાને મુમુક્ષુ જીવો રાત
દિવસ મગ્યા રહ્યા છે. મુનિ મહારાજો પોતાના
આત્માનું સાર્થક કરવા સાથે, મુમુક્ષુઓને મુક્તિ
માર્ગમાં દોરે છે, છતાં પણ બધો કાળ બધે સ્થળે
તેવા મહાત્માઓની હાજરી હોતી નથી. તેઓની
ગેરહાજરીમાં વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન કરી તેમાં જોડી રાખે,

એવાં સરળ પુસ્તકો વાલતી ભાષામાં રચાવાની જરૂર છે, તે સંજ્ઞનો સમજે છે.

જૈનદર્શનના ત્રણ પ્રીરકા કે તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલ ગચ્છ ગચ્છાંતરને વાંચતાં જરા પણ વિરોધ ન જણાય અને અન્ય દર્શનીઓ પણ જૈનધર્મનું રહસ્ય વિના અપવાદે વાંચી જોધ લઈ શકે, તેવી શૈલીમાં આ “ સમાધિ વોધ ” નામનું નાનું પુસ્તક જ્ઞાનીઓની ગિર્વાણ ભાષામાંથી, દોહરા રૂપે દોહન કરી સંજ્ઞનો સમજા મૂકું છું, અને તે આવકારદાયક નીવડશે એમ ઈચ્છું છું. -

પ્રસ્તાવનામાં લાંબાણ કરવા કરતાં આ પુસ્તકમાં લખેલા દરેક વિષય ધ્યાનપૂર્વક વાંચ્યાથી ખાત્રી થશે કે, તેમાં આત્મજ્ઞાન સાથે વૈરાગ્ય ઉભરાઈ જતાં, સંસાર ઉપરનો મોહ ઓછો થઈ આખર વખતે



સમાધિ મરણ કરાવે એવી શક્તિ હોવાથીજ આ
ગ્રંથનું નામ “ સમાધિ બોધ ” રાખવામાં આવ્યું છે.

આ પુસ્તકમાં આવેલા વિષયોની ટુંક હકીકત
નીચે મુજબ છે.

(૧) સ્તુતિ. (૨) અનિત્યાદિ ધાર અને મૈત્રી
આદિ ચાર મંળી સોળ લાવના દોહરામાં હોવાથી
મુખપાઠે કરવા ની સુગમતા સાથે આત્મજ્ઞાન પણ થશે.
(૩) ચોવીસ જીન સ્તુતિ સાથે અઢાર પાપ સ્થાનક
અને આઠ કર્મ નિવારણ લાવના પચીસી. (૪)
સંક્ષિપ્ત ધ્યાન સ્વરૂપના પેટામાં (અ) દર્શન (બ)
જ્ઞાન (ક) ચારિત્ર-જેમાં અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય,
બ્રહ્મચર્ય, અકિંચનતાનું વર્ણન છે, તેમ તેમાં શ્રાવકના
ધાર વ્રતોનો પણ સંક્ષિપ્ત સમાવેશ કરેલ છે.
એટલે સર્વ વિરતિ અને દેશ વિરતિ ચારિત્રનો

સમાવેશ થાય છે. વળી તેમાં પ્રતિક્રિયાથી આશય પછી
 છેવટ જે મોક્ષનું સાધન સમાધિ મરણ અથવા
 પંડિત મરણ નીપજવવાને માટે આત્માને ટેમ સ્થિર
 કરવો તેને માટે સમાધિ શતકના પેગમાં સંલેખના
 અને મૃત્યુ મહોત્સવ દોહરા રૂપે દાખલ કરેલ છે,
 જે મનન કરવાથી અંત સમય પંડિત મરણ કરાવવાને
 બહુ ઉપયોગી છે. (૫) કર્મની વિચિત્રતા સંજ્ઞાથી
 કેટલાક ઉપદેશી દોહરા છે. (૬) ઉપદેશી દોહરા છે.

પરિચય :—મેં ૪૨ વર્ષ સુધી ઐજન્મી

તેમજ મોરળી સ્ટેટ કેળવણી ખાતામાં જુદી જુદી
 જગ્યાએ નોકરી કરી ૬૦ વર્ષની ઉંમરે મોરળી સ્ટેટ
 તરફથી પેન્શન મેળવી ૧૬ વર્ષ થયાં નિવૃત્તિમાં રહી
 ધર્મ ધ્યાન કરતાં જે કાંઈ ગ્રંથો વાંચવામાં આવ્યા
 તેમાંથી મને જે કાંઈ તત્ત્વ ગ્રહણ કરવા લાયક
 લાગ્યું તે દોહરા રૂપે જુદે જુદે વખતે ટાંચણ

કરેલું તે વિષયો અનુક્રમે ગોઠવી આ “સમાધિ
ગ્રાંથ” નામે પુસ્તક તૈયાર કરેલું છે, એટલે તેમાં
ત્રુટિઓ રહેવાનો સંભવ તો છે, પણ એકંદરે જન-
સમાજને કાંઈ ઉપયોગી થાય એમ જાણી છપાવવાને
લલચાઉં છું.

શ્રી શ્રે. સ્થાનકવાસી જૈન ડોન્ટ્રેન્સ પ્રકાશનાં
ગ્રાહકોને વિનામૂલ્ય ભેટ આપવા માટે આ આવૃત્તિ
છપાવવામાં આવી છે. અને તેના ખર્ચ પેટે રૂ.
૧૦૦) અંકે એકસો શ્રી અભેચંદ એન્ડ બ્રધર્સ
(કુસુંદા) માનભૂમ તરફથી મદદ રૂપે મળેલા છે.
ગાંધીનું ખર્ચ “પ્રકાશ” એક્પ્રેસે આપવા સ્વીકાર્યું
જેથી આ અમૂલ્ય પુસ્તકનું પ્રકાશન અને પ્રચાર
થવા પામેલ છે.

કુલચંદ હીરાચંદ મહેતા.

સમાધિ વોધ.

૨૨૬૬

સ્તુતિ.

અરિહંત સિદ્ધ આચાર્યજી,	ઉવઆય સૌ સાધ;
ગુરુ ગણુધરને પ્રણમતાં,	પ્રજળે પાપ અગાધ.
અષ્ટ કર્મ અરિને હણી,	પામ્યા કેવળ જ્ઞાન;
બાર ગુણે ખીરાજતા,	અરિહંત લગવાન.
સકળ કાર્ય સિદ્ધિ કરી,	પામ્યા શિવ સુખ વાસ;
અષ્ટ ગુણ આરાધીએ,	પહોંચે મનની આશ.
પાળી પદ્ધતિ શીખવે,	અણુગારી આચાર;
સમ દ્રષ્ટિ સહુ શિષ્ય પર,	નમું છત્રીશ ગુણુધાર.
લણે લણાવે લાવથી,	સૌ સિદ્ધાંત સમુદાય;
પચીસ ગુણુ ધારી સદા,	નમું પ્રભુ ઉવઆય.
પાંચ મહાવૃત પાળતા,	છે છકાયના પીર;
ગુણુ સત્યાવીશ શોભતા,	નમું સાધ ગણુ ધીર.
ગુણુ એકસો આઠ એ,	લજ જીવ આણી લાવ;
મારગ મોક્ષ દારને,	લવ દધિ તરવા નાવ.

પ્રથમ આત્માને ધ્યાન સન્મુખ કરવા માટે
સંસાર દેહ લોગાદિથી વૈરાગ્ય ઉપજાવવા સારૂ બાર
લાવના કહે છે.

જ્ઞાનાર્થેવ આદિકથી,	શોધી સખળ સહાય;
બાર લાવના લાવના,	પુણ્યચંદ ચિત્ત ચક્રાય. ૧
સુત્ર રહસ્ય સમન્તું નહિ,	સમન્તું ન કવિતા ન્યાય;
શૈલી વિરૂદ્ધ વદાયતો,	સુચવી શ્રેણી સહાય. ૨
બાર લાવના લાવતાં,	ચિત્ત વરતે સમભાવ;
વિરાગતા વધતી થતાં,	મળે ધ્યાનનો લાવ. ૩
મોક્ષ મહેલમાં પહોંચવા,	કરશે શુભ વિચાર;
ચઢતે લાવે પ્રગ ધરે,	સીડી લાવના બાર. ૪
અનિત્ય અસરણુ લાવના,	ત્રીજી તે સંસાર;
એકત્વ અન્યત્વ ને,	અશૂચી ઊર ધાર. ૫
આશ્રુવ સંવર નિર્જરા,	ધર્મ લાવના લાવ;
લોક બોધિ દુર્લભ સહુ,	લવ તરવાનાં નાવ. ૬

૧ પહેલી અનિત્ય ભાવના.

પંચવિષય સુખ લાગીક છે,	લાગીક છે ત્રી લોક;	
અવિચળ ગણી ન આદરો,	અનિત્ય જાણો દોક. ૧	
ધન ધાન્ય કુટુંબ ત્રીયા,	આદિ પરિચક પાપ;	
કાયા લાજન રોગનું,	છતાં મુંઝાણો આપ. ૨	
શરીર વ્યાધિનું ધામ છે,	જોગન ચક્ર જરાય;	
સંપદા વિરૂદ્ધ વિનાશ છે,	જીવન લે જગરાય. ૩	
સંબંધ કર્યા સંસારમાં,	ગણી સારમાં સાર;	
બંધાઈ કરમ બંધને,	થયો અંત ખુમાર. ૪	
પલ પલમાં પલટે દશા,	વિરૂદ્ધ સાંજ સવાર;	
નિત્ય ન કાંઈ દેખીએ,	અનિત્ય સુખ સંસાર. ૫	
વિવેકથી વિચારતાં,	સુખથી હુઃખ અનંત;	
છતાં હુઃખને સુખ ગણી,	સુખને હુઃખ કહંત. ૬	
કુટુંબ પરિચક કાંઈ ગયો,	વળી જાય છે જોય;	
બાંકી પણ નિશ્ચે જશે,	તો જીવ શાને રોય? ૭	
તન ધન પુત્ર પરિવારને,	અનિત્ય આ સંસાર;	
નિત્યશું પ્રીત લાગી નહિ,	એળે ગયો અવતાર. ૮	

અહો આશ્ચર્ય આ કેટલું ? જાતું જગત જણાય;
 તોય ન ચેત્યો આત્મા, જાણે અમર નિજ કાય. ૯
 સગાં સંબંધી સ્નેહીઓ, સી પુત્ર પરિવાર;
 સ્વાસ્થ સાધી સર્વ તે, કરે અંત હિંસાર. ૧૦
 કોઈ શત્રુ પરભવ તણા, આ ભવનો પરિવાર;
 વેર વાળના કારણે, લે અવતાર નિજ દ્વાર. ૧૧
 વાળે વેર અતિ આકરાં, પ્રેરી વચન પ્રહાર;
 કર સહન સમ ભાવથી, આણી કર્મ વિચાર. ૧૨
 બંધુ શત્રુ પરભવ તણા, શત્રુ બંધુ છે આજ;
 ભૂલી ભાન પરવશ પડ્યો, એથી કયું અકાજ. ૧૩
 ભવન બંધુ નહિ સમજવાં, પ્રેરે પાપ અપાર;
 અધ્યસ્થ સદ્ગુરૂ મિત્ર તે, ભવ તરવા આધાર. ૧૪
 વસ્તુ સમુહ સંસારના, પર્યાયે પલટાય;
 અવિચ્છાળ કાંઈ ન દેખીએ, નહિ અમર આ કાય. ૧૫
 ભવ ભ્રમણના પંથીઓ, વિષય સ્થળ રહી વિશ્રામ;
 દુઃખાન કંપાતા મરી, પામે દુર્ગતિ ઠામ. ૧૬
 ભવમાં ભમતા પંથીઓ, પામી માનવ દ્વાર;
 વિષયાદિકને વશ પડી, મેળવે ભવ ઘટમાળ. ૧૭

પર પુદ્ગળ પરિઘડ મળ્યો, પલમાં પરનો થાય;
 ખાળે અંતર આપણું, છતાં જીવ લોભાય. ૧૮
 ઇંદ્રિય જનીત સુખ સુખ નહિ, દુઃખ દુઃખ છે દુઃખ;
 શ્રીતળ શાતા પામવા, પડવું અગની સુખ. ૧૯
 આપે વિત્ત પેદા કરી, પોખ્યો નિજ પરિવાર;
 નિચ ગતિ નિજ એકને, સહાય કોણ થનાર? ૨૦
 હીંસક શાસ્ત્ર તેં સંચીયાં, વાપરે વંશ વિસ્તાર;
 નીચ ગતિ નિજ એકને, માલ ન કોઈ થનાર. ૨૧
 આથી આતમ ચેતીને, જો હેય ઉપાદેય;
 અરલ શુદ્ધ વ્યવહારથી, ભવ સુધરશે જોય. ૨૨
 યામી દુર્લભ મનુષ્ય ભવ, હીતા હીત સમજાય;
 છતાં અહિત આદર કરી, વિષય વિષ ફળ ખાય. ૨૩
 ફૂળને વૃક્ષની ઉપમા, આપે જ્ઞાની કોય;
 મનુષ્ય પક્ષી આવી મળે, ઉડી જતાં જોય. ૨૪
 પ્રસાતે વાળાં વાગતાં, ગાતાં મંગળ ગીત;
 મધ્યાને મોં ઢાંકીયાં, રૂઢન શુભ્યાં ભયભીત. ૨૫
 પરમાણુથી જે થયા, પ્રાણી માત્રના દેહ;
 પરમાણુમાં જઈ મળે, તેમાં શો સંદેહ? ૨૬

ચરમાણું સૌ વિશ્વના,
 એથી અનંત ગણા કર્યા,
 અકેક યોનીમાં ઉપજ્યો,
 શુદ્ધ સમકીત અભાવથી,
 એક પરમાણું એહવે,
 શરીર રચના અહારમાં,
 ઇંદ્ર ધનુષ્યની ઉપમા,
 અત્યંત સુંદરતાં છતાં,
 જળ પ્રવાહી પ્રોઠો જતો,
 આયુ ધન જોગન ગયાં,
 જળ પ્રવાહી પાછો કદી,
 આયુ યૌવન સુંદરતા,
 આયુ જળ જળ અંજળી,
 પૃથ્વીપાણું વિકટ અતી,
 મન વાંછિત વિષયો મળ્યા,
 ગાળ ગાળગર તણી,
 માલ ધન કુટુંબ કીરતિ,
 માદળ સમ વિખરાય છે,

ગણતાં નહિ ગણાય;
 એવે ભવ ધણાય. ૨૭
 અનંતાનંતી વાર;
 આંવ્યો ન ભવનો પાર. ૨૮
 રહ્યો નથી અવશેષ;
 વપરાયા વિણ લેશ. ૨૯
 તન ધન ને અધિકાર;
 વિલય થતાં શી વાર? ૩૦
 વળે ન પાછો જેમ;
 ફરી ન આવે તેમ. ૩૧
 વળવા સંભવ હોય;
 પાછાં ન પામે કોય. ૩૨
 યૌવન મદ પણુ એમ;
 તોપણુ દેહસુ પ્રેમ. ૩૩
 સંયોગ સ્વપ્ન સમાન;
 અંત નહિ નિશાન. ૩૪
 રિદ્ધિ રાજ ભંડાર;
 ધન જોગન અધિકાર. ૩૫

વૃક્ષ નીરજીવ થાય તો, મળે કાંઈ મુલદાર;
 અસાર મનુષ્યા દેહ આ, આપે છેવટ છાર. ૩૬
 ચંદ્ર સુર્ય રતુ ગ્રહો, ફરી ફરી દેખાય;
 ગયું શરીર ન સાંપડે, તેની શી મમતાય. ૩૭
 સુખ દુઃખ આદિ અંત સદા, જોતાં નહિ જણાય;
 સુખીઆ દુખમાં દુખતા, દુખી જીવ સુખી થાય. ૩૮
 માતમ પ્રગળ છે મોકનું, ભૂંડ્યો આપને આપ;
 પરને પ્રભુતાથી લાભું, માની મહદ પ્રતાપ. ૩૯
 તન ધન યૌવન ણાંધવો, પ્રિયા પુત્ર પરિવાર;
 અનિત્ય અવસ્થા જગતની, વીજળીનો ચમકાર. ૪૦
 ક્ષણ ક્ષણમાં ક્ષય પામતા, જડને ચૈતન્ય દોય;
 ભ્રમથી ભુલી લાનને, ગણે નિત્ય સહુ કોય. ૪૧
 ખટ દ્રવ્ય નિત્ય સ્વભાવથી, અનિત્ય દ્રવ્ય પર્યાય;
 નિત્ય અનિત્ય ત્યાગે ગ્રહે, એ અજ્ઞાને થાય. ૪૨
 ત્રીલોક ખટ દ્રવ્ય મથી, નિજ નિજ રૂપે નિત્ય;
 પર્યાય સ્વભાવ વિભાવથી, ઉપજે વિણસે અનિત્ય;
 નિત્ય ભજી અનિત્ય તજી, ધરીએ આતમ ધ્યાન;
 અનિત્ય ભાવના ભાવતાં, અંતર ઉપજે જ્ઞાન.

મર્યાદા બુદ્ધિ પાલટી, દ્રવ્ય દષ્ટિએ જોય;
 નિશ્ચય નિત્ય સ્વરૂપનું, ધરો ધ્યાન સહુ કોય. ૪૫
 અનિત્ય ભાવના ભાવતાં, ગણો અનિત્ય સંસાર;
 દેહાદિક સર્વ અનિત્યછે, નિત્ય આત્મ આધાર. ૪૬
 અનિત્ય ભાવના ભાવતાં, તર્યા અનંતા જીવ;
 ભાવો યુગ્મ એ ભાવથી, મળશે મારગ શીવ. ૪૭

૨ બીજી અશરણુ ભાવના.

અશરણુ ભાવના એક છે, શરણુ ન જીવને કોય;
 શરણુ એક નિજ આત્મને, પંચ પરમેષ્ઠી હોય. ૧
 કોઈ શરણુ ન જીવને, દાનવ માનવ રાય;
 તે પણ કાળના કોળીયા, શું કરશે તુજ સાંચ? ૨
 સ્ત્રી પુત્ર પિતૃ માતૃકે, જેની બંધવ મિત્ર;
 તે પણ ટંગમગ જોઈ રહે, કાળનું કામ વિચીત્ર. ૩
 કુર્વિવાર્થ ગતિ કાળની, શરણુ ન રાખે કોય;
 મંત્ર જંત્ર કે ચૌધધી, મિત્ર કાળનાં હોય. ૪
 મળ્યો કુટુંબી કારમો, રૂદન કરે નરનાર;
 મોતે કાળની આગમાં, તેનો નહિ વિચાર, ૫

કેઈક રાગા રાગ્યા,
 કાળે કીધા કોળીયા,
 ડાકટર વૈદ્ય હકીમ કે,
 પરિવાર લઈ ચાલીયા,
 કાળ ન પહોંચ્યો ત્યાં લગી,
 તુટીની ખુટી થવા,
 આયુષ્ય કર્મ જનમ થકી,
 વરસ ગાંઠની મંજલે,
 ચેખી પુત્ર વરસે વધે,
 નથી વાસ્તવિક જાણતી,
 ઘડી માસ વર્ષ ગાંઠને,
 રંછત કરી કરમાં ગૂડી,
 કાળ લાંચ લેતો નથી,
 સમભાવે ગૃહે સર્વને,
 વૃદ્ધ જીવાન કે બાળકો,
 પક્ષપાત નહિ કાળને,
 બાળ વૃદ્ધ રંકીક ધની,
 ન્યુનાધિક કોએ નહિ,

કેશવ, ચક્રી રામ;
 શો શોચ આ ઠામ. ૬
 જોશી ડોશી સોચ;
 કાળે ન મૂક્યા કોપ. ૭
 ઉપાય અનુકુળ થાય;
 શરણુ ન કોઈ ઉપાય. ૮
 પ્રેરે મૃત્યુ પાપ
 કાળ ધર્મ નિવસ ૯
 માતા મન મલકાય;
 મરણુ નજીકે જાય. ૧૦
 નિમિત્તે અયુષ્ય કર્મ;
 જાજવે કાળના ધર્મ. ૧૧
 નથી રાખતો પક્ષ;
 સહુ પર સરખો લક્ષ. ૧૨
 ગરીબ સંત ધનવાન;
 સરવે ગૃહે સમાન. ૧૩
 સુના કાયર કોચ;
 નામ સંવર્તિ હોય. ૧૪

આણી સહીત વન પરજળે,	વચ્ચે વૃક્ષ ચઢી કોય;
નિજને સુરક્ષિત ગણી,	ખેઠો કૌતક જોય.૧૫
તેમજ જીવ જગવન વિષે,	મરતાં દેખું નીત;
છતાં અમર નિજને ગણું,	એજ મતિ વિપરીત.૧૬
સજ સેના હય ગય તણી,	સજી જગતર તરવાર;
ચોટીની વચ્ચમાં રહે,	તોય ન મુકે કાળ.૧૭
વિષય મોહ મદિરા થકી,	મુરજાયો સંસાર;
વસ્યો કાગની દાઢમાં,	ઉગે ન એક વિચાર.૧૮
વિપરીત મતિ વિશ્વની,	નહિ વિવેક વિચાર;
સેવી વિષય કષાયને,	કરે અક્ષણ અવતાર.૧૯
શરણુ ન કોઈ સંસારમાં,	શોધ્યાં સરવે સ્થાન;
ચરમપરા વ્યવહારથી,	શરણુ પંચ ભગવાન.૨૦
નિશ્ચય નયથી તો લહે,	શરણુ આતમા એક;
ચુપચંદ એ શરણથી,	ઉદ્ધર્યા જીવ અનેક.૨૧

૩ ત્રીજી સંસાર ભાવના.

ચક્રાવો ગતિ ચારનો, સુખ દુઃખનાં ધામ;
મળેલ નિજનાં માનતાં, રાચે જીવ બેભાન. ૧

નિજ નિજ કર્મવત જોડીઓ, ત્રસ સ્થાવર મળીકાય;
 બંધાઈ તે બંધને, ઉપજી મરે સંસાર. ૨
 કહી પુર્વ પુણ્ય ઉદયથી, સ્વર્ગે મુખ પમાય;
 શુભ ઉદય એ લોગવી, અવર ઉદય ત્યાં બપ. ૩
 ગતાગતિ ઘટમાળમાં, કૃષ્ણે અનંતી વાર;
 દાવાનળ દુઃખ લોગવ્યાં, સાતી નકિ લગાર. ૪
 લોગવાય લાજો હજી, લોગવે આગમ કાળ;
 સ્વરૂપ લાન ભુલ્યા થકો, મુખી દુઃખી ત્રીકાળ. ૫
 ખટ દ્રવ્ય જેલ ખરેખરો, અચળનિયમ આધાર;
 કર્મ સંયોગ સાથે મળી, જગ સચના નિરધાર. ૬
 સમય માત્રને આંતરે, જીવ સમુદ સંસાર;
 પર્યાયથી પાલટે, વેષ વિચિત્ર પ્રકાર. ૭
 લડે સમુદ પરસ્પરે, ઉલસે વેર અભિમાન;
 પ્રાણ પર્યાય હુંગી લડે, વિશ્વ યુદ્ધર્થ સ્થાન. ૮
 જીવની રાસ જળરી બહુ, ત્રસ સ્થાવર સમુદાય;
 અનંતાનંત કોટી લલે, ખાર ન કહી પમાય. ૯
 ચેતન તે જડ સંગમાં, મળી થયો સંસાર;
 કરમાનુસારે કરે, ગતાગતી જે વાર. ૧૦

ગતાગતીમાં બહુ કર્યા, સંબંધ વિચિત્ર પ્રકાર;
 ચરણુએ પાર ન પામીએ, કહું સંશ્લેષે સાર.૧૧
 સંબંધ સરવે પરસ્પરે, કર્યા સર્વ જીવ સંગ;
 અનંતવાર એમજ બન્યું, મળતાં કર્મ પ્રસંગ.૧૨
 માતપિતા પુત્ર પુત્રી ત્રિયા, બેની બંધુ અનેક;
 હિલટ સુલટ ભવ આદર્યા, વાર અનંત પ્રત્યેક.૧૩
 અહો! સંબંધ શા શોચના, પુત્ર પતિ ત્રિયા માય;
 બાપ બેટો જનમે કદી, પિતા પુત્રિ પતિ થાય.૧૪
 એહ મદિરા વેનમાં, સમજ્યો નહિ સંબંધ;
 આ અવસર અનુકુળ છે, ચેતી હોડવા બંધ.૧૫
 સંસાર રંગભૂમિ કહો, નટી સંસારી જીવ;
 વેષ પાલટે નવ નવા, ભુત્રી ભાન સદૈવ.૧૬
 એનિ દેશ કુળ રૂપ કે, સુખ દુઃખ પર્યાય;
 વાર અનંતી જમણમાં, ભોગવ્યાં કર્મ નિયાય.૧૭
 બંધુ શત્રુ ભવાંતરે, શત્રુ બાંધવ હોય;
 હિલટ સુલટ ભવ ચક્રમાં, નહિ આપણું કોય.૧૮
 રાજા કીટમાં ઉપજે, કીટો કમથી રાય;
 હંચ નીચ નીચ હંચમાં, ગતાગતી જણાય.૧૯

અસદ્દ હુઃખ છે નર્કમાં, સહે તિર્યંચ હુઃખ;
 અતુલ્ય હુઃખ માનવ ભવે, નહિ દેવ ગતિ સુખ.૨૦
 કારણ આ સંસારનું, મુખ્ય ભાવ અજ્ઞાન;
 કાર્ય કર્મ ફળે ભવ ભમે, ચતુર્ગતિ વિશુ ભાન.૨૧
 અજ્ઞાન ભાવથી ઉપજે, પર દ્રવ્ય પર મોહ;
 રાગ દ્વેષ વર્તન થતાં, નિજ આત્માનું દ્રોહ.૨૨
 કરમ બંધ એ દ્વંદ્વથી, કર્મ બંધે ગતિ ચાર;
 આત્મા દેહ નિત્યા નિત્યનો, ઉગ્યો ન અંશ વિચાર.૨૩
 પર દ્રવ્યની પ્રીતથી, કર્મ બંધ સંસાર;
 ફળ તેનું ગતિ ચારમાં, ભમવું વારમવાર. ૨૪
 નિજ સ્વરૂપ ગણ નિજનું, પર ગણ પરિવ્રહ દેહ;
 ભાવે નિજ નિજને ભજી, છોડ દેહસું નેહ.૨૫
 વિશ્વ રચના વિચારતાં, થાય સ્વરૂપ સન્મૂળ;
 યુગ્મચંદ્ર એથી મળે, શીવ મંદીરમાં સુખ.૨૬

૪ એથી એકત્વ ભાવના.

સર્વ અવસ્થામાં સદા, જીવ એકત્વે જોય;
 ગહન પંથ ગતિ ચારનો, સાથી ન મળે કોય. ૬

પ્રત્યેક ભવમાં એકલો, જન્મ મરે સદાય;
 કર્મ એકલો લોગવે, થાય ન કોઈ સદાય. ૨
 કરમ કરી જીવ એકલો, પોખો પિંડ પરિવાર;
 ખોનારાં સૌ ખસી ગયાં, કરતા લોગવનાર. ૩
 અત્યંત દુઃખ જે નર્કનાં, અસહ્ય સહ્યાં ન જાય;
 તે લોગવે જીવ એકલો, પાપ ઉદય જો થાય. ૪
 સુખ સમૃદ્ધિ સ્વર્ગનાં, અનુપમ જે કહેવાય;
 તે પણ લોગવે એકલો, પુન્ય ઉદય જો થાય. ૫
 જન્મ મરણ સુખ દુઃખમાં, સગાં ન સાથી હોય;
 કર્યાં કર્મ પ્રત્યેકને, લોગવતાં તું જોય. ૬
 પરિવારને પોષવા, કર્યાં કલંકિત કામ;
 લોગવવા જીવ એકલો, લમે નર્કાદિ કામ. ૭
 કુડ કપટે ધન મેળવ્યું, તે ખાતે ખાનાર;
 ખરે વખત ખસી જશે, રહ્યો તું લોગવનાર. ૮
 અત્યક્ષ આજ નિહાળીએ, જન્મ મરણ જે થાય;
 જન્મે તે મરે એકલો, સાથે કોઈ ન જાય. ૯
 અજ્ઞાન દશાએ જીવ આ, સમજ્યો ન નિજ સ્વરૂપ;
 પરને નિજ માની રહ્યો, જાણી આતમ રૂપ. ૧૦

જડ ચૈતન્યથી એકતા, માને મોહથી કોય.૬
 કર્મ જાંઘ નિજ ભાવથી, કર્યા કરે છે જોય.૧૧
 સ્વ સ્વરૂપથી સર્વથા, ન્યારાં ગણે અનિત્ય;
 અંતર ભાવ શુદ્ધિ થતાં, થાય મુક્ત બચીત.૧૨
 શુદ્ધ સ્વરૂપ ન નિજ ગણ્યું, ઉદય મોહ અજ્ઞાન;
 ધરને નિજની એકતા. કર્મજાંઘનું સ્થાન.૧૩
 શુદ્ધ સ્વરૂપ નિજ એકતા, પર તે પર પરણાય;
 થાય જાનના અનુક્રમે, મોહ નજીક જવાય.૧૪
 મોહ રહિત આત્મા, ત્રિંતવે એકતા એક;
 છુટે સંજાંઘ સંસારથી, કર્મ ન વળગે છેક.૧૫
 નિશ્ચય નયથી આત્મા, નિર્માણ જ્ઞાન સ્વરૂપ;
 થર સંગે સંસારમાં, સંગ તજ્યે શીવ રૂપ.૧૬
 નિસંગ છે નિજ આત્મા, પર સંગે પીડાય;
 યુષ્પચંદ તજ સંગ તો, પંચમ ગતી પમાય.૧૭

પં પાંચમી અન્યત્વ ભાવના.

નિશ્ચય નયથી આત્મા, ચિદાનંદ સ્વરૂપ;
 કર્મ જાંઘની દ્રષ્ટિએ, દેખાએ દેહ રૂપ. ૧

આત્મા ચૈતન્ય નિત્ય છે,
 અનાદિ કાળ અધ્યાસથી,
 મેલ ખાણમાં મળી રહ્યો,
 દેહ આત્માની એકતા,
 અમુર્તિક ચૈતન્ય જીવ છે,
 અચેતન મુર્તિક દેહને,
 જીવ એ મૃત્યુક દેહનો,
 હલન ચલન શક્તિ કરે,
 પુદ્ગળ રચના દેહ આ,
 ચેતન નિત્ય નિજ ભાવથી,
 વસતાં ગર્ભાવાસમાં,
 મૂકી દેહ મૃત્યુ સમે,
 ક્ષીર નીર તલ તેલને,
 તેમજ દેહમાં આત્મા,
 તલ તેલ ક્ષીર નીર સમ,
 યજ્ઞ નિશ્ચય છે જીવવાં,
 હુણ પાણીમાં ઓગળી,
 અગન આંચ દેખાડતાં,

છે જડ દેહ અનિત્ય;
 થઈ એકતા પ્રતિત. ૨
 સુવર્ણ શોધ્યે લીન;
 કર્મ મેલ આધીન. ૩
 મોહથી ચલન સ્વભાવ;
 નહિ ચલનનો દાવ. ૪
 શિર ઉપાડી ભાર;
 એ છે જીવો ધાર. ૫
 અનિત્ય જડ આકાર;
 નિરંજન નિરાકાર. ૬
 હાતું ન સાથ શરીર;
 પામ્યો અન્ય શરીર. ૭
 પુણ્ય જેમ સુવાસ;
 દેહ જેવડો ખાસ. ૮
 આત્મા વ્યાપી દેહ;
 નથી તેમાં સંદેહ. ૯
 જણાય નિર્મળ નીર;
 હુણથી ન્યાડું નીર. ૧૦

આત્મ દેહ અન્યત્વનાં, આ સરવે એંધાણ;
આત્માથી વિચારતાં, પામે આત્મ ભાન.૧૧

(દેહ આત્મા એક દેખાય છે છતાં લિન્ન છે તે
પછી અન્ય સ્વજન પરિવાર પરિગ્રહાદિના લિન્નપણામાં
સંદેહ શો? તે કહે છે).

દેહ આત્માની લિન્નતા, પામ્યો જેહ પ્રવીણ;
કુટુંબ પરિગ્રહ તો પછી, સહજ જણાયે લિન્ન.૧૨
જડ ચેતન સહવાસમાં, આવ્યા આવે કોય;
સૌં સ્વતંત્ર નિજ રૂપથી, લિન્ન લિન્નતા જોય.૧૩
પુત્ર મિત્ર પરિવારને, અન્ય પરિગ્રહ કોય;
સરવે તુજથી લિન્ન તે, નિજપણે કેમ હોય.૧૪
પિતૃ માતા સ્ત્રી પુત્રનો, જુજવેથી અવતાર;
પરમાં નિજપણ નવિધટે, મળ્યાં કર્મ અનુસાર.૧૫
પદાર્થ સહુ ત્રીલોકના, તુજ સ્વરૂપથી લિન્ન;
સ્વ સ્વરૂપે સૌ જુજવા, નહિ તારે સ્વાધીન.૧૬
કોણ અનાદિથી થઇ, પર પુદ્ગળથી પ્રીત;
આવરતન ગતિ ચારનું, કારણ એજ અચીત.૧૭

ઐતન્ય નિજ સ્વરૂપ જે, પર ભાવથી લિત્ત;
 ભવ ભ્રમણને ટાળવા, ધરો ધ્યાન થઈ દીન.૧૮
 સર્વ દ્રવ્ય સંસારના, નિજ નિજ સત્તાધીન;
 લિત્ત લિત્ત એક એકથી, મળે નહિ કેા દીન.૧૯
 પરમાં હું મારાપણું, ભ્રમથી ભુલ્યે થાય;
 નિજપણું નિજમાં જડ્યે, કર્મ સંબંધ કપાય.૨૦
 અન્યત્વ ભાવના ભાવતાં, સ્વ પર થાય પિછાન;
 યુગ્મચંદ્ર એથી મળે, અંતે કેવળ જ્ઞાન.૨૧

૬ છઠ્ઠી અશુચી ભાવના.

રજ શુકે સંયોગથી, સંચર્યો ગર્ભાવાસ;
 અશુચી સ્થાન મળ મુત્રમાં, કર્યો વાસ નવ માસ.
 ખરડાયો મળ મુત્રથી, કર્યો રૂધિર અહાર;
 જનમ્યો ઉંધે મસ્તકે, મળ મુત્રને દાર.
 રજ શુકના બીજથી, બંધાયો આ દેહ;
 નવનીક દુરગંધી વહે, ધાતુ ઉપધાતુ ગેહ.

લોહી માંસ મળ લયુ', અસ્તિ પોંજર જેહ;
 નાડી ગંધ ગાંધ્યા બહુ, મઢયુ' આમથી તેહ. ૪
 હર્ષધમય આ દેહમાં, કશી વસ્તુ નહિ સાર;
 સડતી પડતી વિનસતી, તોપણ મોહ અપાર. ૫
 કૃમિ જીવની કોથળી, વાત પીતાહી દોષ;
 કોપી કષ્ટ આપે ઘણું, દેહ દરદનો કોષ. ૬
 મહા મલીન આ દેહની, શુદ્ધિ કદી ન થાય;
 નિર્મળ જળ સાગર તણું, ધોએ મલિન જણાય. ૭
 સુગંધી ખટ રસ લલા, ઉદરમાં ઓરાય;
 રૂપ રસ ગંધ પાલટી, મળ રૂપે ગંધાય. ૮
 જ્વર્યા મહેલ ન હોય તો, આવે કેવો ખ્યાલ;
 હાડપોંજર માંસે લયુ', ગિંહામાણું વિકરાળ. ૯
 શરીર રૂપી પોંજરું, સદા રોગનું ધામ;
 પોષણ માગે નિત નવું, નહિ કદીએ વિશ્રામ. ૧૦
 અવગુણ એવા દેહમાં, છતાં એક છે લાવ;
 સમ્યક્ જ્ઞાન ચારિત્રથી, ભવ તરવાનું નાવ. ૧૧
 અનાદિ કાળથી અનુક્રમે, દેહ સાથે સંગંધ;
 દરેક હરખ પણ એ ચઢી, કરમે બાંધ્યા બંધ. ૧૨

આત્મ થાય સ્વ પરતાણી, મનાય દેહને ભિન્ન;
 સ્વ સ્વરૂપ ન્યારું થતાં, નહિ કરમ આધિન. ૧૩
 સ્વ સ્વરૂપ નિશ્ચય થયે, મટે રાગ ને દ્રેષ;
 સમભાવ વરતાય ત્યાં, નહિ કરમ લવલેશ. ૧૪

કવિત-મનહર.

હાડ માંસ મઠયું ચામ, મળ સુત્ર તાણું ઠામ,
 કૃમિ જીવ તાણું ધામ, શુચી શોધી શું જડે ?
 રોગનું છતાં નિધાન, માગે નિત્ય ખાનપાન,
 સંતોષ્યે ન સમાધાન, વિષયો ચિતે ચડે.
 ભોગવીને ભોગ વેરી, લાવે નવ નવા રોગ,
 કરમ સંજોગે કષ્ટ, આકરાં આવી પડે.
 જાણ મોહ ન્યારી ગણી, વાળો તપશ્ચર્યા લાણી,
 સુખ્ય દેહ તો મણી, શીવ સુખ સાંપડે. ૧૫

દોહરો.

નિર્મળ નિજ આતમા, દેહ અશુચી ગેહ;
 જી લગ્નું નિજ લાવને, છોડી દેહસું નેહ. ૧૬

અશુચી ભાવના ભાવતાં, મળે સમાધિ ભાવ;
પુષ્પચંદ એ અંતમાં, ભવ તરવાનું નાવ. ૧૭

૭ સાતમી આશ્રવ ભાવના.

મન વચન કાયા તણી, ક્રિયા શુભાશુભ યોગ;
આશ્રવ તે પણ એજ છે, નિશ્ચય તજવા ભોગ. ૧
જેમ નાવના છીંદથી, આવે નીરની નીક;
જીવ શુભાશુભ યોગથી, બાંધે કરમ અધીક. ૨
યમ પ્રશમ નિવેદતા, તત્ત્વ અવલંબન સાર;
શુભ આશ્રવ શુભ કર્મનો, છે સંચય કરનાર. ૩
મૈત્રી પ્રમોદ કારણ્યને, માધ્યસ્થ એ ચાર;
ભાવે ભાવના જીવ તો, શુભ સંચય હિતકાર. ૪
ક્રોધ માન માયા અને, ચોથો લોભ કષાય;
વિષયમાં વ્યાકુળપણે, અશુભ સંચય થાય. ૫
વિષયમાં વ્યાકુળ રહી, કષાય સેવી ચાર;
આર્ત રોદ્ર ધ્યાને કરી, વધારવો સંસાર. ૬

૧ અણુવૃત્ત, મહાવૃત્ત,

૨ કષાયોની મંદતા.

૩ સંસારથી વિરક્તતા અથવા ધર્માનુરાગ.

વિષય કષાય કરી પરાં, જીતે રાગ ને દેષ;
 ધરતે સરલ સ્વભાવથી, સંચે શુભ વિશેષ. ૭
 વ્યાપાર જીવ વિરાધના, આરંભકારી કામ;
 અશુભ કર્મ ત્રિયોગથી, અશુભ આશ્રવ નામ. ૮
 મિથ્યાત્વ અવિરતિ પ્રમાદને, અશુભ જોગ કષાય;
 પાપ સ્થાન અઠારથી, અશુભ આશ્રવ થાય. ૯
 સમ્યક્ત્વ અપ્રમાદ વિરતિ, શુભ જોગ અકષાય;
 સ્તેવે ન પાપ સ્થાન તો, શુભ આશ્રવ લેવાય. ૧૦
 નિશ્ચય નયથી નિશ્ચયે, આત્મા જ્ઞાન સ્વરૂપ;
 આશ્રવથી અજાગા થયે, છે શુદ્ધ નિજ સ્વરૂપ. ૧૧
 આશ્રવને અજાગા કરી, ધરીયે સંવર ભાવ;
 ગુણચંદ તપગ્યા વડે, ભવ તરવાનું નાવ. ૧૨

૮ આઠમી સંવર ભાવના.

સરવે આશ્રવ દારને, રોકી મન વચ્ચ કાય;
 સંવર દ્રવ્ય કે ભાવથી, અનુસરીયે તો થાય. ૧

મન વચન કાયા થકી, રોકો આશ્રવ દાર; ૨
 દ્રવ્ય સંવર થાએ સદા, એ તો નય વ્યવહાર. ૨
 કર્મ ગ્રહણ ક્રિયા સહ, તજે અભ્યંતર શુદ્ધ; ૩
 ભાવ સંવર પ્રભાવથી, નિર્મળ આત્મા ખુદ. ૩
 સર્વ કલ્પના જાળને, મેલી મનથી દૂર; ૪
 સ્વ સ્વરૂપ સ્થિર થાય તો, નથી મોક્ષ કંઈ દૂર ૪
 સમિતિ ભાવ વિશુદ્ધતા, ક્ષમા આદિ દશ ધર્મ; ૫
 દ્વાદશ ભાવના ભાવવી, એ સંવરનો મર્મ. ૫
 આત્મા કાળ અનાદિથી, આશ્રવને સહવાસ; ૬
 ભૂદયો ભાન સ્વરૂપ તે, ગન્યો કર્મનો દાસ. ૬
 જ્યારે જાણી સ્વરૂપ ને, થાય તેહમાં લીન; ૭
 સંવર રૂપ થઈ સર્વથા, કરે કર્મને લિપ્ત. ૭
 આશ્રવ ભરતી આવતી, સંવરથી રોકાય; ૮
 પુરવ કરમની નિરજરા, થાતાં મોક્ષ જગાય. ૮
 નિજ સ્વરૂપમાં લીનતા, નિશ્ચય સંવર એહ; ૯
 સંયમ શુદ્ધ ચારિત્રથી, આશ્રવ પામે છેહ. ૯
 લીન થવું નિજ સ્વરૂપમાં, નિશ્ચય સંવર ભાવ; ૧૦
 પુષ્પચંદ એ ધ્યાન છે, ભવ દધિ તરવા નાવ. ૧૦

૬ તવમી નિર્જરા ભાવના.

આવક અટકી આવતી, આબો સંવર ભાવ;
 શોષ રહ્યાં તે ટાળવા, સાધ નિર્જરા દાવ. ૧
 સકામ અકામ બે લેદથી, કર નિર્જરા વિચાર;
 તપથી કર્મને ટાળવા, સકામ નિર્જરા ધાર. ૨
 શુદ્ધ ચારિત્રથી આદરે, તપસ્યા બાર પ્રકાર;
 પકવી કર્મ લે ભોગવી, સકામ નિર્જરા ધાર. ૩
 ત્યાગી થઇ તપસ્યા વડે, આણિ ઉદયમાં કર્મ;
 કરે નિર્જરા સર્વથા, એ કેવળી પદ મર્મ. ૪
 ફળ પકવવા કારણે, આદરીએ ઉપાય;
 કર્મ ફળ તપસ્યા તાપથી, પાકી ખરે સદાય. ૫
 સંસારી સહુ જીવને, અકામ નિર્જરા થાય;
 થોડીને ફળઝાડથી, ખરશે વિણ ઉપાય. ૬
 કરમ ઉદય ફળ આપીને, ખરતાં રહે સદાય;
 બુદ્ધિ આશ્રવ દારથી, નિત નિત સંચય થાય. ૭
 સદોષ સોનું તાપથી, શોધો થાય વિશુદ્ધ;
 કર્મ કલંકિત જીવ તે, તપથી થાય સ્વશુદ્ધ. ૮

અનાદિ આવરતન અતી, કરમે જાંધ્યો જીવ;
 છતાં તપસ્યા ધ્યાનથી, થાય નિર્જરી શીવ. ૯
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ તપી, ધરે ધ્યાન મુનિરાય;
 પાપ પ્રલય કરી આદિનાં, કેવળ જ્ઞાની થાય. ૧૦
 જાણી નિજ સ્વરૂપને, કર્મ ન નવાં કરાય;
 જુના તપસ્યા ધ્યાનથી, બાળી મોક્ષ જવાય. ૧૧
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ કરે, નીરારંભ નીર આશ;
 સંચીત બાળી મેળવે, શુભ ગતિનો પાસ. ૧૨
 બાહ્ય અભ્યંતર તપ કરે, નીરારંભ નીર આશ;
 સંચીત બાળી મેળવે, આત્મજ્ઞાન પ્રકાશ. ૧૩
 સંવરમય આ આતમા, કરમ મેલ કપાય;
 યુગ્ય સ્વરૂપ નિકાળતાં, સહેજ મોક્ષ જવાય. ૧૪

૧૦ દશમી ધર્મ લાવના.

ક્ષમા, માર્દવ શૌચ ને, આર્જવ સંયમ સત્ય;
 પ્રહયચર્ય તંપ ત્યાગ છે, અકિંચન ધર્મ કૃત્ય. ૧

૧ ક્રોધગતા, મદુતા, નમ્રતા, નિરાલિમાનતા, ૨ પાવત્રતા,
 મિથતા, ૩ સિધાપણું, નિઃકપટપણું, અવદપણું.

દશ લક્ષણ એ ધર્મનાં, દેખો જેની પાસ;
 શરણુ ગ્રહણ કર તેહનું, રાખી મન ઉદ્દાસ. ૨
 વિપરીત લક્ષણ દેખતાં, વરતે દીલ ઉદાસ;
 અધર્મ જાણી એહની, તજવી સોખત પાસ. ૩
 અટ દર્શન જોળી જુઓ, વળી અનેક અનાર્થ;
 કંઈક નામ દઇ ધર્મનાં, કરે અત્યંત અકાર્ય. ૪
 ધરમ ધરમ મુખથી વદે, નહિ ધર્મનો લક્ષ;
 જાણ્યા છતાં ન આદરે, તાણી રહે નિજ પક્ષ. ૫
 ધરમ માર્ગ ત્રીકાળમાં, હોએ એકજ રૂપ;
 મત મતાંતર માનથી, પલટયાં ધર્મ સ્વરૂપ. ૬
 અન્ય પંથ મત સંપ્રદા, ઉપજી સમે ખચીત;
 ધર્મ અવીચળ એક છે, સત્ય સ્વરૂપી નિત્ય. ૭
 દુરગતી જાતાં જીવ ને, ધરી રાખે તે ધર્મ;
 રૂખડાવે ગતિ ચારમાં, ધર્મ નહિ પણ કર્મ. ૮
 શરણુ ગ્રહી સત્ય ધર્મનું, લાવો લાવના બાર;
 સીડી મોક્ષ દુવારની, ચઢવાનો આધાર. ૯
 કોય જીવિકા કારણે, કોય પુનવા કાજ;
 કોઈક મત મમત્વથી, પંથ નિકળ્યા આજ. ૧૦

સુધર્મ દશ અંગે કહ્યો, વળી ઉપાંગ અનેક;
 ઉણપ જેટલા અંશથી, આંકે કીંમત છેક.૧૧
 ઘટે ન ઉપમા ધરમને, ધર્મ સમોવડ ધર્મ;
 પ્રત્યક્ષ પ્રભા જે ધર્મની, જીવન મુક્ત નિઃકર્મ.૧૨
 આત્મા ધર્મ અનાદિના, કર્મે દોષિત જીવ;
 ધરમ રૂપ નવિ પાલટે, જેમ અગ્નિ શ્રી શીવ.૧૩
 કરે રૂપાંતર કોય તો, તુરત ભેદ જણાય;
 ધર્મ ધૃવ સત્ય નિત્ય તે, રહે સ્વરૂપી સદાય.૧૪
 કલ્પવૃક્ષની ઉપમા, આપે જ્ઞાની કોય;
 ઇચ્છિત ફળ આવી મળે, ધર્મ ધ્યાનથી જોય.૧૫
 નર્ક નિર્ગોદ ગતી ટળી, મળે સ્વર્ગ વિમાન;
 ધરમે હલ્લ છે નહિ, પદવી જ્ઞાન નિધાન.૧૬
 કલ્પવૃક્ષ ચીંતામણી, કામ ધેન નવ નિધ;
 સેવક એ સહુ ધર્મનાં, સેવા ધર્મ સુવિધ.૧૭
 જગવાસી સહુ જીવને, ધરમ એજ આધાર;
 સિંચી જળ અમૃત સુખનું, અંત ઉતારે પાર.૧૮
 મેઘ પવન રવિ ચંદ્રમા, સમુદ્ર પૃથિવ કોય;
 થાય ઉપકારી ધર્મથી, અધર્મે વિપરીત હોય.૧૯

સર્પ હસ્તિ વિષ વ્યાઘ્ર કે, અગ્ની રાક્ષસ હોય;
 સિંહ સહિત રક્ષણ કરે, શરણુ ધરમનું હોય. ૨૦
 ધર્મ સહાયે સાંપડે, મન વાંછિત ઉપલોગ;
 ધન ધાન્ય પરીવારનો, મળે સગળ સંયોગ. ૨૧
 શુર પાંધવ સ્વામી સખા, હેતૂ રક્ષક મીત્ર;
 શરણુ અવલંબન જીવનું, સેવે ધર્મ પવિત્ર. ૨૨
 દશ અંગે પણ ધર્મ છે, બીજો વસ્તુ રવરૂપ;
 રતન ત્રય ત્રીજો ધર્મ જો, દયામય એ શુ રૂપ. ૨૩
 વસ્તુ રૂપ મહિમા ફળ થકી, ધર્મ અનેક પ્રકાર;
 અભ્યંતર આરાધતા, મુક્તિ પદ દાતા. ૨૪
 ધર્મ ભવાંતરને વિષે, આલે જીવની સાથ;
 રક્ષિત થઈ ગતિ ઉંચમાં, સ્થાપે ઝાલી હોય. ૨૫
 અભ્યુદય સર્વ પ્રકારનો, મન વાંછિત દાતા;
 આનંદ કંદ આ જગતમાં, ધરમ એક આધાર. ૨૬
 પુણ્ય ધર્મ પસાયથી, મળ્યો મનુષ્યા દેહ;
 કેર નિશ્ચય નિજ રૂપનો, ધરી ધર્મસું નેહ. ૨૭

૧૧ અગિયારમી લોક સ્વરૂપ ભાવના.

રાનીની દષ્ટી થકી, જડ ચૈતન્ય દેખાય;
 તે તો લોકાકાસ છે, બાકી અલોક સદાય. ૧
 ત્રણ ભુવન તે લોકમાં, તાડ વૃક્ષ આકાર;
 પહોળો મધ્ય અંતમાં, લાંબો અધિક વિસ્તાર. ૨
 નીચે નર્કાદિક છે, મધ્યે મૃત્યુ લોક;
 અંત સ્વર્ગ શોભે સદા, એ રચના ત્રિલોક. ૩
 સદા સાસ્વતો લોક છે, આદિ અંત રહીત;
 કરતાની કૃતિ ગણે, હોય મતિ વિપરીત, ૪
 કચ્છપ શેષની ફેણનો, માને કોઈ આધાર;
 અધર લોક આકાશમાં, નહિ આધાર લગાર. ૫
 સ્વયં સિદ્ધ અનાદિ છે, અવિનાશી આ લોક;
 કરતા હરતા કે નથી, ભર્યો જીવાદિક થોક. ૬
 સહુ પ્રાણી ત્રિલોકમાં, જન્મે મરે સદાય;
 કર્મ પ્રમાણે ભોગવે, સુખ દુઃખ આયુષ્ય કાય. ૭
 જીવાદિક બટ દ્રવ્યની, રચના તે ત્રિલોક;
 છએ સ્વ સ્વભાવથી, જુજવે જુજવે થોક. ૮

તેમાં આ નિજ આત્મા, જીવ દ્રવ્ય છે એક;
 મોહથી મુંઝાણો થકો, પામ્યો ન છેડો છેક. ૯
 લોક સ્વરૂપ વિચારીને, પામી આત્મ રૂપ;
 યુગ્ય સ્વરૂપ રમણ થતાં, અવિચળ સુખ અનુપ. ૧૦

૧૨ બારમી ગોધી દુર્લભ ભાવના.

(જેમાં નીગોદથી નીકળી ઉત્તરોત્તર સમ્યક્ દર્શનની પ્રાપ્તિ પર્યંત ધર્મ પામવાની દુર્લભતા ખતાવે છે.)

નર્ક અને નીગોદમાં,	વસ્યો કાળ અનંત;
સ્થાવરમાં પણ આવ્યો,	થતાં ઉદય અત્યંત. ૧
અનંત ઉદયથી નિકળ્યો,	મળી તહાં ત્રસ કાય;
દુર્લભ પાંચે દ્રિયપણું,	સાથ નિરોગી કાય. ૨
મનુષ્ય ભવ મુશ્કેલીએ,	પામ્યો પુન્યે કોય;
દેશ કૂળ અનુકૂળતા,	દુર્લભ દુર્લભ ભોય. ૩
પાંચે ઈંદ્રિય પુરી નહિ,	અપુર્ણ આયુષ્ય કર્મ;
કે આવર્ણ્ય અજ્ઞાનનું,	દુર્લભ પામવો ધર્મ.

કેદિ પુન્ય પ્રતાપથી,	મળ્યાં અનુકુળ ચોહ;
વિષય વાસના વાધતાં,	હૃદ્દલ ધર્મ સ્નેહ. ૫
તત્ત્વ નિર્ણય હૃદ્દલ અતી,	સરે ન એ વિશુ અર્થ;
સમ્યગ્ મારગ દોહીલો,	પામે કોઈક સમર્થ. ૬
કદી મહા પુન્ય પ્રભાવથી,	મળ્યા સર્વ સંજોગ;
પ્રમાદ વશ થઇ પરવર્યો,	કામ અર્થ પ્રયોગ. ૭
સમ્યક્ રત્નત્રય માર્ગથી,	પડે મિથ્યાત્વ પ્રસંગ;
હૃદ્દલ દિલમાં સ્થાપવો,	ધરમ સાથ સુરંગ. ૮
ઓધિ રત્ન પામ્યા પછી,	જોયું લવ દધિ માંય;
મળવું મુશ્કેલ થઇ પડે,	શોધ્યું મળે ન ક્યાંય. ૯
સર્વે દ્રવ્ય સમુદ્ધ તે,	મેળવવાનું સહેલ;
ઓધી રત્ન સંસારમાં,	સાંપડવું મુશ્કેલ. ૧૦
સમ્યક્ જ્ઞાન દર્શન અને,	ચારીત્ર એ ત્રી રત્ન;
ઓધી રત્નત્રય મેળવી,	સાચવવું કરી ચત્ન. ૧૧
વાસ્તવિક વિચારતાં,	સ્વાધિન મળે સહેલ;
વસ્તુ પરાધીન પામવી,	એ તો મહા મુશ્કેલ. ૧૨
આત્મ સ્વભાવ ત્રી રત્ન છે,	છે નિજનાંજ સદાય;
આવરણો આડાં કર્મનાં,	બ્રાંતિમય દેખાય. ૧૩

ઐ આવરણો તોડવા, આદરીએ ઉપાય;
 બોધી સ્વરૂપ નિજ આતમા, સુરલભપણે જણાય. ૧૪
 ઉત્તરોત્તર પર્યાય સહુ, બોધી રત્ન પર્યાય;
 મહા મહેનતે મેળવી, કરો સાચવવા યતન. ૧૫
 બોધી નિજ સ્વભાવ છે, છે નિશ્ચય નિજ પાસ;
 અમાદથી પ્રાપ્તિ નથી, શુદ્ધ ભાવે ભવ નાશ. ૧૬

ઉપસંહાર.

અનુપ્રેક્ષા દ્વાદશ ભલી, અંતર આરોપાય;
 રંગ રંગે રંગ લાગતાં, જીવન મુક્ત જણાય. ૧

છપય.

ભાવો ભાવના બાર, નિરંતર રહી નિજ ધ્યાને;
 કષાય રાગ ને દ્રેષ, જાય અંતર અજાને;
 થાયે જ્ઞાન પ્રકાશ, સ્વ પર દ્રવ્ય જણાએ;
 બિર ઉપજે વૈરાગ્ય, કર્મની નિર્જરા થાએ.
 ઉત્કૃષ્ટ વૈરાગ્યથી, ધ્યાની ધ્યાન સ્થિર થાય છે;
 સ્વ સ્વરૂપ રમણ થકી, અંતે મોક્ષ જનાય છે. ૨

દોહરો.

સર્વ સુત્રનો સાર આ, આત્મજ્ઞાનનું મૂળ;
 યુષ્પચંદ આરાધવા, આ અવસર અનુદ્રગ. ૩૩

ઉપર લાખી બાર લાવના મોક્ષ રૂપી મહેલની
 મેડી ઉપર ચડવાને સોપાન એટલે પુંગથીઆં રૂપ છે,
 અને સીડી ઉપર ચઢતાં લથડી ન જવાય માટે
 દોરીનો આધાર જોઈએ, તેમ નીચે લાખી મૈત્રી
 આદિક આર લાવના અવલંબન દોરી રૂપ છે.
 મૈત્રી, પ્રમોદ, કારુણ્ય ને, માધ્યસ્થ એ ચાર;
 ભાવે લાવના ભાવથી, ભવ ભવને હરનાર. ૩૪

મૈત્રી ભાવના.

પુક્ષ્મ બાદર જીવને, ત્રસ સ્થાવર બેટકાય;
 પરમ મિત્ર ગણી સરવનો, ધરુ ઉડ્ય સદાય.
 ધરુ પરસ્પર જીવમાં, વધો સદા સમભાવ;
 જીવો સુખમાં હંખ તજી, થાય ન કર્મ જમાવ. ૩૫

પ્રભોદ ભાવના.

રિદ્ધિ, સિદ્ધિ ચારિત્રમાં, ચઢતા દેખી હોય;
મહા ભાગ્ય ગણી માનથી, મુજ મન મુદીત હોય. ૧
કયાણુ હું ખી દેખી થવું, સુખી દેખી રાખીયાત;
પ્રભોદ પર ઉત્કૃષ્ટમાં, નિજ ઉદ્યની વાત. ૨

કાકુલ્ય ભાવના.

રોગ, શોખ, ભર્ષ, દીનતા, હું ખે પીડાતાં જોઈ;
હિપજો ભુદ્ધિ એકવી, કરું સાદ્ય ધરી સ્નેહ. ૧
જૂઝ, વૃષા, વધ, બંધને, સહે શીત ને તાપ;
સહે મળજો એ જીવનાં, મટાડવા સંતાપ. ૨
નિર્દય નરના હાયથી, મરતાં જીવ જણાય;
મન, વચ, કાયા, વીતથી, આપું યોગ્ય સહાય.
માનવ સૌ મૈત્રિપણે, ધરો પરસ્પર પ્રેમ;
સખળ અખળની સહાયમાં, રહો રાખીને રહેમ.
વાપરવા વીત ન હોય તો, કરજી આણી ઉર;
મન વચ કાયા થકી, કરવી સાદ્ય જરૂર.

માધ્યસ્થ ભાવના.

રાગ દ્રેષ રહીત જે, વિચરે છે વિતરાગ; ૧
 એમ ઉદાસીનતા થવી, નથી આજ એ લાગ. ૨
 તો યશુ ભાવના ભાવતાં, તુટે કર્મ જમાવ; ૩
 કોઈક ભવે માધ્યસ્થ થઈ, મળે મોક્ષનો લાવ. ૪
 સાત વ્યસનને સેવતા, કષાય સાથે ચાર; ૫
 ઉપેક્ષા કરી તેહની, ઉદાસીનતા પાર. ૬
 ધર્મ વિમુખ નારિતક કહો, કૃર નીચ ચાંડાલ; ૭
 કર્મે પ્રેર્યા પાપમાં, દયાજનક એ બાળ. ૮

સ્વ સ્વરૂપ નિશ્ચય થવા, તજવા વિષય વિકાર; ૧
 રાગ દ્રેષાદી જીતવા, ભાવું ભાવના ચાર. ૨
 સીડી મોક્ષ દુવારની, કહી ભાવના બાર; ૩
 અવલંબન દોરી થશે, ભાવ ભાવના ચાર. ૪
 અતિ રહસ્ય એમાં રહ્યું, સર્વ સુખનો સાર; ૫
 યુષ્પચંદ વિચારતાં, પામે ભવનો પાર. ૬

સોળ ભાવનાઓથી વૈરાગ્ય ઉપજ્યા પછી અઠાર
ચાપસ્થાન તથા આઠ કર્મથી મુક્ત થવાને માટે
ચોવીસ જન સ્તુતિ રૂપ ભાવના પચીસી કહે છે.

આદિ પ્રભુ સુષ્ટિ અરજ આ; આપો અંતર જ્ઞાન;
તંબુ હિંસા હું છોડી, ગણીને નિજ સમાજ.
અજિત જિન જીત્યા તમે, આપ કર્મનાં ધૂંદ;
મુજથી એક મુકાવળે, મૃપાવાદનો કુંદ. ૨૦
સંભવનાથ સહાયથી, સેધું ન અદત દાન;
એહ પ્રતિજ્ઞા પાળના, સહાય કરો ભગવાન. ૩૦
અભિનંદન વંદન કરી, માગું મુજથી એમ;
અપ્રહાર્ય અનાદિનું, તજવા રાખું નેમ. ૪૦
સુમતિનાથ સુમતિ દિયો, તંબુ પરિત્રહ પ્રેમ;
યુદ્ધગજ રથના પારકી, હરખ શોક ધરું કેમ. ૫૦
ચક્ષુ પ્રભુ પ્રભાવથી, કરી કોધને હર;
દ્વિમાવંત રહું અંતથી, તબય દોષ જરૂર. ૬૦
સુધાર્થ સ્વામી પસાયથી, મરહું માન અમીર;
અનંત કાળથી અહંપદે, લોગવું ભવ જંજીર. ૭૦

અંક પ્રભુ ચિત્ત આહતાં, છુટે માયા જાળ;
 અપંચ બધા પરલે થતાં, અસરે મંગળ માળ. ૮
 સુવિધિ સ્વામી સેવતાં, ચિત્ત ધરી સંતોષ;
 લોભ લાલસા લય કરું, ને છે મોટો ઠોષ. ૯

શિતળ જીન સહાય કરો, એવું હું સમભાવ;
 રાજ દેવને સેસવા, ઠલી ન કાવે દાવ. ૧૦

અંશનાથ આશ્ર આપની, ટાળો આત્મ કલેશ;
 અર્યાખ્યાન પણ આજથી, તળવશે લવ લેશ. ૧૧

વાસુપુત્ર્ય દિલે વસો, યેશુન્ય પાપ તબય;
 પર પરિવાહ ને રઈ અરઈ, માયા મોસો બ્યય. ૧૨

વિમળનાથ વિનતિ કરી, માણું વિનય સહીત;
 મિથ્યા દર્શન શલ્ય જઈ, માણું શુદ્ધ સમકીત. ૧૩

અનંત અનંત પ્રભાવથી, આપો અવિચળ વાસ;
 અષ્ટ કર્મ અરી આંકળા, રહે ન તેનો ત્રાસ. ૧૪

અર્ધ દુરંધર ધ્યાનથી, આશા રાખું એક;
 જ્ઞાનાવરણી કર્મનો, છુટે પારો એક. ૧૫

શાંતી શાતા આપવા, છે જગના આધાર;
 દર્શનાવરણી કર્મથી, કરને સુજ ઉદ્ધાર. ૧૬

કુંથુનાથ કૃપા કરી, આપો માથું આજ;
 વેદની કર્મ નીવારણે, પામું સાતા સાજ. ૧૭

અરજ કરે અરનાથજી, કરો કૃપા કરજીજી;
 મોહ પાસના બંધથી, છોડો દીન દયાજી. ૧૮

અદિ જીજી હ મયા કરો, જન્મ મરણ દુઃખ જાય;
 આયુષ્ય કર્મને ટાળવા, માથું આપ સહાય. ૧૯

સુનિ સુવત સુવૃત્ત હઈ, કાપો નામ નિશાન;
 જોત્ર કર્મ તો કાપશે, નેમિનાથ લગવાન. ૨૦

અંતરાય અલગ થતાં, કાવે સઘળા દાવ;
 નેમ પ્રભુજી આપશે, ત્રી રત્ન શુભ લાવ. ૨૧

પાર્શ્વ પ્રભુ પ્રભાવથી, પ્રગટે પુન્ય પ્રતાપ;
 શ્રગ દ્વેષ દ્વેરે થતાં, મટે સર્વ સંતાપ. ૨૨

સ્રીવર્ધમાન વૃદ્ધિ કરો, સર્વ સ્થાન સમભાવ;
 આપ તણા ઉપદેશમાં, જો તરવાનું નાવ. ૨૩

ભાવે ભાવના ભાવતાં, નિર્જરે કર્મ જરૂર;
 આતમ શક્તિ ઉદય થતાં, નથી મોક્ષ કંઈ દર. ૨૪
 યુષ્પચંદ જન જાપથી, તજીએ પાપ અઢાર;
 અષ્ટ કર્મ અરી ભય થકી, મૂંઝવે નીરધાર ૨૫

અઢાર પાપસ્થાન અને અષ્ટ કર્મ નિવાર-
 ણાર્થે ચોવીસ જન સ્તુતિ રૂપ ભાવના ભાવ્યા પછી
 ધ્યાન તરફ લક્ષ દોરવે છે.

સંક્ષિપ્ત ધ્યાન સ્વરૂપ.

અનાદિ અનંત સંસાર છે, આ સંસાર સ્વરૂપ;
 દુરલભ તેમાં પામવો, મનુષ્ય જનમ મળી રૂપ. ૧
 કાગ તાક ફળ ન્યાયથી, મળ્યો જોગ આવાર;
 નિશ્ચય કર નિજ રૂપનો, મેલી મોહુ લગાર. ૨
 મનુષ્ય જન્મ સાચું કથના, કર પુરૂષારથ ચાર;
 ધર્મ અર્થ ને કામ છે, ચોથો મોક્ષ વિચાર. ૩
 મધ્ય એને અધમ ગણી, લેવો ધર્મ આધાર;
 પરમ પુરૂષારથ આદરો, જે છે મોક્ષ વિચાર. ૪

ધ્યાનની પ્રાપ્તિ કેવા પુરવેને થાય તે કહે છે.

મનુષ્ય સવે ધીર વીર જે, લેલી ભવ જંજળી;
કરમ કાવેને કાપવા, લે છે સંયમ ભાર. ૫
સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાનને, વળી સમ્યક્ ચારીત્ર;
કાવણ મોક્ષ મળવા તણું, સેવે ચાકળે ચિત્ત. ૬
સમ્યક્ દર્શન આદિ છે, સાધન મોક્ષ સહાય,
તેમાં જ્ઞાન ગર્ભિત છે, સંયમથી સ્થિર થાય. ૭
જન્મ જરા નીવારવા, પી સુધારસ જ્ઞાન;
તરવા ભવસાગર તણું, છે અવલંબન ધ્યાન. ૮
ધ્યાને સમ્યક્ જ્ઞાન છે, જ્ઞાને કર્મ વિનાશ;
કર્મ વિનશતાં મોક્ષ છે, રાખ ધ્યાનની પ્રયાસ. ૯
હવ્છા મુર્છા પ્રમાદ તજ, રાખી ચિત્ત સ્વશાન્ત;
રાજ દેવ તણ મોહને, ધરે ધ્યાન એકાંત. ૧૦
મોગ વિલાસ હવ્છા તણ, તણ દેહ અનુરાગ;
વિરહત થઈ સંસારથી, ધરે ધ્યાન મહા ભાગ. ૧૧
ધ્યાન વર્ણન વિસ્તાર છે, સંશયે ને ધાર;
માત્ર પ્રમાણે આમ છે, ધ્યાન ત્રણ પ્રકાર. ૧૨

શુભ યોગ તે પુણ્ય છે, અશુભ યોગ તે પાપ;
 શુદ્ધ ઉપયોગ ત્રીજો દહ્યો, મોક્ષ હેતુ એ જાપ. ૧૩
 શુભ ધ્યાનથી પુણ્ય ને, અશુભ ધ્યાનથી પાપ;
 મટે બંધ શુદ્ધ ધ્યાનથી, મળે મોક્ષની છાપ. ૧૪
 આર્ત રૂદ્રનો અંત ઠરી, ધર જીવ ધરમ ધ્યાન;
 શુકલ ધ્યાન સાથે મળે, કેવળ દરશન જ્ઞાન. ૧૫
 આરત રૂદ્ર એ ધ્યાનથી, અધોગતિમાં વાસ;
 આખર અવસર આતમા, શુભ ધ્યાને સુખ વાસ. ૧૬

છપમ છંદ.

મૂઠ્ઠથપણામાં ધ્યાન, પરિબ્રહ્માં પદ્મટાએ,
 અન્ય મતિનું ધ્યાન, કુનય થકી હણાએ,
 કવ્ય લીંગીનું ધ્યાન, રહે અંતરથી ન્યાડું,
 આવ શુદ્ધ સુનીરાય, ધરે ધ્યાન તે પ્યાડું,
 રત્ન ત્રય સુકત જે આતમા, સ્વ સ્વરૂપને ધ્યાય છે,
 કેમથી કર્મ કાપી બધાં, અંતે મોક્ષમાં જાય છે. ૧૭

સમ્યક્ દર્શન, સમ્યક્ જ્ઞાન અને સમ્યક્ ચારીત્ર
 એ ત્રી રત્ન પ્રાપ્ત થયા અગાઉ ધ્યાનનો અભાવ છે

માટે ત્રી રત્નનું સંક્ષેપ સ્વરૂપ કહે છે, તેમાં પ્રથમ
સમ્યક્ દર્શન કહે છે. તત્ત્વની રૂચી થતી તે સમ્યક્
દર્શન છે; માટે પ્રથમ નવ તત્ત્વ કહે છે.

છપ્પ ઇંદ.

નવ તત્ત્વ પરતીત, રૂચી થઈ કે કહો સરધા,
સમ્યક્ દર્શન રત્ન, પામવા લલિતે સ્પરધા,
જાણ્યા યથારથ તત્ત્વ, સમ્યક્ જ્ઞાન એ બીજું,
વિરક્તા પાપથી થાય, સમ્યક્ ચારીત્ર તે ત્રીજું;
ત્રી રત્ન એવે નામથી, શ્રેષ્ઠ સાચ ગણાય છે,
વર્ણન દરેકનું જુજીયું, કરતાં ગ્રંથ લરાય છે.

ત્રી રત્ન સ્વરૂપ.

સમ્યક્ દર્શન. (નવ તત્ત્વ વિચાર.)
નવ તત્ત્વ અભ્યાસથી થાય વિશ્વનું જ્ઞાન;
હૃદય જોય ઉપાદેય અનુસરે, એજ ખરો વિદ્વાન.

જીવ અજીવ પુન્ય પાપને, આશ્રવ સંવર સેવ્ય;
 નિર્જરા બંધ મોક્ષ તે, તત્ત્વ પદારથ જ્ઞેય.
 રચના બ્યાપીત વિશ્વની, નવ તત્ત્વમાં ભાગ;
 અંટ દ્રવ્ય વિચારે બંતથી, વળી પંચાસ્તિ ઠાય.
 જીવ અજીવ બે જોડવા, ચૈતન્ય જડ બુદ્ધાય;
 ભક્તે નિરખીરની પરે, સંખી રહ્યા સદાય.
 પુન્ય સંવરને નિર્જરા, મોક્ષ સહીત જે ચાર;
 અનુક્રમે એ આદરી, પામો ભવનો પાર.
 આગારી પુન્ય આદરે, એ તો નય બંધાર;
 નિશ્ચય તજવા જોગજો, આજીવારી આચાર.
 યાપ આશ્રવ ને બંધ તે, ત્રણે તજવા જોગ;
 તેહ તજ્યાં વિણ નહિ કદી, મોક્ષ તણે સંજોગ.

જીવ તત્ત્વ.

ચૈતન્ય લક્ષણ જીવનું, સુખ દુઃખ વેદનહાર;
 સહ ઉપયોગી છે સદા, અસંખ્ય પ્રદેશી ધાર.
 હૃતો જીવતો આજ છે, જીવશે હજી સદૈવ;
 ત્રણે કાળમાં જીવતો, કહેવાયો તે જીવ.

ત્રીલોકમાં તલ સમે, વગ નહિ જીવ વિનાય;
 ઠાંસો ઠાંસ ભર્યા પડ્યા, ત્રસ સ્થાવર ખટ કાય. ૩
 ચેતન્ય લક્ષણથી લડો, એક પ્રકારે જીવ;
 એ પ્રકાર પણ આમ છે, સંસારી ને શીવ. ૪
 કર્મ રહીત થઈ સિદ્ધ થયા, કરમે આઘા જીવ;
 સંસારી જનમે મરે, અજર અમર તે શીવ. ૫
 સંસારી ગતિ ચારમાં, ફરે અનંતી વાર;
 મનુષ્ય તિર્યચ નારકી, કરમે દેવ દુવાર. ૬
 ત્રસ સ્થાવરપણા થકી, પણ બે લેહ જણાય;
 વિવિધ લેહ વિસ્તાર છે, મુખ્ય ચૌદ ગણાય. ૭
 થાંચસે ત્રેફળ પણ કહ્યા, લેહ સુત્ર અનુસાર;
 તરવ વરણન વાંચી જુઓ, જ્યાં છે ખડું વિસ્તાર. ૮

અજીવ તરવ (ખટ દ્રવ્ય; પંચાદિતકાય.)

જીવ પુરુષને ધર્મ છે, અધર્મ આકાશ કાળ;
 ખટ દ્રવ્યમાંથી એકલો, જીવ ચેતન્ય નિહાળ. ૧
 આકી પાંચ ચેતન્ય વિના, અજીવ દ્રવ્ય કહેવાય.
 પુરુષ એકલો રૂપી છે, આકી અરૂપી સહાય. ૨

પ્રદેશાંતરીક પાંચ છે, કાલ દ્રવ્ય વીનાય;
 અનેક પ્રદેશથી બને, પાંચ કાય કહેવાય,
 કાળજ એક પ્રદેશી છે, તેથી ન કાય ગણાય;
 બટ દ્રવ્ય નિજ નિજરૂપથી, ન્યારાં ન્યારાં સદાય,
 પુદ્ગલના જે લેદ છે, અણુ અને વળી સંઘ;
 સ્પર્શ વળુ રસ ગુણ છે, છે રૂપી છે ગંધ;
 સંઘ દેશ પ્રદેશ અને, પરમાણુ એ ચાર;
 લેદ પુદ્ગલના જાણવા, સંઘંધને અનુસાર,
 ધર્મ અધર્મ આકાશ એ, લિપ્ત લિપ્ત અટ્ટેક;
 અમુર્તિક અક્રિય અને, ત્રણે સ્થિર છે છેક;
 ગતિમાં સહાર્થ સર્વદા, વ્યાપક લોકાકાશ;
 ધર્મ દ્રવ્ય એ જાણીએ, જગ ઉપકારી બાસ;
 સ્થિતિ સહકારી સદા, અધર્મ દ્રવ્ય છે એહ;
 વ્યાપી લોકાકાશમાં, થાય સહાર્થ સેહ;
 ધર્મ પ્રેરણા નવી કરે, જીવ પુદ્ગલને લેશ;
 પ્રવૃત્તી કરતા પ્રાણીને, જળ મચ્છ જેમ ઉદેશ;
 અધર્મ દ્રવ્ય પ્રેરક નથી, સ્થિતિ કરાવા કાંઈ;
 છાયાએ પાંચી રહી, આપામે સમતા સાજ.

આકાશ અન્ય પાંચને, આપે છે અવકાશ; ૧
 સર્વ સ્વાપિ સ્વ આશ્રયી, લોક અલોકાકાશ. ૧૨
 એક કાળ બે લેદથી, નિશ્ચય ને વ્યવહાર; ૧૩
 લોકાકાશ પ્રદેશમાં, સ્થિત નિશ્ચય કાળ. ૧૪
 | ભેતીથી આદિ દેવતા, ગમનાદિ અનુમાર; ૧૫
 સમયાદી બે લેદ છે, તેજ કાળ વ્યવહાર. ૧૬
 સર્વ પદારથ વિશ્વના, નવા પુનાતન થાય; ૧૭
 અભિભૂત સહુ દ્રવ્યનું, વર્તન કાળ સદાય ૧૮
 કાળ વર્તનાથાજ સહુ, પલટે રૂપ પદાર્થ; ૧૯
 સમય સમય સ્થિતિ ફરે, અચળ નિયમ યથાર્થ. ૨૦
 વર્તમાન ભણે ભૂતમાં, સવિધ્ય તેને ઠાર; ૨૧
 કવ્ય અવસ્થા પાલટે, અચળ નિયમ અનુમાર. ૨૨
 સ્વ પુણ્યલનું રૂપ તે, પલટયું રહે સદાય; ૨૩
 તે કાલણ તે બેયને, દહા વ્યંજન પર્યાય. ૨૪
 બાકી દ્રવ્યો ચાર તે, નિજ રૂપેજ સદાય; ૨૫
 હાની વૃદ્ધિ ન તેહને, તેથી અર્થ પર્યાય. ૨૬
 અર્થ અધર્મ બે દ્રવ્યને, અસંખ્યાતા પ્રદેશ; ૨૭
 કાળ પ્રદેશ અણ માત્ર છે, નશ અનંત વિશેષ. ૨૮

પ્રુણલઃ એક પ્રદેશથી, સંખ્યાત અસંખ્યાત;
અનંત પ્રદેશી પણ કહ્યો, જુજવા સ્કંધની જાત. ૨૧.

પુણ્ય તત્ત્વ.

અનપાણી આદિ નવ વિધે, વિવિધ પુણ્ય બંધાય;
સાતા વેદનીય આદિથી, કૃણ સુખ રૂપ પમાય. ૧
એતાલીસ પ્રકાર છે, સાતા આદિ જેહ;
નવતત્ત્વ આદિ અંથથી, સમજાશે સહુ તેહ. ૨
શુભ આશ્રવ શુભ પુણ્ય છે, શુભ સંચય કરનાર;
શુભ આશ્રવ સંચય થતાં, મુક્તિ કૃણ દાતાર. ૩

પાપ તત્ત્વ.

પાપ સ્થાન અઠારથી, ખાંધે છે, જીવ પાપ
ખ્યાસી પ્રકારે ભોગવે, નર્ક તિર્યંચ ગતિ છાય. ૧
જ્ઞાનાવરણીય આદિથી, સંસ્થાન પર્યંત;
વિસ્તાર બહુ નવતત્ત્વમાં, વાંચો રાખી ખંત. ૨

અશુભ આશ્રવ તે પાપ છે, કર્મ બંધ કરનાર;
અશુભ તેજ શુભ આદરે, શુભ ગતિ દેખ દાતાર. ૩૭

આશ્રવ સંવર નિર્જરા તત્ત્વ.

આશ્રવ સંવર નિર્જરા, ખાર ભાવના માંધ;
છે વર્ણન વિસ્તારથી, વાંચી વિચારે ત્યાંધ.

બંધ તત્ત્વ.

મિથ્યાત્વ જોગ અવિરતી, કષાય ચાર પ્રમાદ;
કર્મ બંધના હેતુઓ, તજવા રાખી ચાદ.

છપય છંદ.

જઘન્ય મધ્ય ઉત્કૃષ્ટ, સ્થિતિ વધતી કે ઘટતી,
લોગવે કર્મ ત્રીકાળ, સ્થિતિ બંધ એ પદ્ધતિ.
કર્મ દ્રુણ ઉદય થાય, અનુમાન બંધ જાણે;
હવે કર્મ વ્યાખ્યાય, પ્રદેશજ બંધ પ્રમાણે.
નીર ખીર તેલ તેલ સમ, પ્રદેશ જીવને કર્મના;
રહે મળી એક રૂપ થઈ, જે છે જુગવાંધ મુના.

શ્રી મોક્ષ સ્વરૂપ.

- સંબંધ નહિ જ્યાં સર્વથા, કર્મ કાર્ય લવલેશ;
 પ્રતિપક્ષી સંસારને, અવિચળ મોક્ષ પ્રદેશ. ૧
- દર્શન વિર્યાદિ ગુણુનિધી, ગ્રીવાનંદ અરૂપ;
 અત્યંત અવસ્થા એહ છે, સાક્ષાત શિવ રૂપ. ૨
- અનોપમ અવિનાશી સદા, જ્યાં સ્વભાવિક મુખ;
 ઈન્દ્રિય વિષય વર્જિત છે, નહિ તૃપા નહિ ભૂખ. ૩
- નિર્મળ શાંત કૃતાર્થતા, સમ્યક્ જ્ઞાન સ્વરૂપ;
 અરૂપી અવિનાશી સદા; સુધા સિદ્ધ સ્વરૂપ. ૪

ઉપસંહાર.

- બીજક આ નવ તરવનાં, કહ્યાં વગર વિસ્તાર;
 સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાનના, સંબોધન હીતકાર. ૧

છપય છંદ.

- તરવ વરણુન વિસ્તાર, અન્ય ગ્રંથોમાં જડશે;
 મળતાં સમ્યક્ જ્ઞાન, મિથ્યાત્વ મૂળથી ટળશે;

હૈય સ્ત્રેય ઉપાદેય, જાણી સંયમ ચિત્ત ચડશે,
 થતાં ત્યાગ વૈરાગ્ય, રત્ન ત્રીણું સાંપડશે;
 સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાન સહ, ચારીત્ર ને ચોકણું પળે,
 શુદ્ધ યોગ શુદ્ધ ધ્યાનથી, મોક્ષ મંદીરમાં જઈ મળે. ૨

સમ્યક્ દર્શનનું મહાત્મ્ય.

દ્રવ્ય તરત પદાર્થને, વળી પંચાસ્તિ કાય;
 અતિત થઈ ને પુરૂષને, મોક્ષ નજીક કહેવાય.
 દ્રવ્ય પદાર્થ કાયની, સરધા રચી પ્રતીત;
 સમ્યક્ દર્શન એજ છે, ધારો ચિત્ત ખચીત.
 સમ્યક્ દર્શન રત્ન તે, આભુષણ અનુપ;
 માર્ગ સુચવે મોક્ષનો, શોધન આત્મ સ્વરૂપ. ૩

કવિત-મનહર.

સમ્યક્ દર્શન સદા, જ્ઞાન ચારીત્રનું ખીજ;
 અથવા કારણ લહો, યમને પ્રશમનું.
 ૧ મહાવૃતાદિ, ૨ વિશુદ્ધ ભાવ,

આશ્રય તપ સ્વાધ્યાય, શમ દમ ગોધ વૃત્ત;
 સદ્ગુણ કર્યાનું કામ, સમ્યક્ દર્શનનું.
 તોય એ સર્વ તોય, એકલું એ ઉપયોગી;
 એ વિના મિથ્યાત્વ કષ્ટ, લોગવે અજ્ઞાનનું.
 સમ્યક્ દર્શન સાથે, થોડાં ચારિત્રાદિ હોય;
 તોય ફળ આપે અતી, જોખમ સમાનનું. ૪

દોહરા.

મોક્ષ માર્ગનું મુખ્ય તો, સમ્યક્ દર્શન અંગ;
 મહા લાગ્ય તે માનવી, રાગ્યો તત્ત્વ પ્રસંગ. ૫
 અતીચાર વીણુ નિર્ગળું, સમ્યક્ દર્શન હોય;
 યુગ્યાત્મા મહા લાગ્ય એ, મોક્ષ સીડીએ રહોય. ૬

કવિત-મનહર.

અમૃત કહો કે કહો, અતુલ્ય સુખ નિધાન,
 સમસ્ત કલ્યાણ ધીજ, લવાર્ણુવ નાવ છે.

યાચ રૂપી વૃક્ષને તો, કાચવાનો કુહાડો છે,
 યવિત્ર તીરથ માંહી, પ્રધાન પ્રભાવ છે.
 મિથ્યાત્વ રૂપી શત્રુને, જીતનાર શુભટ છે,
 શરણાગતની સાર, લેવાનો સ્વભાવ છે.
 માટે લબ્ય શોધો સાદ્ય, સમ્યક્ દર્શન તણી,
 અનુબ્ય જનમ માંહી, લેવાનો જે લાવ છે. ૭

દોહરો.

સમ્યક્ દર્શન સમજવા, થયો ચિત્ત વિચાર;
 યુગ્મયદ્ધ આધાર આ, જ્ઞાનાર્ણવ અનુસાર. ૮

સમ્યક્ જ્ઞાન વર્ણન.

સ્થિતિ લોકલોકની, જાણે સિદ્ધ સમાન;
 સર્વજ છે આ આત્મા, નિશ્ચય નયથી જાણ.
 કુર્મ પ્રતિબંધથી થયા, લેક અનુક્રમ વાર;
 સતિ શ્રુત અવધિ અને, મનઃ પર્યંવ એ ચાર. ૨
 કેવળ જ્ઞાન એ પાંચમું, જે છે નિરાવર્ણ;
 મહા યોગિ એ મેળવે, રાખી આત્મ શર્ણ.

કવિત-મનહર.

અનંતાનંત પ્રદેશી, આકાશ દ્રવ્યની માંહે;
 અસંખ્યાત પરદેશીને, લોકાકાશ ઠહો છે.
 તે માંહે જીવં પુદ્ગલ, ધર્માધર્મ અને કાલ;
 એ અનંત દ્રવ્યે ભર્યો, ત્રણે કાળ રહ્યો છે.
 ત્રીકાળ અનંતાનંત, લિપ્ત લિપ્ત પર્યાય તે;
 સર્વ એકી સમયમાં, બાણપણે લલ્યો છે.
 એવો પુર્ણ જ્ઞાનવાન, સ્વભાવિક આત્મા નિશ્ચયે;
 તોય લેક ભાવ નિજ, કર્મ થકી ગત્યો છે. ૪

દોહરો.

ઉત્પાદ વ્યય ધૃત ભાવ મય, જગના જેહ પદાર્થ;
 સાસે એક સમયે સહુ, એ છે જ્ઞાન યથાર્થ. ૫

ચારીત્ર.

ગ્રાવક્રનો અણુવૃતાદિ આગાર ધર્મ અને સાધુનો
 મહાવૃતાદિ અણુગાર ધર્મ છે પણ તે જાનેનો સમા-

પશ ચારીત્રમાં થતો હોવાથી ખંને ધર્મનું ચારીત્ર
સાથે વર્ણન કરવામાં આવે છે.

સમ્યક્ ચારીત્ર પ્રભાવથી, ચિત્ત વરતે સમ ભાવ;
શ્રીર વીર ને સ્થિર થઇ, લહે જ્ઞાનનો લાવ, ૧
સર્વ પાપથી સર્વથા, નિવૃત્તિનું સ્થાન; ૨
જીવન જોગીશ્વર તણું, વિશુદ્ધિ નિધાન. ૩

સામાયિક આદિ લઇ, યથાખ્યાત પર્યંત;
ચારીત્ર પંચ વિધિએ કહ્યાં, ધારો રાખી ખંત. ૩
આંચ મહાવૃત સમિતિ, ત્રી શુભ્તી લઇ સાથ;
ચારીત્ર તેર પ્રકારથી, વર્ણવ્યાં શ્રી જગનાથ.

ભવ બ્રમણ ભયભીતને, તરવાનો આધાર;
વીર પ્રભુજીએ વર્ણવ્યાં, ચારીત્ર તેર પ્રકાર.
હિંસા, અસત્ય, અદંત ને, મૈથુન પરીચડ ત્યાગ; ૬
જો મહાવૃત અણુગારનાં, પાળે મુનિ મહાભાગ્ય.
મહાવૃત ભાર વહેવો કઠીન, સુરવીરનું કામ;
શ્રાવક અણુવૃત આદરે, જો પહોંચે નહિ હામ.

બાર વૃત આપય દોહરા.

- ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવની, મનમાં મેર સદૈવ; ૧
સ્થાવર વરજી શ્રાવકો, હજો ન જાણી જીવ. ૧
- કન્યા ગો ભૂમિ સાળ કે, જમા લેણુ ને દેણુ;
વૃત ખીજે શ્રાવક કડી, વહે ન જુહું વેણુ. ૨
- ખાતર વાટ પાડે નહિ, જડયો જણાવે માલ;
વરતન વૃત ત્રીજા તણું, તજે તસ્કરી ખ્યાલ. ૩
- સંતોષ સ્વદારા લાણી, અવર લગની માય;
ચોથું વૃત શુદ્ધ શ્રાવકો, પાળે અખંડીન કાય. ૪
- ધન ધાન્ય ગૃહ ઢોરને, કરે પરિચક માન;
વૃત પાંચમે શ્રાવકો, રોધે ઇચ્છા જાણુ. ૫
- અધો ઉર્ધ્વ ત્રિજી દિશા, કર્યું માન આ કાય;
વૃત છઠે શ્રાવક નહિ, લોપે સહુ ઇચ્છાય. ૬
- ઉપલોગ પરિલોગનું, કરે દિન પ્રતિ માન;
સાતમા વૃતથી પંદરે, તજાય કરમાદાન. ૭
- અપધ્યાય પ્રમાદને, હિંસક શસ્ત્રનો સાજ;
આઠમે ઉપદેશે નહિ, કર્મ બંધનાં કાજ. ૮

તાર મુરત કે અધિક, રોડી આશ્રવ દાર; ૬
 સમતા રસ નિત સેવતા, વૃત નવમે નીરધાર. ૭
 ઉપલોગ પરિભોગ દ્રવ, સાથે દિશા માન; ૮
 અમૂક વળતનું આદરે, દશમું વૃત ગુણવાન. ૧૦
 ઔવિધ અહાર તજી કરે, પાપ સ્થાન પચખાણ; ૧૧
 અમુક પહોરનું એક છે, એકાદશ વૃત ધ્યાન. ૧૨
 અન પાણી વસ્ત્ર ઔષધિ, અન્ય સંયમનો સાજ; ૧૩
 બારમે વૃત્ત નિર્દોષ દે, વાંદે મુનિ મહારાજ. ૧૪
 આયુ સ્થિતિના અંતમાં, આજવી થાય નિર્દોષ; ૧૫
 શ્રાવક રોડી આવતા, ચિત્ત વરતે સંતોષ. ૧૬
 બાર વૃત સલેખના, જ્ઞાનાદિ અતિચાર; ૧૭
 પુષ્પચંદ્ર આલોવતાં, શુદ્ધ રહે આચાર. ૧૮

અહિંસા વૃત.

અહિંસા વૃત આરાધતાં, બાકી ચાર સહેલ; ૧
 ચુકે ચિત્ત લગારતો, બાકીનાં મુશ્કેલ. ૨
 મન વચન કાયા ચક્રી, ત્રણ સ્થાવર જીવ; ૩
 નવપને ઘાત ન સંલવે, તો પામે સુખ શીવ. ૪

જેટલી આશા આપને,	મળવા અણપ હાન;	
સરવ હવને તેટલો,	આપો હક સમાન.	૩
હું અવર તણ આંતરો,	સમ ભાવે વરતાય;	
પાપ સ્થાન પરાં થતાં,	પહેલું વૃત્ત પગાય.	૪
હવન વહાલું હવને,	મરણે કંપિત જોગ;	
નિજ અનુભવથી અનુભવી,	હવ ન હણશો દોય.	૫
કરી કલ્પના ઘાતની,	રહ્યો હવતો દોય;	
ઘાત કર્યા સમ પાપ તા,	લોગવવાનું તાય.	૬
કરવી કે અનુમોદવી,	અવર હવની ઘાત;	
ઘાત એ નિજ આતમ તણી,	એ છે નિશ્ચય વાત.	૭
આત્મવત સૌ હવશું,	વરતે મન વચ કાય;	
જમસ્કાર ત્રીકાળ હો,	પરમાત્મા સુખદાય.	૮
હિંસા ત્યાં ધર્મ ન સંભવે,	ધર્મ અહિંસા એક;	
ધર્મ નિમિત્ત હિંસા કરે,	મોહ અંધ છે છેક.	૯
અહિંસા ધર્મ છે આત્મનો,	જ્યાં હિંસા ત્યાં પાપ;	
ધર્મ નિમિત્ત હિંસા કરી,	દેવી નર્કની છાપ.	૧૦

૧ યજ્ઞ બલીદાન વીગેરેમાં થતો પશુ વધ.

ધર્મ અંગ સમસ્તમાં, અહિંસા એક પ્રધાન;
 તપ જપ વૃત્ત વિણ એકલી, આપે પરમ કલ્યાણ. ૧૧
 સાલી મત્સ સંકલ્પથી, ગયો નર્ક ગતિ જોય;
 કરતા ને અનુમોદતા, સરખા પાપી હોય. ૧૨
 દાર લગારક લાગતાં, જે કંપે નિજ કાય;
 પર પ્રાણ શસ્ત્રે હણે, એ અજ્ઞાન દશાય. ૧૩
 ભયભિત સંસારી જીવને, અહિંસા અમૃત રૂપ;
 સમરથ ભાતું સ્વર્ગનું, આપે સુખ અનુપ. ૧૪
 ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવને, આપે અભયદાન;
 વિવેકી કરૂણાળુ સદા, સકળ ગુણ નિધાન. ૧૫
 ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવને, ગણવા નિજ સમાન;
 પરમ મિત્ર સમજી સદા, દેવું અભયદાન. ૧૬
 રાક્ષસ મનુષ્ય જનમ મહી, પીડે પરના પ્રાણ;
 અહિત કરે નિજ આત્મનું, તે મોહાંધ અજ્ઞાણ. ૧૭
 હિંસા નિષેધી સર્વથા, જીન આગમમાં જોય;
 અન મતિ અહિંસા વદે, પોષે હિંસા તોય. ૧૮
 કિંચિત પીડાથી લઈ, પ્રાણ હરણુ પર્યંત;
 હિંસા મન વર્તન સમી, સુક્ષ્મ થકી અત્યંત. ૧૯

પંચ વિધયને પોષવા, કે કરવા વેપાર;
 ગમત ખાતર પણ ઘણા, હિંસાના હથિઆર. ૨૦
 નિશ્ચય નયથી તો કહી, રાગાદીક હિંસાય;
 વ્યવહારે પર ઘાત તજ, લવી લજ અહિંસાય. ૨૧
 અહિંસા વૃત્ત પુરણપણે, અણુગારી આચાર;
 શ્રાવક પણ હિંસા તજે, છતાં કંઈ આગાર. ૨૨
 ત્રસ સ્થાવર સહુ જીવની મનમાં મહેર સદૈવ;
 સ્થાવર વરજી શ્રાવકો, હણે ન જાણી જીવ. ૨૩
 મન વચન કાયા થકી, પરના પ્રાણુ દુભાય;
 યુષ્પચંદ હિંસા કહી, જીન આગમની માંય. ૨૪

બીજાં સત્યવૃત્ત.

વચનરૂપ વન ગહન છે, સત્ય વૃક્ષે શોભિત;
 અતિ સત્ને ઉછેરીએ, સીંચી દયા જળ નિત્ય. ૧
 વૃત્ત અહિંસ્યા વૃક્ષની, વાડ ખાકી વૃત્ત ચાર;
 સત્ય વાડ સડતાં ઘટે, સર્વ સળળ આધાર. ૨

અસત્ય છે તે સત્ય જ્યાં, હિત જીવનું જાણ; ૧
 સત્ય છતાં અસત્ય જો, પર અહિત પીછાણ. ૨
 અનાદિ આત્મ કલેશને, યમ નિયમે હણનાર; ૩
 મુનિ સત્ય રૂપ નાવથી, તરે લવ દધી પાર. ૪
 સત્ય કરુણામય સરલ, અવિરૂદ્ધ ગંભીર; ૫
 વચન વદો ત્રિવેકથી, તરવા લવ દધિ તીર. ૬
 અખોલ અવલંબન ભલું, સર્વ સિદ્ધિ દાતાર; ૭
 છતાં ખોલ તો ખોલજે, ખ્યાર સત્ય હિતકાર. ૮
 સત્ય સનાતન ધૃત છે, કેવળી ભાષિત ધર્મ; ૯
 અસત્યથી ઉલટાઈને, ઉભરાયા અધર્મ. ૧૦
 કંઈક નીચ સ્વારથી થઈ, વિષય પોષવા કાજ; ૧૧
 અસત્ય વચન વિલાસથી, થઈ ખેઠા ગુરુરાજ. ૧૨
 અસત્ય આંદોલન સમુદ્ધથી, વ્યાખ્યો અજ્ઞ અધિકાર; ૧૩
 શાસ્ત્ર શસ્ત્ર સમાં રચી, કર્યો અસાર સંસાર. ૧૪
 દુષ્ટ પુરુષના મુખની, અસત્ય વાણી જોય; ૧૫
 જેવી કાળી નાગણી, દુઃખરૂપ જગને હોય. ૧૬
 પૂછે તોપણ નવિ વદો, સંદેહી પાપી વાચ; ૧૭
 દ્રેષ દોષ સંયુક્ત પણ, સુણવાને નહિ રાગ. ૧૮

સદયકાર માર્મિક અગ્રીર; વિરોધી દયા રહીત; ૧૨
 પ્રાણ જતાં પણ નહિ કદી, વદો વચન વિપરીત. ૧૨
 દયા સિંધુ હૃદયમાં, વચન લહેર દેવોલ; ૧૩
 શાન્તિ આપે સરવને, ધન્ય સત પુરૂષ જોલ. ૧૩
 ધર્મ નાશ વિપરીત કીયા, લોપ શાસ્ત્રનો થાય, ૧૪
 સરલપણે સમજાવવા, પૂછ્યા વીણ વદાય. ૧૪
 તત્ત્વ દ્રવ્ય ને કાયની, હોય શ્રદ્ધા વિપરીત; ૧૫
 એ મિથ્યાત્વ મહા મોટકું, સત્ય ન ચેટે ચિત્ત. ૧૫
 સત્ય સરધાથી ઉચર્યો, ઉલટાયું કંઈ રૂપ; ૧૬
 તો તે સત્યજ સમજવું, અસત્ય એજ સ્વરૂપ. ૧૬
 કર્મ બંધ અતિ આકરા, અસત્યથી બંધાય; ૧૭
 નર્ક નીગોદ તિર્યચનાં, અત્યંત દુઃખ પમાય. ૧૭
 ચંદ્ર ચંદન ચંદ્રામણી, પુણ્ય સુક્રતાદ્રિજ હાર; ૧૮
 એથી અધીક શીતળ કહો, વચન દિલાસા દાર. ૧૮
 અગ્નિ જવાળાથી અધિક, દુર્વચન દુઃખકાર; ૧૯
 બટ રસ લોજનથી લલા, વચન દિલાસાદાર. ૧૯
 મન પ્રસન્ન સત્ય પ્રિયકર, લલીત વચન લંકાર; ૨૦
 તેહ છતાં શક તો વહે, કઠોર મૂળ ઉચ્ચાર. ૨૦

સત્ય શીલ સહ, જે મહા પુરુષ કોય;
 અર્થ સ્પર્શ ભૂતળ થતાં, પૃથ્વી પાવન હોય. ૨૧
 સત્ય પ્રતિજ્ઞા રહીત જે, અધમ પાપી નીચ;
 અનુબંધપણુ જોઈ ખુતશે, સંસાર કાદવ કીચ. ૨૨
 રૂઝાયા ધાવ તરવારનો, બાંકુ બરછી કોય;
 નિર્દય નરના વચનનો, રૂઝો ધાવ નવ લેય. ૨૩
 ઘિકાર પાપી વિશ્વમાં, હરે પ્રાણીના પ્રાણ;
 અહિત થાય નિજ આત્મનું, એથી રહ્યો અજાણ. ૨૪
 અસત્ય વચન સંસારમાં, સારે શસ્ત્રનું ઠામ;
 વિવિધ પ્રકારે વિસ્તરી, હિંદ્યા ઠામે ઠામ. ૨૫
 વિતરાગે આ વિશ્વમાં; સૌથી સત્ય રૂપી નીર;
 અહિંદ્યા અમર કરી, દયાનિધિ મહા ધીર. ૨૬
 સન વચન કાયા તણા, અશુભ વરતે લેગ;
 વરતન વિરૂદ્ધ બતાવવું, એજ અસત્ય સંલેગ. ૨૭
 શુભ લેગથી રાખીએ, કહેણી રહેણી એક;
 સ્નાતન મારગ સત્યનો, સજીએ સહ વિવેક. ૨૮
 ભુષણ વિદ્યા વિનયનું, યમ નિયમનું સ્થાન;
 સમ્યક્ દર્શન સત્ય એ, સત્યજ સમ્પ્રદ્ જ્ઞાન. ૨૯

હુઈ હૈંત્ય સિંહ સાપ કે, દેવી દેવતા હોય;
 સત્ય પ્રતિજ્ઞાવંતને, લોપી ન થકે હોય. ૬૦
 ચંદ્રપ્રભા સમ ઉજળો, જગા વાધે જગપુર;
 દેવાદિક સ્તુતિ કરે, સત્યવાદિ હંતુર. ૩૧
 અકુલીન રોગી હીનને, દંદિયો હોય અપૂર્ણ;
 છતાં સત્ય ભૂષણ ધર્યે, શોભે છે સંપૂર્ણ. ૩૨
 તપસ્વી કે જોગી જતી, નમ્ર વસ્ત્રધર હોય;
 અસત્ય ગયું ન ઉરથી, ચંડાળ સમ છે સોય. ૩૩
 ધન કુટુંબ જીવન વધે, અસત્ય ઉચરવા ઠાજ;
 ધન્ય પુરૂષ સત્યવાદી તે, છૂટે ન જોડ અઠાજ. ૩૪
 સકળ પાપ એક છાગડે, અસત્ય બીજી મેર;
 છે સરખાં બે વજનમાં, અસત્ય કરાર કેર. ૩૫
 મને છગ લેદે છેતરે, ન ધરું તેનો રોષ;
 હોય હજી નિબ આત્મને, એજ અતિ અપશોષ. ૩૬
 અસત્ય આચાર વિચારમાં, ઉછરે આજે લોક;
 અસંગ પડ્યો કેમ છોડવો, એજ અધિક છે શોક. ૩૭
 સ્વરૂપ સમજ્યો સત્યનું, જોલી ન લખી શકાય;
 મુગો શુભ સ્વપ્ના થકી, મનમાં મગ્ન જણાય. ૩૮

નિંદા છતાં ખર શ્વાનને, પાળે બહુ જન ઘેર;
 અસત્ય વચન વદનારને, દેખી ઉપજે ઝેર. ૩૯
 સત્ય ન સંતાડયું રહે, ચોકાચે ન પમાય;
 સુરજ ઉગ્યો છાબડે, ઠાંક્યો કેમ ઠંકાય. ૪૦
 સુકૃત સઘળાં સેવીને, મેળવ્યો જશ જગમાંય;
 એકજ અસત્ય ઉચ્ચારથી, સુજશ સકળ હુણાય. ૪૧
 ચરિત્રય બુઠા પુરૂષનો, કરતાં છે મહા પાપ;
 સ્વજને સંગ ન સંતને, રહેવા આપતું આપ. ૪૨
 કયો નિષેધ અસત્યનો, શ્રી દેવાધિ દેવ;
 અનુસર્યા કંઈ મહામતિ, કરે સત્યની સેવ. ૪૩
 કરે સત્યની સેવના, સર્વ વૃત્ત સચવાય;
 આશ્રય એક બીજા તણો, ગર્ભિત રહ્યો સદાય. ૪૪
 નાસ્તિક ઉઘટું આચરી, મેલી સત્યને હર;
 અસત્યનો આદર કરી, ભરે પેટ ભરપુર. ૪૫
 સુત્ર સ્વજન સ્ત્રી મીત્ર કે, નીજની સરે અગત્ય;
 તોપણુ ભવ જતાં નહિ, વદવું વચન અસત્ય. ૪૬
 સત્ય વચન સંસારમાં, કરે સકળ કલ્યાણ;
 યુગાય પુરણ મુનિપણુ, પમાય પદ નિર્વાણ. ૪૭

સત્ય વૃત્ત સંપુરણપણે, અણગાત્રી આચાર; ૪૮
 પુષ્પચંદ્ર શ્રાવકપણે, છે સુદામ આચાર. ૪૯
 કન્યા ગો ભૂમિ સાહિદી, થાપણ લેણ ને દેણ;
 પુષ્પચંદ્ર શ્રાવક કદી, વહે ન જુદું વેણ. ૫૦

ત્રીજું અસ્તેય વૃત્ત.

વિતરાગીપણા વિના, સહુ જગતના ચાર; ૧
 ધર દ્રવ્ય પ્રીતેથી હરે, જેવું કર્મનું ભેર. ૨
 મુનિ શુણુ ભુષણ રૂપ જે, વૃત્ત અસ્તેય સદાય;
 મોક્ષ મારગે સ્થિર થના, આદર મન વચ કાય. ૩
 ઇન્દ્રિય અદત્ત વસ્તુ તણી, કરવી ન મન વચ કાય;
 ભવ દેવી તરવા નાવ તે, વૃત્ત અદત્ત ગણાય. ૪
 ગાદ્ય પ્રાણ છે જીવનાં, ધનાદિ પરિશ્રુ કાય;
 હરણ કર્મે હણાય છે, પ્રાણુ જીવનાં ભેય. ૫
 ચોરી હિંસ્યા મય કહી, અસત્ય ચોરી સાથ;
 પાપ અદાર પોષાય છે, અદત્ત ધરતાં હાય. ૬

વિદ્યા વિપરીત ચોરને,
 સ્વ પર જન નિંદા કરે,
 મરણ વિરૂદ્ધ કઠાવીને,
 એને પણ ચોરી કહી,
 ફૂડ કપટને કેળવી,
 ખાતર જોદી પણ ઘણા,
 લૂંટે છે ધન માલને,
 ધનની સાથે તન હરે,
 કસળ ચોર કસળી બધા,
 હાકેમ થઈ ધનને હરે,
 લૂંટે જોશી બજારમાં,
 સગા સહિતને હેતરે,
 વાસ્તવિક વ્યવહારથી,
 અધિક લાહી ઓછું દીએ,
 પિતા માત કુટુંબીઓ,
 તસ્કરના સખંધમાં,
 ઘર વન કે સમાજમાં,
 પકડાયાની બીકથી,

કીરતી બદલ કલંક;
 હોય રાય કે રંક. ૬
 પર વસ્તુ ધરવી હાથ;
 આપે હાથો હાથ. ૭
 કરવો દ્રવ્ય જમાવ;
 એત્રે ચોરી દાવ. ૮
 સ્થળવટ જળવટ ઠેઠ;
 બની ફાંસી આ શેઠ. ૯
 જેવો ધંધો હોય;
 લાંચ લહે છે કોય. ૧૦
 બોલી મીઠા બોલ;
 તોડી કરેલા કોલ. ૧૧
 વરતાએ વિપરીત;
 એ પણ ચોર બચિત. ૧૨
 હેતુ મિત્રાદી કોય;
 આવ્યે રાજ ન હોય. ૧૩
 ચોર સદા લયલીત;
 રાખે ચંચળ ચીત. ૧૪

પકડાતાં પીડા ઘણી, પડશે પ્રોઠ પ્રહાર;
 કદિક જાવું જીવથી, નિશદિન એજ વિચાર.
 પ્રથમ શિક્ષણ ચોરનું, ચોરે ધરનું વિત્ત;
 માત પિતા મન મારીને, રહે સદા લાયલીત. ૧
 ઘર મારી પોતા તણું, પછી પડે છે બહાર;
 વ્યસન સાતને સેવતા, મળી સાથી બેચાર. ૧૭
 ચિંતાતુર ચિત્તમાં સદા, સુખે ન નિદ્રા આહાર;
 વાત ચિત્તમાં વિકળતા, નહિ ચોખો વ્યવહાર. ૧૮
 સહાય આપવી ચોરને, કે સંઘરવો માત્ર;
 તોપણ ચોક્કસ ચોરીની, આવે માથે આળ. ૧૯
 કર્યાં કર્મ કદી આ ભવે, સંચીત સાંહી સમાય;
 પ્રાણબંધમાં તે પાલટી, ઉદય અહીંજ જણાય. ૨૦
 ધાડું પાડી મારીને, હુંટે ધન ધરનાર;
 પહોંચે વાર તો જીવનો, જોખમ થતાં શી વાર. ૨૧
 કુંડેળ કળીલો ચોરનો, તે પણ ચિંતાતુર;
 ક્યારે જોઈશું જીવતો, એમ રહે આતુર. ૨૨
 ભય ભ્રમિત ચિત્ત ચોરનું, ખેલે ચોરી દાવ;
 પછી ભય પકડાયા તણું, નહિ સુખનો લાવ. ૨૩

તરકર દેખી તરતમાં, તન મન શિથિલ થાય;
 વ્યાકુળતા વ્યાપે અતિ, થર થર કંપે કાય. ૨૪
 દોઢેલું કે પડયું ખડયું, વિણ ધણીઆતું કોય;
 દેખી મન વચ કાયથી, ત્યાગી ન રાગી હોય. ૨૫
 ચાર પુરુષના પ્રસંગથી, મોટા છોટા થાય;
 મહા મુનિ પણ પલકમાં, નિંદા યુક્ત ગણાય. ૨૬
 આ લોકે હુંઝા અતિ ઘણું, પર ભવ નકં નિવાસ;
 ચડે ન શીકે ચારતું, કર કહેવત અભ્યાસ. ૨૭
 અચેતન ચેતન લેદંથી, પર ધન ખેય પ્રકાર;
 મન વચન કાયા થકી, મુનિ ન કરે સ્વીકાર. ૨૮
 અન્ન વસ્ત્ર ને ઓષધી, અન્ય સંયમનો સાજ;
 ઉલટથી આપે કોય તો, ખપતું લે મુનિરાજ. ૨૯
 શીવાય તૃણ કે રજ તણી, જ્યારે જરૂર જણાય;
 આજ્ઞા માગી અન્યની, લેવું ખપે સદાય. ૩૦
 એ નિયમ આણુગારનો, નહિ આગાર લગાર;
 આણુગારપણું અળગું જશે, ચુકે ચિત્ત લગાર. ૩૧
 શ્રાવકના આણું વૃત્ત મહીં, છે સુક્ષ્મ આગાર;
 લેતાં છુટ વિશેષ તો, લાગે છે અતીચાર. ૩૨

ખાતર વાટ પાડે નહિ, જડયો ન સંઘરે માલ;
 વૃત ત્રીજથી શ્રાવકો, તજે ચોરી કુચાલ. ૩૩
 કુડાં ન રાજે કાટલાં, વરતે ન રાજ વિરૂદ્ધ;
 યુધ્ધચંદ એ વરતને, જણાય શ્રાવક શુદ્ધ. ૩૪

ચોથું બ્રહ્મચર્ય વૃત્ત.

વૃત વડાં એક એકથી, અન્યોઅન્ય આધાર;
 એક સર્વાંગે સેવતાં, પળશે બાકી ચાર. ૧
 યંત્ર મહાવૃતમાં વડું, શિયલ વૃત સીરદાર;
 બ્રહ્મચર્ય શુદ્ધ સેવતાં, બાકી સહેલાં ચાર. ૨
 બ્રહ્મચર્યને ભાંગતાં, ભાંગે સાથે ચાર;
 વૃત, જપ, તપ સહુ શુભ કીયા, બ્રહ્મચર્ય આધાર. ૩
 જામે જશ આ જગતમાં, અંત અચળ વિશ્રામ;
 સુર નર વર સેવા કરે, જેણે જીત્યો કામ. ૪
 અનંગ પનંગ નવી આભડે, ચેતો ચિત્ત જરૂર;
 બ્રહ્મચારીના ભાગ્યમાં, સુખ સદા ભરપૂર. ૫
 દાનવ માનવ અસુર કે, વિષધર ગ્રાણી કોય;
 બ્રહ્મચારીને ભય નહિ, કરવા સમરથ કોય. ૬

તેજ યુજ તન પેખીએ, અહ્યારી લગવાન; ૭
 દરસનથી પરસન થતાં, થાય કોટી કલ્યાણ. ૭
 ધીર વીર ધારણ કરે, નહિ કાયરનું કામ; ૮
 મહાવૃત છે મોટકું, અહ્યાર્ય સુખ ધામ. ૮
 એ અવલંબનથી થશે, પરિગ્રહ પીછાન; ૯
 યોગી ગણ એના વડે, ધ્યાવે અંતર ધ્યાન. ૯
 અહ્યાર્ય વૃત નિરમળું, પાળે વીણ અતિચાર; ૧૦
 મહા યુજ્ય તે યોગી ગણ, ત્રીલોકના સીરદાર. ૧૦
 અહ્યાર્ય કલ્પ વૃક્ષને, સીંગી સમતા નીર; ૧૧
 અહુ જતને કરી જાળવો, ધરી વાડ નવ ધીર. ૧૧
 ક્રીપાક ફળની ઉપમા, મૈથુન સંજા માન; ૧૨
 કિંચિત સુખ દેખાડીને, કરે અંત જે જાન. ૧૨
 ઇન્દ્રિય વશ દીન વિર્ય હિણ, શકે ન પાળી શીજ; ૧૩
 સમર્થ શક્તિવાન જે, તે પાળે શુદ્ધ દીલ. ૧૩

(કામના પ્રકોપથી થતા દોષો.)

કામ પ્રકોપ પ્રગટ થતાં, ઉપજે જવાળા અંગ; ૧૪
 સુશાળધાર પડે મેઘ પાણ, સમે ન અંસ અનંગ. ૧૪

પ્રજ્વલીત કામાગ્નિ થકી,
 હુગાડો સાગર જળે,
 અનંગ પતંગ વિષ વ્યાપતાં,
 બાણી પરમ યોગી થયા,
 અનંગ છતાં અંગવાનને,
 છતાં અડગ યોગીશ્વરે,
 કામાગ્નિ પ્રજ્વલીત થતાં,
 સમાવવા સમરથ નથી,
 પ્રથમ પ્રગટ થઈ હૃદયમાં,
 અંગો અંગ દહન કરી,
 કામજ્વર કેપી કામીને,
 દેહથી જીવ જુદો કરી,
 ઉપદંશ પ્રમેહાદીકથી,
 કામી જનને કુમ થકી,
 દોષ કામ પ્રકોપના,
 મૈથુન કૃત સંસર્ગ જન્ય,
 સૂર્ય જેઠ મધ્યાનનો,
 કામાગ્નિ એથી અધીક,

પીડાય પ્રાણી જેઠ;
 સમે ન અગ્નિ તેડ. ૧૫
 મુરછાયા જગ જીવ;
 શીંગ શરણુ ગૃહી શીવ. ૧૬
 જીતે જગમાં દામ;
 જીતે રાખી હામ. ૧૭
 દહન થાય છે દેહ;
 નદી દરીઓ કે મેહ. ૧૮
 પહોંચે બુદ્ધિ પાસ;
 કરે અંત વિનાશ. ૧૯
 ત્રીદોષ પણ વરતાય;
 નરકે દોરી જાય. ૨૦
 વિણસે સઘળી કાય;
 અહીંજ નર્ક જણાય. ૨૧
 કામની એણે દોષ;
 દોષ તણે અતી જોશ. ૨૨
 વિના વાદળે વન્ન;
 દેહ કામીનું તન્ન. ૨૩

હુએ અમીય કીરણ થકી,
 કામ કોપ ઉદ્વેગ વધી,
 કામ સત્તા સહુ જગતમાં,
 દેવ મનુષ્ય તિર્યચને,
 કામ વિષધરના વિષથી,
 શીયલ સરણ ગ્રહી યોગીઓ,
 આપે ત્રાસ ત્રિ લોકમાં,
 મહા યોદ્ધને મારવા,
 કામ હુળાહુળ ઝેરથી,
 કોય ઉપાય ન આવનીમાં,
 કામાગ્નિ નીવારવા,
 બુદ્ધે જઈ બે બાકળા,
 થયા કામ વશ જીવ જ,
 સત્ય કામ સઘળાં તજી,
 આત વેગ વિષ સાપના,
 કામાગ્નિ વિષ વેગ તે,

શીતળ કરવા ચંદ;
 કરે કામી આકંઠ. ૨૪
 વ્યાપી કરે વિનાશ;
 બાંધ્યા વિષયા પાશ. ૨૫
 બાળી મુર્છિત જીવ;
 મેળવે છે સુખ શીવ. ૨૬
 નિર્ભય થઈને કામ;
 મુનિ ગણ ભીડે હામ. ૨૭
 નિશ્ચય છે મહા ઝેર;
 વરતાવે છે ફેર. ૨૮
 કામની રૂપી કીચ;
 નર્કને રસ્તે નીચ. ૨૯
 સ્વપ્ને ન પામે સુખ;
 થાય ધર્મ વિમુખ. ૩૦
 ઉપાયથી છે સાધ્ય;
 દેખો દશે અસાધ્ય. ૩૧

(કામના દશ પ્રકોપ) છપય છંદ.

હિપન થાતાં કામ, પ્રથમ પ્રગટે છે ચીંતા;
 ધ્રુષ્ટ કરી અકળાય, મળે ક્યારે એ વનિતા.
 લરે દીર્ઘ નિશ્વાસ, તાવ પશુ ચઢે નો આગે;
 દેહ થાય છે દગ્ધ, અરૂચી અન્ન ન લાગે.
 અતિ ઉન્મત ઉતપાત, સંદેહ પ્રાણુનો થાય છે;
 મહા મુર્છાથી મુર્છીત થઈ, મરી માઠી ગતિ જાય છે. ૩૨

દોહરા.

સંકલ્પે કામ જવર કોપના,	ત્રણ લેહે ઉદવેગ;
તીવ્ર મધ્ય અને મંદપણે,	વધતા ઘટતા વેગ. ૩૩
સર્વ પાપનું મૂળ તો,	જણાય જગમાં કામ;
અધર્મ સૌ એના વડે,	એજ દુઃખનું ધામ. ૩૪
લજ અહોનિશ આતમા,	રહેવું તેમાં લીન;
અર્ધ પ્રહયર્થ એજ છે,	પાળે મુનિ પ્રવીણ. ૩૫

મળ્યો મનુષ્ય ભવ દોહીલો, કયું વિષય વિષયાન;
એત યુષ્ય તજી કામને, આદર આતમ જ્ઞાન. ૩૬

(નારી નીંદા અને પ્રશંસા.)

મુખ વાણી અમૃત સમી,	હૃદય હુળાહુળ ઝેર;
શો વિશ્વાસ સ્ત્રી જાતિનો,	સુરી કાન્તાની પેર. ૩૭
નારી નીચ સ્વભાવની,	હરગુણનો ભંડાર;
સાધુ ત્યાગે સર્વથા,	શ્રાવકને આગાર. ૩૮
સંતોષી સ્વદારા ભણી,	અવર ભગની માય;
ચોથું વૃત શુદ્ધ શ્રાવકો,	પાળે અળંગીત કાય. ૩૯
સહુ નારી સરખી નથી,	સતી શીરોમણી હોય;
સર્વ વર્તિની દ્રષ્ટિએ,	નિષેધ સમુચે હોય. ૪૦
થયા થાય છે ને થશે,	પુરૂષ સલાખી જોય;
વનિતા ઉદર ઉપજે,	સતી શીરોમણી હોય. ૪૧
નીચ કામને નીંદતાં,	કામની પણ નીંદાય;
હરગુણ જે સૌ કામના,	કામની તણા ગણાય. ૪૨
જીતે કામ નર નાર તો,	સરખાં થાય સ્વરૂપ;
હરગુણ સૌ હરે રહે,	કામજ હરગુણ રૂપ. ૪૩

કામની પ્રેરી કામની,	કરે કર્મ અઘોર;
અળખા તે સળખા થઈ,	જાણવે અધિકું જોર. ૪૪
દેવો દોષ ઘટે નહિ,	સઘળો નારી શિર;
સહુ સંસાર એના વડે,	પડવા તરવા તીર. ૪૫
અળખા હોય તે કામને,	રહે સદા આધીન;
શિક્ષણથી સળખા કરે,	કરે કામ સ્વાધીન. ૪૬
ચતુરનિધિ તીર્થમાં,	શ્રાવિકા પદ એક;
જમાનાને અનુસરી,	કેળવો ધારી વિવેક. ૪૭
સંઘ સુધારણા કારણે,	આપો સ્ત્રીને સાજ;
સુધરી પ્રજા સુધારશે,	મહીલા મળી સમાજ. ૪૮
સંતોષી સ્વ ભરથારથી,	અવર બાંધવ બાપ;
પુષ સંકટે શ્રાવિકા,	રાખે આપનું આપ. ૪૯

પાંચસું પરિગ્રહ અથવા ઇચ્છારોધ વૃત્ત.

સર્વ પરિગ્રહ સર્વથા, બાહ્ય અભ્યંતર કોય;

ઇચ્છારોધ અતિચાર વિણ, મહા મુનિથી હોય. ૧

વાડ અહીંસા વૃક્ષની, આ બાબુ પણ એક;

ખંડીત થાતાં બાકીની, નિરૂપયોગી છેક. ૨

એક એકની સહાયમાં, રહે બાકી વૃત્ત ચાર; ૩
 ચારીત્ર યોગી ગણુ તણું, સર્વ સિદ્ધિ દાતાર.
 પાંચે વૃત્ત શુદ્ધ પાળતાં, અઠાર પાપ તબચ; ૪
 યાપ સ્થાન પરાં થવાં, એ વિતરાગ દશાય.
 અંતર આત્માને રહે, સદા સ્વરૂપનું ભાન; ૫
 પર પુદ્ગળ શું રાચશે, બહિરાત્મ બેભાન.
 સ્વ પર પરબાયા પછી, પર વસ્તુ પર પ્રીત; ૬
 અંતર આત્માને નહિ, રહેવી ઘટે બચીત.
 પર પુદ્ગળ પરિગ્રહ મળી, પલમાં પરનો થાય; ૭
 બાળે અંતર ઉલટું જ્ઞાની નવ લોભાય.
 સર્વ વરતીને સર્વથા, પરિગ્રહનાં પચખાણુ; ૮
 દેશ વરતી હદ બાંધીને, રાધે ઇચ્છા બાણુ.
 શ્રાવકને તો સર્વદા, પરિગ્રહથી વહેવાર; ૯
 સદ્વર્તનથી મેળવે, લોપે ન હદ લગાર.
 પરિગ્રહમાં પ્રથમ પદે, પૈસા પામે માન; ૧૦
 સહુ વહેવાર સંસારનો, પૈસા વડે સમાન.
 સાધુ શોભે ધન વિના, પણ શ્રાવક ધનવાન; ૧૧
 સાત ક્ષેત્રો ઉદ્ધારવા, ખરચે ગંબીર સમાન.

ગાડી લાડી વાડી કે, ખાન પાન ગીતગાન; ૧૨
 અંતર ઉદાસીનપણે, દીએ દીનને દાન. ૧૨
 અર્થ અનર્થનું મૂળ છે, પુન્ય પણ એથી પમાય; ૧૩
 જે નિતિથી મેળવી, વ્યય શુભ મારગ થાય. ૧૩
 મમતાં મુકતાં તો મટે, અધોગતિની બીક; ૧૪
 સખળ લાતું થઈ સ્વર્ગનું, દોરે મોક્ષ નજીક. ૧૪
 અધિક મળ્યું શુભ યોગથી, દઈ દીનને દાન; ૧૫
 દયા માર્ગ દીપાવશે, આપી અમય દાન. ૧૫
 આજ અસુલના ઉદયથી, પામ્યો ન પુરણ લોગ; ૧૬
 સંતોષી શુભ લાવથી, પામે શુભ સંજોગ. ૧૬
 અદૃષ્ટ પરિવ્રજીથી લહે, સદા ચિત્ત સંતોષ; ૧૭
 પુણીઆ શ્રાવકની પરે, કરે કરણી નિરદોષ. ૧૭
 સૌ આગારી તો નહિ, બનવાના અણુગાર; ૧૮
 પણ સમણો પાસકપણે, શાશનના શણુગાર. ૧૮
 બાગ બગીચા બંગલા, ફર્નિચર ફેશનદાર; ૧૯
 ધન યોવનનો લય કરે, વ્યભિચારી શીરદાર. ૧૯
 શુભ સંચયના યોગથી, ચઢ્યો શિખર પર આજ; ૨૦
 પટકી પડીશ અધોગતિ, સુણશે કેણુ અવાજ. ૨૦

બહીરાત્મ એ બાળની, કરો ન ઈર્ષા કોય;
 દયા આણવા જોગ એ, પામર પશુ સમ જોય. ૨૧
 અલખત આખી પૃથ્વિની, આવી મળે જો વેર;
 વધે લોભ ચિત્ત લોભીને, સંતોષથી છે વેર. ૨૨
 દોલત દો લત મારીને, પદમાં પરની થાય;
 થાપ કરાવી પુરતાં, નરકે દોરી જાય. ૨૩
 સંચે અર્થ અનર્થથી, લોપી વૃત્ત મર્યાદ;
 વિષય પોષવા વ્યય કરે, સુજે ન દીનનો સાદ. ૨૪
 તન ધન યોવન પદવીના, મદમાં રહી મગફર;
 સકળ વિશ્વની સંપદા, ઇચ્છે ઉર કરી કુર. ૨૫
 આચાર વિચાર અનુસારના, પડે શુભાશુભ બંધ;
 ઇચ્છારોધ અંતર થતાં, છુટે કર્મ સંબંધ. ૨૬
 સ્વ પર લેદ પીછાનવા, કરો તત્ત્વ અભ્યાસ;
 તોજ મતિ નિર્મળ થઇ, છુટે પરિગ્રહ ખ્યાસ. ૨૭
 યુગ્મચંદ વૃત્ત પાંચમું, સાધુને મન સહેલ;
 શ્રાવક સંતોષી રહી, માને નહિ મુશ્કેલ. ૨૮

ઉપસંહાર.

ત્રિભુવન પૂજિત રત્ન ત્રય, એજ મોક્ષનો માર્ગ;
 આરાધી અતિચાર વિણ, થયા થાય વિતરાગ. ૨૯
 રહેસ્ય સર્વ સિદ્ધાંતનું, મુક્તિ કારણ એહ;
 સમ્યક્ રત્ન ત્રય પરમ પદ, નિજ આત્મમય તેહ. ૩૦
 ગયા જાય છે ને જશે, મોક્ષ મહેલ વિતરાગ;
 રત્ન ત્રય આરાધતાં, જીત્યો દેવ ને રાગ. ૩૧

દર્શન, જ્ઞાન, ચારીત્ર, તપ એ મોક્ષના ઉતુચો
 હોવાથી ત્રીરત્ન પછી સંક્ષેપમાં તપસ્યાનું સૂચવના
 કરેલ છે.

કવિત-સનહર.

સકામ નિર્જરા તે તો, જાણીએ તપસ્યા અંગ;
 સલોખના સાથે, મૃત્યુ મોચ્ય વિચારીએ.
 અશુભ ઉદ્યમે મન, વચ કાય સમલાવે;
 સકામ નિર્જરા થાતાં, કરમ નીવારીએ.
 શુદ્ધ ચારિત્ર સરવ, સમાએ તપસ્યા માંહી;

જાણ અભ્યંતર જાર, તંપ તો આયરીએ.
ઈન્દ્રિય નિશ્ચલ સાથે, કષાયો પાડો પાતળા;
ઈત્યાદિ તપસ્યા વડે, આતમ ઉદ્ધારીએ.

અન પાણી મેવો અને, ચોથો જે સુખવાસ;
સહુ શ્રમણ તો સર્વથા, તજે રાત્રીએ ખાસ. ૨
તજે શ્રાવક પણ સરવદા, રાત્રી ભોજન ચાર;
પણ પ્રતિકૂળ સમયનો, રાખે છે આગાર. ૩
રાત્રી ભોજન ત્યાગતાં, સકામ નિર્જરા થાય;
લાલ ભાવ ને દ્રવ્યથી, રહે નિરોગી કાય. ૪

ઉપસંહાર.

જ્ઞાન દર્શન ચારીત્ર ને તપસ્યા બાર પ્રકાર;
યુષ્પ ભાવથી સેવતાં, મુક્તિ ફળ દાતાર. ૫

પ્રતિક્રમણ આપય.

તિક્રમણ કરો પગપણે,	દેખીને નિજ દોષ;	૧
મકીત શુદ્ધ રહે સદા,	ચિત્ત વરતે સંતોષ.	
વત્સર ચોમાસીએ,	પગખી ને દિન નીશ;	
તિયાર આલોવતાં,	ખામો નામી શીશ.	૨
આયિક ચોવી સંતને,	કરી વંદન જે વાર;	
તેક્રમણ ને કાઉસગ,	પ્રત્યાખાન આચાર.	૩
ન કરી સમકિતની,	ઈચ્છ્યો મત મિથ્યાય;	
પાય કરણી ફળ તણો,	પાખંડ ગુણ ગવાય.	૪
પરિચય પાખંડીનો,	જનમતનું નહિ જાણ;	
ત્રી વિધિએ વોસરં,	સાક્ષી શ્રી ભગવાન.	૫
આવશ્યક ખાંતે કરી,	કરીએ અર્થ વિચાર;	
પચદ સહુ પાપને,	હણવાનું હુથીઆર.	૬
જ્યાતવ અવૃત પ્રમાદને,	કષાય અશુભ ભોગ;	
ક્રમણ કર્યું પ્રીતથી,	મળવા શુભ સંભોગ.	૭
ક્રમણ ગત કાળનું,	વર્તમાન સમ ભાવ;	
ચનાં પચ્યાખાણથી,	લહે નીશ દિન લાવ.	૮

પડીકમણાથી પાપને, પરાં કરો નીશ દિન;
 સમભાવે રહી સર્વદા, સંચો નહિ નવીન.
 અજાણતાં આવી મળે, પાપ તણા પરસંગ; ૧૦
 તરત પગ પાછા ભરે, મળે ન આતમ સંગ.
 જાણી પ્રીતી આદરે, પાપ તણા પરબંધ; ૧૧
 કુદરત માફ કરે નહિ, પડે આકરો બંધ.
 પાપથી પગ પાછા ભરી, પરચાવે વ્યવહાર; ૧૨
 છતાં અહોનીશ આલવે, એ શ્રાવક આચાર.
 પડીકમીને પરવરે, કરવા કમ કઠોર; ૧૩
 સાહુકારના વેશમાં, જાણે જુઠો ચાર.
 નામ ધરી શ્રાવક તણું, કરતો સાવજ કામ; ૧૪
 પડીકમવાથી શુ વળે, નિતિ હોય હરામ.
 ચારીત્રનો શુભ સાર તે, વરતનમાં વરતાય; ૧૫
 જો વરતન જુઠું પડે, તે પદ્મજ્ય જણાય.
 કરી સામાયિક સંચરે, મનમાં ન રહી મહિર; ૧૬
 સાકર સ્વાદ લીધા પછી, મુખ આરોગ્યું ઝેર.
 સંસારી વ્યવહારમાં, કરતવ્ય કરવાં શુદ્ધ; ૧૭
 બાર વૃત્તના બંધથી, વરતન નહિ વિરૂદ્ધ.

ગાં સંખંધી સાથમાં, વિળવાદે વરતાય;
 રત ચેતી ચિત્તમાં, દેવી લેવી ક્ષમાય. ૧૮
 હોર દિવસ કે માસમાં, અથવા ચાર છ માસ;
 માવતાં શ્રાવક તણાં, વૃત્ત પકડે ઉત્તમ. ૧૯
 વત્સરની આખરે, અવળ્ય થવું નિર્દોષ;
 ક્ષી માન ક્ષમાવીને, અંતર તજવો રાષ. ૨૦
 અનુસાર ન અનુસરે, શ્રાવકપણું તજાય;
 ના આંકડે શુન્યની, કિમત કેમ ગણાય. ૨૧
 લજ વહેવારથી, ઘણા ખમાવે એમ;
 વધતો આમળો, અપીઆ જેમના તેમ. ૨૨
 ણંધના હેતુઓ, વિરોધ વેર ને ઝેર;
 ની દાઝે શીઠ તજે, નીજ આત્મની મહેર. ૨૩
 કેમળના હેતુઓ, સમજણથી સચવાય;
 અંદ શ્રાવકપણું, સમકિત સહિત જણાય. ૨૪

ચારીત્ર, તમ, ધ્યાન ઇત્યાદી અંતે સમાધિ
 ભરાય તોજ તેની સદ્ગતિ છે, તેથી હવે
 માધિ સતક કહે છે.

અથ સમાધિ સતક.

લેસ્યા અંત સમય તણી, પરભવ માંહી પમાય;
માટે શુભ લેશી થવા, આદર એહ ઉપાય.

(સમાધિ સતકના પેટામાં પ્રથમ સલોખના કહે છે.)

માણીમય કલસ સલોખના, કનક ભુવન વૃત ખાર;
સલોખન વિણ શા કામના, તપ, જપ, વૃત, આચાર.
સલોખના જે લેદથી, કાયા અને કષાય;
કેડા મોર ન કામનાં, સાથે સાધન થાય.
કાય કષાય સલોખના, સાથે રાખ સદાય;
જે ચક્રના ચંત્રમાં, એકે કામ ન થાય.
એકજ કાય કલેશથી, પડે ઉદારિક દેહ;
કાર્મણુ દેહ કરમ ગ્રહી, નવીન આપે તેહ.
કારમણુ દેહ નીવારવા, કર કષાયનો નાશ;
તોજ કરમ નિરમૂળ થઈ, છુટે ગર્ભાવાસ.
કાય કલેસ કરી મરે, તિર્યાચ તરે ન કાય;
કષાય એકલી છૂતવી, કાય કલેષ વિણ નોય.

સશક્ત હોય શરીર તો, કરવો ન કામ કલેષ;
 સાધો ધર્મ આ દેહથી, હોય આયુ અવશેષ. ૮
 સાધન ઉત્તમ આ મન્યું, મનુષ્ય દેહમાં આજ;
 યોષણ દેવું પીંડને, કરવા આતમ કાજ. ૯
 શક્તિ હોય શરીરની, સાધન મૂકી દૂર;
 દેહ પાડતો માનવી, આતમ ઘાતી જરૂર. ૧૦
 મરી જોવું મનુષ્યપણું, ભવ તરવાનું નાવ;
 દેવ તિર્યંચ કે નારકી, લહે ન આવો લાવ. ૧૧
 અસાધ્ય વ્યાધિ ઉપસર્ગ કે, ઉગરવાની ન આશ;
 પ્રલવ એવો લાળતાં, આદરવો સંન્યાસ. ૧૨
 ધર્મ કાર્ય આ કાયથી, નીપજવાની ન આશ;
 ચારે સળ સલેખના, છોડ કર્મનો પાસ. ૧૩
 શક્તિ જાય શરીરની, થાય ન સાધન કામ;
 મતા મૂકી દેહની, સજ સલેખના ભાવ. ૧૪
 જુ સમજ વજુ સાડવી, દેહ એ આતમ ઘાત;
 મળ મરણ શરણ થવું, સલેખના સાક્ષાત. ૧૫
 જન પરિજન સંતોષવાં, લેણ દેણ કરી દૂર;
 ગ દેષ પરિગ્રહ તણ, માગવી માફ જરૂર. ૧૬

આયાશ્રિત લેવું પુર્વનું, વર્તમાન સમભાવ,
 આશ્રવ રોકી આવતા, લે સંલેખના લાવ,
 યંચ વિષયાદિ લોગ તે, તજ સજ સમભાવ;
 કોય કષાય કલેષને, અંતે અંતર લાવ, ૧
 યંચ પ્રભુને પરણુમી, પચળી પાપ સ્થાન;
 અનંશન આદિ આકરી, ધરવું અંતર દ્યાન, ૧૬
 સોહંગ શ્વાસોશ્વાસથી, અવર ક્રિયા કરી બંધ;
 આરાધન અવિનાશમાં, છોડ દેહ સંબંધ,
 નહિ ઇચ્છા જીવ્યા તણી, નહિ ઇચ્છવો કાળ;
 મિત્ર સમૃતિ મરણુ ભય, તજ નિદાન અતિયાર, ૨
 મોહ દેહાદીક દુર કરી, કરવા મન મજબુત;
 મૃત્યુ મહોત્સવ સહસ્યનો, કર અનુભવ અદ્ભૂત, ૨૨

સંલેખનામાં દેહ મોહ ઉતર્યા વગર મન સ્થિ
 થાય નહિ માટે દેહ મોહ ઉતારી દ્રઢ કરવા અ
 આત્મસ્વરૂપ જતાવવા મૃત્યુમહોત્સવ કહે છે.
 મનુષ્ય ભવમાં મહોત્સવ કયો? મૃત્યુ મહોત્સવ.

દોહરા.

ઉત્સવ જન્મને લગ્નનો, દિક્ષા ઉત્સવ થાય;
 મૃત્યુ મહોત્સ શ્રેષ્ઠ છે, જે નિજ આતમ ધ્યાય. ૨૩
 રત્ન કરંડ માંડે ભર્યાં, રત્ન અમુદ્ય અનેક;
 અંત સમયની આરસી, જે મુકતા આ એક. ૨૪
 અમુદ્ય વણુ મૂલે મળે, મૃત્યુ મહોત્સવ નામ;
 અંતરથી આરાધનાં, સ્થાપે મુકિત ઠામ. ૨૫

(મૃત્યુ સમાધિમાં વિધન ન આવે માટે પ્રભુ સ્તુતિ.)

પ્રવર્ત્યે મૃત્યુ મારગે, આપો શ્રી લગવાન;
 ભાતું સમાધિ બોધનું, પહોંચું મુકિત સ્થાન. ૨૬
 અંતે અંતર શુદ્ધ રહે, ધ્યાવા સોહં ધ્યાન;
 આધિ વ્યાધિ ઉપાધિથી, થાઉં નહિ બે ભાન. ૨૭
 અંતરાય આવે નહિ, આરાધનમાં કોય;
 ચિત્ત વિક્ષેપ ચડે નહિ, કૃપા પ્રભુની હોય. ૨૮
 બાળ મરણ મેં બહુ કર્યાં, વધારવા સંસાર;
 યંડિત મરણ શરણ થવા, આપો પ્રભુ આધાર. ૨૯

(પ્રભુ સ્તુતિ કર્યા પછી હવે ચોતાના આત્મા
સમજાવે છે કે:—)

હાડ પિંજર ભરણ થતું; કૃમી જળ શરીર; ૩૦
ભાંગ્યે ભય શાને ધરે, નિશ્ચય તું અશરીર. ૩૦
દેહ મોહના પાશમાં, ભૂલ્યો ચેતન ભાન;
આત્મસ્વરૂપ ન ઓળખ્યું; આંખું દેહ શુભાન. ૩૦
આ શરીર તે તું નથી, તું તો જ્ઞાન સ્વરૂપ; ૩૦
દેહ વિનાશીક દ્રવ્ય છે, આત્મા અમર અરૂપ. ૩૦
નહિ નર તું નારી નહિ, નહિ નયુંસક નામ;
સત્યદાનંદ શીવરૂપ તું, ચોતે આતમરામ. ૩૦
ન તિર્યંચ ન નારકી, દાનવ માનવ કૌય; ૩૦
વિવિધ વેષ વિભાવથી, શાન્તિ સ્વભાવે હોય. ૩૦
મૃત્યુ અવસર આવતાં, માન મહોત્સવ ચિત્ત; ૩૦
ભરણ દેહ સાટે મળે, નવીન દેહ ખચીત. ૩૦
ભરણ પહેરણ પરહરી, સજવું નૌતમ અંગ; ૩૦
ભય તેમાં શો ભાગવો, ધરવો મન ઉત્તરંગ. ૩૦
તજવી જૂની હું પડી, વસવું નવિન મહેલ; ૩૦
કેર આદર આનંદથી, શું? માને સુસ્કેલ. ૩૦

જ્ઞાની: મન મુંઝાય શું, યા સન્મુખ તૈયાર;
 દેહાંતર સ્થિતિ છે થવી, ઉદય કરમ અનુસાર. ૩૮
 હૃદ્યાનિ ધ્યાતો મરે, દુર્ગાનિમાં અવતાર;
 ક્યાવે શુદ્ધ સ્વરૂપ તો, મુક્ત થતાં શી વાર. ૩૯
 અજ્ઞાની ઉન્નતમાં, મરણ સમય મુંઝાય;
 જ્ઞાની ધ્યાન સ્વરૂપનું, ચિત્ત ચોખેથી ધ્યાય. ૪૦
 આં ભવ આપ્યું આદ્યું, ફળ પર ભવમાં હોય;
 મૃત્યુ વિણ કેમ તે મળે, ચિત્ત વિચારી નેય. ૪૧
 સુકૃત સેવ્યાં હોય તે, મન રાખી મૂલીત;
 મૃત્યુને મહોત્સવ ગણે, થાય નહિ ભયભીત. ૪૨
 મુખ્યપણે મૃત્યુ પછી, કૃત્યા કૃત્ય ફળ હોય;
 કર અવિકારી મરણ તો, સુખ સંપદા નેય. ૪૩
 અ કર્તવ્ય કર્યાં નથી, છો શીલ ગુણ સહિત;
 જો ભીતિ શી મૃત્યુની, તજ તજ મતિ વિપરીત. ૪૪
 યદ્ય આપે સુખ સ્વર્ગનું, સુકૃતને અનુસાર;
 ત્ય તું મૃત્યુ મિત્રનો, તજ તજ કરી વિચાર. ૪૫
 જો વ્યાપી જીરણ થતી, દેહે પામતો હૃષ્ણ;
 વારી મૃત્યુ મિત્ર તે, આપે ઉલટું સુખ. ૪૬

કેમ શત્રુએ સાહીને, પૂર્વે પિંજર દે
 ચેતન હુંજ તેમાં સહે, શાથી પામે છેક
 છોડાવે મૃત્યુ મહિપતી, સમસ્થ જો સરદાર
 લય મૂકી લજવો ભલો, ગણવો સુખ દોતાર
 ફરી હંચ નીચ પિંજરે, પુરે કર્મ કઠોર
 મૃત્યુ મિત્ર પાછળ પડી, મૂકાવે કરી જોર
 કહો હવે હું કેમ કરી, પામું નહિ પ્રતિજ્ઞ
 મૃત્યુ સમાધિ રાયથી, જાંધ ગાઠ સંજાંધ
 અવિકારી મણું કરાવશે, આપી સાદ્ય અત્યંત
 અષ્ટ કર્મ અરી લય થકી, કરશે નકી નયંત
 આત્માધીનું ધ્યાન તો, સ્વ સ્વરૂપ લગવાનું
 મૃત્યુ મિત્ર આવી મળે, દેવા મુક્તિ દાન
 નહિ આતુર જીવ્યા તણો, નહિ ઇચ્છતો કાળ
 શુભ ધ્યાન શુભ યોગથી, દ્વાય સ્વરૂપ રસાળ
 આ વિદેહી શીઠ રહે, હળી દેહનોદાસ
 મૃત્યુ સમાધિ સાધી કર, મુક્ત પુરીમાં વાસ
 મૃત્યુ કલ્પક્રમ પામીને, કયું ન સાધન કાય
 છુંડે જન્મ કુપ કીચમાં, કહો સાધન શુંથાય

માનવ ભવમાં મૃત્યુ તે, કલ્પવૃક્ષ સમાન; ૬૧
 ભવ તરવા ॥ તક મળે, મળે મોક્ષ નિધાન; ૬૨
 મૃત્યુ કલ્પદ્રુમ મનુષ્યને, મન વાંછીત દાતાર; ૬૩
 ભાવ ભાવથી ભાવના, ભવ દધિ ભય હરનાર. ૬૪
 દર્શન જ્ઞાન ચારીત્ર તે, સમ્યક્ સીડી સાર; ૬૫
 સમાધિ મૃત્યુ મનુષ્યમાં, એકજ મોક્ષ દુવાર. ૬૬
 અશક્ત શરીર મૃત્યુ લઈ, આપે નૈત્તમ દેહ; ૬૭
 જ્ઞા ॥ મન સુદીત થશે, ધાતાં દુઃખનો છેહ. ૬૮
 દુઃખમય પર્યાય પાલટી, રચાય નવા નવીન; ૬૯
 જ્ઞાનીને ગમતું થશે, અજ્ઞાની ગમગીન. ૭૦
 સરતું પડતું વિનસતું, ધરી શકાય ન ધીર; ૭૧
 શ્વાસોશ્વાસ જીરણ થતું, જે તું જીવ શરીર. ૭૨
 શાન્તિ, કાન્તિ, બળઘટે, જે ઇન્દ્રિયો અચેત; ૭૩
 સાંધા શિથિળ સૌ અંગના, ડગમગ ચાલત ચેત. ૭૪
 સ્વારથ સર્વો સંગંધીનો, પછી ન પૂછે ભાવ; ૭૫
 તરછોડે તીરસ્કારથી, ક્યાં જઈ કરવી રાવ. ૭૬
 રોગ અસાધ્ય આવી મળે, એક હોય ત્યાં એક; ૭૭
 અસહ્ય વેદના વેદતાં, મૃત્યુ છોડાવે છેક. ૭૮

માટે જ્ઞાની મૃત્યુને, માને મહોત્સવ આપ; ૬૫
 સંયમ ત્યાગ વિરાગથી, ધ્યાય સમાધિ બાપ. ૬૫
 જઘન્ય દેવ અવતાર ને, ઉત્કૃષ્ટ સુખ શીવ; ૬૬
 કેદી અનુકંમથી પણ ચડે, મૃત્યુ મહોત્સવે જીવ. ૬૬
 વ્યાપિ રહ્યો જે દેહમાં, જાણી રહ્યો સુખ હંખ; ૬૭
 સાંચિતનાં ફળ સેવવા, થાય મૃત્યુ સનમુખ. ૬૭
 અંતર આત્માને નહિ, કરવો ઘટે કલેશ; ૬૮
 બહિરાત્મ બુદ્ધિ દેહમાં, ખીતો રહે હમેશ. ૬૮
 આત્મ સ્વરૂપ અવિનાશી છે, દેહ દ્રવ્ય ભિન્ન ભિન્ન; ૬૯
 કુર્મેદિય અનુસારની, કાયા મળે નવીન. ૬૯
 જે આશક્ત સંસારમાં, મરણ થકી ભયભીત; ૭૦
 આખર અવસર આવતાં, બને બાવરો ચિત્ત. ૭૦
 હાય નાશ મારો થયો, ગયા લોગ વિલાપ; ૭૧
 હેટુંબ કખીલો ધન બંધુ, ગયાં ગામ ગરાસ. ૭૧
 અજ્ઞાની એમ અંતમાં, ભૂત્રી સ્વરૂપનું ભાન; ૭૨
 અધોગતિને આદરે, ધરતો આરત દયાન. ૭૨
 વૈરાગી સંસારથી, નિજ સ્વરૂપના જાણુ; ૭૩
 એવો અવસર આવતાં, રાખે ચિત્ત સમાન. ૭૩

ગણી જાંજીર આં દેહને, રાખે છુટવા નેમ; ૭૪
 સમાધિ મરણ શરણ ગ્રહી, છુટે કુશળ દોષ. ૭૫
 ધન્ય જનમ આ જગતમાં, કરી ન જનમે જેહ; ૭૬
 ધન્ય મરણ પણ તેહનું, કરી ન પામે દેહ. ૭૭
 ભોગવી સ્થિતિ પૂર્વની, કરી કમાણી હોય; ૭૮
 આયુષ્ય અવધિ આવતાં, રોકી ન શકે કોય. ૭૯
 રોતાં પણ જાવું નહી, કરી સ્વરૂપની હાણ; ૮૦
 હસતાં જાતાં તો થશે, પરમ સ્વરૂપ કલ્યાણ. ૮૧
 તૈયાર રહેવું સર્વથા, મરણ તરણને માટ; ૮૨
 અચાનક આણે આવીને, કાળ દોરશે વાટ. ૮૩
 મૃત્યુ અવસર આવતાં, ઉદય કરમ અનુસાર; ૮૪
 વ્યાધિ વ્યાપે દેહમાં, જ્ઞાની ગણે હિતકાર. ૮૫
 દુખ દરદ છે દેહમાં, દેહ તજ્યેથી સુખ; ૮૬
 ભાન કરાવી જૂલનું, દોરે શીવ સનમુખ. ૮૭
 દેહ મોહ ઉતારવા, થાવા ભાન સ્વરૂપ; ૮૮
 સૂચવવા શીવ માર્ગને, દે દરદાદિ દુખ. ૮૯
 ભલે દેહ દુખ ભોગવે, ચેતન ચિત્ત વિચાર; ૯૦
 અનંત એમ આવ્યો તણ, તને ન આંચ લગાર. ૯૧

સહ્યાં દુખ નકું નિગોદનાં, તિથિ ચના પણ તેમ; ૮૩
 જુગ દુખ જુગ કાળે સમે, કર સહન ગણી એમ. ૮૩
 દેહ શરણ નહિ જીવને, ભવ ભવ કરે નિરાશ; ૮૪
 મૃત્યુ સમાધિ શરણથી, મટે મરણ ભય ત્રાશ. ૮૪
 જેમ અગ્નિ લોહ પિંડમાં, વ્યાપિ ખમે ઘણુ ધાય; ૮૫
 તેમજ દેહ સંબંધમાં, સહ્યાં દુખ સદાય. ૮૫
 વ્યાધિ વહાલો મિત્ર છે, કરે કર્મનો ભક્ષ; ૮૬
 સાદ્ય કરે શુભ ગતિ થવા, લે ઉત્તમ જો ભક્ષ. ૮૬
 કાળ મહા વિકરાળ છે, આપે તાપ અત્યંત; ૮૭
 ત્રાદ્ય ત્રાદ્ય પોકારતા, જગવાસી સહુ જંત. ૮૭
 જ્ઞાની તાપ સહન કરી, થાય શુદ્ધ સુવર્ણ; ૮૮
 સંચિત સર્વે ભવ તણાં, કાપે કર્મ આવર્ણ. ૮૮
 કાચો ઘડો ન કામનો, ભરવા નિર્મળ નીર; ૮૯
 આંચ ખમે જો અગનની, તરે નદીનું તીર. ૮૯
 મૃત્યુનો આ તાપ તે, સમ લાવે સેવાય; ૯૦
 કાપી દગીયાં કરમનાં, ભવ સાગર ઉતરાય. ૯૦
 બહુ કાળે બહુ કષ્ટથી, જે દુખ લે છે સાધ; ૯૧
 જુગ કાળ જુગ કષ્ટથી, આપે મૃત્યુ સમાધ. ૯૧

દેહ પરિચ્છે કુટુંબનો,
 અભય થઈ સમ લાવથી,
 શરીર તજ ચિત્ત શાંતથી,
 નર્ક નિર્ગોદ તિર્યચની,
 ધર્મ ધ્યાન ધ્યાતાં અને,
 મરણ પામતો માતવી,
 વૃત્ત તપ અધ્યયન સુવર્ન,
 ચુક્યો અવસર એહ તો,
 અનાદર અતી સહવાસથી,
 દેહ સંબંધે જીવ તેં,
 ઉપલોગ તો અવનવા,
 દેહ સંબંધે જીવ તું,
 તજ તજ દેહ આનંદથી,
 મનુષ્ય દેહ મૃત્યુનો,
 ગયો અવસર આવે નહિ,
 એત એત એતન અરે,
 આથી અધિકું શું કહું,
 મૃત્યુ સમાધિ શ્રેણીએ,
 મેલી મોહ તમામ;
 લજવા આતમરામ. ૯૨
 આરત રૂઢ તમય;
 ગતિ નીવારણ થાય. ૯૩
 શુદ્ધ સલેખના સાથ;
 થાય દેવનો નાથ. ૯૪
 અંત સમાધિ ઉદ્દેશ;
 અફળજ સહો કલેષ. ૯૫
 જણાય જગની રીત;
 ઝડી મતિ વિપરીત. ૯૬
 આહિ ચિત્ત ખચીત;
 તજ તજ મતિવિપરીત. ૯૭
 લય તજ સમલાવ;
 મળે સમાધિ લાવ. ૯૮
 કરતાં કોટી ઉપાય;
 કાંઠે માલ વિમાય. ૯૯
 એતો એતન રાય;
 સહજે સ્વર્ગ જવાય. ૧૦૦

૬૬

ચઢતી પગથી પામતો, કરી કરમનો નાશ;
 એજ સમાધિ શ્રેણીએ, અતેશીવ સુખ વાસ. ૧૦૧
 ભય ભાંગી મૃત્યુ તણો, કરે સ્વરૂપ પ્રકાશ;
 પુણ્યચંદ ઉપદેશ આ, લે આતમ તું ખાસ. ૧૦૨

ઉપસંહાર.

સમાધિ સત્તક હાર આ, કંઠે ધારણ થાય;
 શુદ્ધ સ્વરૂપને ઓળખી, સમાધિ મરણ મરાય. ૧૦૩
 કંઠાબ્રહ્મ અમુલ્ય આ, સમાધિ સત્તક નામ;
 શ્રવણ ધરતાં પણ મળે, અંત અંતિ વિશ્રામ. ૧૦૪
 મૃત્યુ મહોત્સવ એજ છે, સર્વ ઉત્સવમાં શ્રેષ્ઠ;
 અંત સમય આરાધતાં, સ્થાપે મુક્તિ ઠેઠ. ૧૦૫

કર્મની વિચીત્રતા.

જે જે જગમાં વિચીત્રતા, શુભાશુભ દેખાય;
 કર્મ સત્તાના દાખલા, છે અનુભવ નિજ કાય. ૧
 માટે ચિત્તમાં ચેતીને, શુભ કરમ કરું સંચ;
 ઉપદેશકોની તણું, અશુભ કર્મ પ્રપંચ. ૨

કવિત મનહર.

જ્ઞાનાવરણી કરમ, થકી જ્ઞાન રોકાયું છે;
 દર્શનાવરણી થકી, દર્શન રૂંધાયું છે.
 વેદની કર્મ પ્રતાપે, સાતા અસાતા વેદાય;
 મોહની કરમ મદે, મોહમાં બંધાય છે.
 આયુ કર્મે ઠામે ઠામ, જનમી દેહ તજાય;
 નામ કર્મે નવ નવે, નામે ઓળખાય છે.
 ગોત્ર કર્મ ઉંચ નીચ, ગોત્ર માંહી ઉપજવે;
 અંતરાય કર્મે અતિ, લાલ દુર થાય છે.

દોહરા.

આત્મા શુદ્ધ સ્વરૂપ તે, મળ્યો કર્મે મળ સાથ;
 તીવ્ર તપસ્યા ધ્યાનથી, થાય નિરંજન નાથ. ૪
 જ્ઞાન દર્શન આવર્ણ્યથી, ઢંકાએ છે તેહ;
 વેદની કર્મથી વેદીએ, અસાતા સાતા દેહ. ૫
 મોહની કર્મ મદ મોહથી, મોહ્યો સહુ સંસાર;
 જન્મ મરણ ફેરા ફેરે, આયુષ્ય કર્મ આધાર. ૬

નામ કર્મના ઉદય સમ, લમવું ઠામો ઠામ; ૭
 જુજવી જુવા જોનીમાં, જુજવાં ધરવાં નામ; ૮
 ગોત્ર ઉંચ નીચ પામવાં, ઠરી ન એસવું ઠામ; ૯
 રખડાવે ગતિ ચારમાં, ગોત્ર કર્મનું કામ; ૧૦
 અંતરાઈના ઉદયથી, લાલ લેખતાં ખોટ; ૧૧
 દાન વિચારને ભોગની, ભરતી ઇચ્છતાં ખોટ; ૧૨
 ઘટમાળ અનુક્રમે, ચડે ઉતરે જેમ; ૧૩
 કરમે આદ્યા જીવની, ગતાગતિ છે એમ; ૧૪
 સુક્ષ્મ બાહર કોય છે, સ્થાવર જંગમ નેય; ૧૫
 સ્વર્ગ નર્ક આ લોકની, ગતિ કર્મથી હોય; ૧૬
 એકેંદ્રી આદિ લઈ, પંચેંદ્રી પરીચંત; ૧૭
 શુભાશુભની વિચીત્રતા, એજ કર્મ બગવંત; ૧૮
 કોય રંક કોય નાય છે, રોગી નીરોગી કોય; ૧૯
 કર્મ સતાના દાખલા, જગ રચના સૌ નેય; ૨૦
 યંચ વિષયને યોષવા, કે કરવા વેપાર; ૨૧
 વિના સ્વાર્થે પણ ધણા, બાંધે કર્મ અપાર; ૨૨
 કષાય સંસાર વિકથા, આરત રૂદ્ર સેવાય; ૨૩
 કર્મ બંધનાં કારણો, આશ્રવ તે કહેવાય; ૨૪

મન વચન કાયા તણા, જેહ શુભાશુભ યોગ; ૧૬
 સમય સમય સંચે સદા, કર્મ તણા સંલોગ. ૧૬
 કરવી કે અનુમોદવી, અથવા ઇચ્છવી ધાત; ૧૭
 અશુભ કર્મ અતિ આકરાં, લોગવવાં સાક્ષાત. ૧૭
 અદપ ઇજા આદિ લગ, પ્રાણુ હરણુ પર્યાત; ૧૮
 હિંસા એ હેતુ કર્મની, સુદ્ધ કર્મ અત્યાંત. ૧૮
 એક કે યુગલ યોગથી, સિથિલ બંધ બંધાય; ૧૯
 તિમ્ર ત્રીયોગની એકતા, બંધ નકાચિત થાય. ૧૯
 યુન્ય પાપ એ કંદ તે, છે શુભાશુભ કર્મ; ૨૦
 જ્વર્ગ નર્ક આ લોકમાં, રખડાવ્યાનો ધર્મ. ૨૦
 વિના ચૈતન જડ લક્ષણે, પર પુદ્ગલ સમુદાય; ૨૧
 ચૈતન્યને સંસારમાં, રખડાવેજ સકાય. ૨૧
 યુન્ય તત્વ પ્રભાવથી, શુભ કર્મ ફળ હોય; ૨૨
 ઉદય આવતાં જીવને, સુખ સંપદા જોય. ૨૨
 અશુભ કરણી આદર્યે, અશુભ કર્મ ફળ હોય; ૨૩
 કડવાં ફળ જીવ લોગવે, પાપ ઉદયથી જોય. ૨૩
 મિથ્યાત્વ અવિરતી પ્રમાદને, અશુભ જોગ કષાય; ૨૪
 કર્મ બંધના હેતુઓ, આશ્રવ જે કહેવાય. ૨૪

આત્મ પ્રદેશ સાથે મળે, અષ્ટ કર્મ સંબંધ; ૨૫
 ચતુરવિધ પ્રકારથી, પ્રકૃતિ આદિ બંધ. ૨૫
 આત્મ પ્રદેશથી સર્વથા, મૂકાએ ને કર્મ; ૨૬
 જડ ચૈતન્ય જુદાં થવાં, એજ મોક્ષનો મર્મ. ૨૬
 કર્મ મળ કરે એકઠો, પંદર પાપ વેપાર; ૨૭
 બાંધે બંધ અતિ આકરા, પાપસ્થાન અઢાર. ૨૭
 પ્રાલબ્ધ ભાવિ ભાવ વિધિ, નરીખ કુદ્રત દૈવ; ૨૮
 જુજવે નામે ઓળખો, એ સહુ કર્મ સદૈવ. ૨૮
 કર્મ ન મૂકે કોયને, દાનવ માનવ રાય; ૨૯
 કરણી સમ સહુ ભોગવે, એ છે કુદ્રત ન્યાય. ૨૯
 રંક બને છે રાજીઓ, રાય થાય છે રંક; ૩૦
 એ પણ કારણ કર્મનું, કે એ વિધિના અંક. ૩૦
 કરમે દેવ મનુષ્યમાં, કરમે તિર્થંચ હોય; ૩૧
 કરમે નર્ક નિગોદમાં, ગતાગતિ સહુ ભેગ. ૩૧
 લક્ષ ચોરાસી ચોનિમાં, ક્યો અનાદિ જીવ; ૩૨
 એ છે કારણ કર્મનું, કર્મ તજ્યા તે શીવ. ૩૨
 નીર ખીર તલ તેલ સમ, કરમે આહ્યો જીવ; ૩૩
 નિર્જરતાં એ કર્મને, શુદ્ધ આત્મા છે શીવ. ૩૩

જીવ શીવ થાયે ખરો,
 કર્મ બીજને બાળીઆં,
 નીચ કર્મ કરી જીવ જે,
 શુદ્ધ ચારીત્રને સેવતાં,
 કાળ કર્મની બાળમાં,
 અશુભ શુભ કર્મે લહે,
 કર્મ બાંધીએ જે રસે,
 તરત ન આવે ઉદયમાં,
 લહે ન ભાગ સ્નેહી સગું,
 દળવળી સહુ તાકી રહે,
 કરમને શરમ નહિ જરા,
 શુભાશુભના ઉદયથી,
 ચડે પડે છે આત્મા,
 અવર ન કરનારો ગણો,
 શુભ કરવું નિજ હાથમાં,
 છે નિશ્ચય તો અવરને,
 નિજ શુભાશુભ નિજથી,
 એ નિશ્ચય આબ્યા વિના,

શીવ ન થાયે જીવ;
 શુદ્ધ આત્મા છે શીવ. ૩૪
 નરકે પાડે રીવ;
 મેળવશે સુખ શીવ. ૩૫
 સપડાયા ત્રીલોક;
 અધો ઉર્ધ્વે આ લોક. ૩૬
 તેજ રસે વેદાય;
 તોપણ સાથે થાય. ૩૭
 સહે અસાતા આપ;
 હોએ હેત અમાપ. ૩૮
 કર તેવુંજ પમાય;
 ચડતી પડતી થાય. ૩૯
 શુભાશુભ સંયોગ;
 સંપત્તિ યોગવિયોગ. ૪૦
 અશુભનું પણ એમ.
 દોષ આપીએ કેમ. ૪૧
 પર પ્રેરક નહિ લેશ;
 દળે ન આત્મ કલેષ. ૪૨

પાપ સ્થાન અઠારથી, ખાંધે પ્રાણી પાપ; ૪૩
 ખ્યાસી પ્રકારે લોગવે, પામે હુંખ અમાપ. ૪૪
 આત્મરૂપ તળાવમાં, આશ્રવ કીચ ભરાય; ૪૫
 રૂઢે ઘડનાળાં મોકળાં, નિત્ય વધારે થાય. ૪૬
 રોકો સંવર દારથી, કરી વૃત્ત પચ્ચખાણ; ૪૭
 ઘઘી ઉલેચો કીચને, કરી તપસ્યા ક્યાન. ૪૮
 ચુરવ પુન્ય પ્રતાપથી, મળ્યો મનુષ્યા દેહ; ૪૯
 દીર્ઘાયુ સાથે વળી, જૈન ધર્મ શું નેહ. ૫૦
 યાપ અઠારે પર હરી, જીતાય રાગ ને દ્રેષ; ૫૧
 વિષય કષાય કરી પરા, સેવો શીલ હમેશ. ૫૨
 ચરિત્રહ મેળવ્યો પ્રીતથી, જાણ્યું પામીશ સુખ; ૫૩
 લોગવતાં ભારે પડ્યો, સહ્યું હુંખ હુંખ હુંખ. ૫૪
 છોડ્યો તે છુટે નહિ, આત્મ શક્તિ છે હીન; ૫૫
 જોમ જોડ્યો બળદીઓ, હાંક્યો હાલે દીન. ૫૬
 આ ભવ તો એળે ગયો, છે અંતર ઉદાસ; ૫૭
 સો પર ભવ શુભ જોગની, આશાનો અવકાશ. ૫૮
 દાન શીયળ તપ ભાવ એ, ભવ તરવાનાં નાવ; ૫૯
 અહ કર્મ અરી દળ તણી, તહાં ન ફાવે દાવ. ૬૦

કરમ સમો જગમાં નહિ, કરતા હરતા કોય;
 પણ બળીયો થઈ આતમા, જીતે તેને તોય. પર
 નાખે નર્ક નીગોદમાં, આપે સ્વર્ગ વિમાન;
 તેને જીત્યા જે પ્રભુ, વંદું સિદ્ધ ભગવાન. પૃ
 સંચિત પુરવ ભવ તણા, ઉદય રસ આપે ખાસ;
 આ ભવનો પણ દેખીએ, ઉદય આવતો ભાસ. પૃ
 આ ભવ શુભ કરાણી કરી, શુભ ફળ માગે કોય;
 ઉદય પુર્વના અશુભમાં, શુભ ફળ ક્યાંથી હોય. પૃ
 મળશે એ ફળ આગળે, શંકા કરો ન કોય;
 વૃક્ષ વાવો સંભાળથી, તકે ફળે છે તોય. પૃ
 રચ્યા પચ્યા રહી પાપમાં, ભોગવે સુખ ભરપૂર;
 પુર્વ ઉદય એ ભોગવી, જાશે જ્યાં જમપુર. પૃ
 નવ નિધિ ભરપૂર ભર્યા, ભરતી નહિ છે ઝોટ;
 કાળાંતરે કમી થતાં, અંત આવશે ખોટ. પૃ
 તાવી ટીપી કાપીને, કરે કસોટી કર્મ;
 સોનું સજ્જન શોભશે, ધારીને નિજ ધર્મ. પૃ
 સુખ દુઃખમાં હરખે રૂએ, અજ્ઞાની આચાર;
 જ્ઞાની સમ ચિત્તથી રહે, આણી કર્મ વિચાર. ૬૦

યુરણુ યુરવ પૂન્યથી, મળ્યો મનુષ્યા દેહ; ૬૧
 રૂપ સ્વરૂપ ન ઓળખ્યું; પર પુણ્ય પર નેહ. ૬૨
 અન્યગતિમાં તો અતી, હતો અંધ અજ્ઞાન; ૬૩
 મનુષ્યપણું પામ્યા છતાં, જોવું ન થટે ભાન. ૬૪
 છુટક બાર આજ છે, મળે ન વારમવાર; ૬૫
 માટે મનુષ્યા દેહને, ગણ્યો સારમાં સાર. ૬૬
 અતુર આત્મ ચેતી ગયા, તોડી કર્મ જન્મજ; ૬૭
 મોક્ષ મંદીરે સ્થિર થયા, છોડી ભવ ઘટમાળ. ૬૮
 વિયોગ સંયોગ ઈષ્ટ હૃદનો, વ્યાધિ માન અપમાન; ૬૯
 દેહ શુભાશુભ સર્વ છે, કર્મ તણું નિદાન. ૭૦
 ઉદય દરમ રસ આવતાં, ભોગવને સમ ભાવ; ૭૧
 વિલાપથી વધતો થશે, કર્મ કીચ જમાવ. ૭૨
 દરમ રણુ અતિ આકર્ષ, ભોગ મળ્યો છે આજ; ૭૩
 નિરજરને સમ ભાવથી, મળશે સખળી સાજ. ૭૪
 વિચિત્રતા સહુ કર્મની, કહ્યો એજ સંસાર; ૭૫
 સુખચંદ્ર એ કાપવા, કરવો ઘટે વિચાર. ૭૬

ઉપદેશીક દોહરા.

માર્ગાનુસારી કર્યો, આપી બોધ અનુપ;
 નમસ્કાર ત્રીકાળ હો, સદ્ગુરુ આત્મ સ્વરૂપ. ૧
 સંસાર સમુદ્રથી તારવા, નીવડે નાવા રૂપ;
 સરણુ ગ્રહું સદ્ગુરુ તણું, જે છે આત્મ સ્વરૂપ. ૨
 જન્મ જરા મૃત્યુ નહિ, શોક દુઃખ નહિ રોગ;
 નિત્ય અવિનાશી અભય છે, નમું સુખ સંભોગ. ૩
 અદિશ્વર આદિ લઈ, વર્ધમાન ભગવાન;
 તર્ક સ્વભાવે ભાવતાં, ધરીએ તેહીજ ક્યાન. ૪
 નમું ગણધર આચાર્યને, અવર મુનિશ્વર વૃંદ;
 ઉપદેશ્યા ઉપદેશ જે, અનુભવતાં આનંદ. ૫
 અહોનિશ નમું પરમાત્મને, સ્વાત્મા નિશ્ચય તેહ;
 સત્યિદ આનંદ રૂપ છે, અલખ અમુર્તિ જેહ. ૬
 અનંત જ્ઞાન દર્શન અનંત, અનંત વિર્ય પ્રકાશ;
 નિશ્ચય નયથી આત્મા, છે પરમાત્મા ખાસ. ૭
 અરિહંત સિદ્ધ આચાર્યજી, ઉવચાય સહુ સાધ;
 પુંચ પદ પરમેષ્ઠિ ભજો, ધોવા પાપ અગાધ. ૮

આર આઠ છત્રીસ ને, પચીસ સત્તાવીશ સાર;
 અ, સિ, આ, ઉ, સા, દેવના, ગુણ ગણું ત્રીકાળ. ૬
 અરિહંત સિદ્ધને સદા, માનું છું હું દેવ;
 ગુરુ નિર્ઘંથની સર્વથા, કરું ભાવથી સેવ. ૧૦
 યતિ ધર્મ દશ અંગે કહ્યો, દયામય વસ્તુ સ્વરૂપ;
 રત્ન ત્રય ધર્મ સેવું સદા, જે છે આત્મ રૂપ. ૧૧
 દેવ ગુરુને ધર્મનું, સમજી ખરું સ્વરૂપ;
 વિષ્ણુ અતીચારે વર્તવું, એ સમકીર્ત અનુપ. ૧
 ચરિત્રહુ મોહ માયા તણી, તજ તજ જીવ જંજાળ;
 આત્મ તત્ત્વ અભ્યાસ જે, સર્વ સિદ્ધિ દાતાર. ૧
 આત્મજ્ઞાન ઉપજાવવા, સર્વ સુત્ર ઉદ્દેશ;
 કીયા પણ કહી તે કારણે, છતાં જ્ઞાન ન લેશ. ૧
 જ્ઞાન મેળવવા કારણે, કરવી કીયા જરૂર;
 ચારીત્ર વિષુ સિદ્ધિ નથી, જ્ઞાન ન ઉપજે ઉર. ૧
 પણ કીયા જડપણે કરી, દીધું ન જ્ઞાનમાં ધ્યાન;
 ધાર્યો પંથ કાપે નહિ, ઘાણી બેસ સમાન. ૧
 સુસ્ક જ્ઞાન ક્યને કરી, કરે ન કીયા કોય;
 નહિ ઘરનો કે ઘાટનો, ઘોળી શ્વાન સમજોય. ૧

આતમ બોધ થયા વિના, કીયા શું આવે કામ; ૧૮
 મોક્ષ હેતુ મન હોય તો, ઓળખ આતમરામ. ૧૯
 આતમ જ્ઞાન પમાડવા, કહ્યાં સુત્ર સિદ્ધાંત; ૨૦
 છતાં ન આતમ ઓળખ્યો, કરે કીયા એકાંત. ૨૧
 દેવ શુરૂ ને ધરમનું, સમજી ખરું સ્વરૂપ; ૨૨
 અંતરથી આરાધીએ, જે સમકીર્ત અનુપ. ૨૩
 મારગ સુચવે મોક્ષનો, વિદ્યા તેજ વળાણ; ૨૪
 યથાર્થ બોધ એને કહો, આપે પદ નિરવાણ. ૨૫
 મૃગ મૃગમદને શોધતો, રખડે રાનો રાન; ૨૬
 નિશ્ચય છે નિજ નાલીમાં, તેનું ન મળે ભાન. ૨૭
 નિશ્ચય અવિનાશી નિજમાં, તેથી રહી અજ્ઞાન; ૨૮
 તિરથ યાત્રા સ્થાનમાં, શોધે છે ભગવાન. ૨૯
 વિષયાનુરાગી નિત્ય નવા, બાંધે કર્મના બાંધ; ૩૦
 વિરક્ત થાય જો વિષયથી, છોડે કર્મ સંબંધ. ૩૧
 સર્વ સુત્રનો સાર તે, સમભાવમાં માય; ૩૨
 રાગ દ્વેષ વિણ આતમા, સમભાવી કહેવાય. ૩૩
 દેખ નરક સમ દેહ આ, દોષ દરદનું ધામ; ૩૪
 છતાં એજ ઉપકારી છે, ભગવા આતમ રામ. ૩૫

તૃણા તે ત્રીલોકને, રખડાવે ગતિ ચાર;
 તેહ ત્યાગતાં ભવને, મુક્ત થતાં શી વાર. ૨૭
 તપ ઉણોદરી આદિથી, મરે કરી કાય કલેષ;
 યામે સ્વર્ગ કે સંપદા, એથી ન આશ વિશેષ. ૨૮
 થણુ જો તે તપસ્યા વડે, પંડીત મરણુ મરાય;
 લેહી લવ જન્મળને, પંચમ ગતિ પમાય. ૨૯
 અહિંસા સ્વર્ગ દાતાર છે, મોક્ષ દાતા પણ તેહ;
 મરને નિજ સમાનતા, રાખો મન વચ દેહ. ૩૦
 સગાં સંબંધી સ્નેહીયો, પ્રેરે પાપ સ્થાન;
 પ્રીત દેખાડી પણ પળે, બને શત્રુ સમાન. ૩૧
 વિધુર દશાએ વરતવા, આળ્યો ઉદય આજ;
 પ્રમ ઉદયમાં પાલટે, કર ભવ આતમ કાજ. ૩૨
 વૃદ્ધ વયે વિધુર થવું, ઉદય અશુભ ગણાય;
 અશુભ ઉદયમાં પાલટે, આતમ સાધન થાય. ૩૩
 જનમીને મરવું નક્કી, આયુષ્ય કર્મને અંત;
 ઉંચ ગતિમાં ઉપજવું, એ હર્કલ અત્યંત. ૩૪
 જો તૃણા બીયે નહિ, મળતાં ધન અધિકાર;
 તો નર બર તે સમજવો, રંક તણા સરદાર. ૩૫

ઉદ્યાધિન સંતોષથી, ચલવે જે વ્યવહાર; ૩૬
 નિતિ માર્ગ લોપે નહિ, તે શ્રીમાન ઉદાર. ૩૭
 આશા મૃગ જળ જાણવી, નિરાશા અમૃત પાન; ૩૮
 તૃષ્ણા દેહ દમન કરે, સુખ સંતોષ સુકાન. ૩૯
 તણ દુરાશા દીનતા, સજી સીલ સંતોષ; ૪૦
 ભણ અહોનિશ આતમા, કરો કર્મ નિરદોષ. ૪૧
 ઇચ્છે અમિય કીરણ થકી, સીતળ કરવા ચંદ; ૪૨
 છતાં વિંટાએ વાદળે, કળા જણાયે મંદ. ૪૩
 યર અવગુણ પ્રકાશવા, તે સહુને મન સહેલ; ૪૪
 નિજ દુર્ગુણ નિહાળવા, એ જનવું મુશ્કેલ. ૪૫
 નિજ અવગુણને નીરાખી, તજવા રાખી દેક; ૪૬
 યર સદ્ગુણ પ્રગટ કરે, તે તો લાખે એક. ૪૭
 અવગુણ ગણવા સહેલ છે, ગુણ ગણવા મુશ્કેલ; ૪૮
 કીડી કાણાં શોધશે, હોય હિમના મહેલ. ૪૯
 સ્વભાવથી સમ રહે, એ તો નવડો એક; ૫૦
 ગુણો ગમે તે અંકથી, સરવાળે નવ છેક. ૫૧
 તેમજ સંતો સરવદા, રહે સ્વભાવે લીન; ૫૨
 હાની વૃદ્ધિ ન લેખવે, ગણે કર્મ આધિન. ૫૩

જો અંક લે આઠને, ગુણતાં ઘટે અંકેક;
 તેમજ હરજન જાણવો, રાજે નહિ નિજ ટેક. ૪૫
 નિજ નિજ કારજમાં કુશળ, એવો સહુ સંસાર;
 થર કારણ પીડા સહે, તે વીરલા નરનાર. ૪૬
 કહેણી રહેણી સુજનની, સુખરૂપ સૌને હોય;
 સરલપણું ચુકે નહિ, આવરણ આવે તોય. ૪૭
 દેખી આચરણ આપણું, ભૂલે સંતતિ ભાન;
 તે પણ તેવું આચરી, કરે કૃપા અપમાન. ૪૮
 માછળની પ્રજા સહુ, વરતે વિનય સહિત;
 આલાસ એવો પાડીએ, નિવડે તોજ વનીત. ૪૯
 અતિથિ આવે આંગણે, દેવું આદર માન;
 ધન્ય લાગ્ય ગણી આપીએ, ઘર સંપત્ત અનપાન. ૫૦
 કુટુંબ કૃપા વતસલ થવું, સ્વામિ વતસલ જોય;
 તાત દેશ સેવા પછી, અધિકી સત્તા હોય. ૫૧
 જે જે સ્થાને યોગ્ય તે, નર શોભે તે સ્થાન;
 સ્થાન ભ્રષ્ટ શોભે નહિ, દહીએ અધિકું માન. ૫૨
 દંત કેશ નળ કે નરો, સ્વ સ્થાનેજ સોડાય;
 અલગ ઉચ સ્થાને ધરો, પણ પદભ્રષ્ટ જણાય. ૫૩

સાર યોજથી સોંપીયે, અધિકાર અનુસાર; ૫૪
 ઉમંગે આગળ પડી, શોભાવે વ્યવહાર; ૫૫
 નેત્ર દોષે દેખીયે, વિપરીત આભાસ; ૫૬
 નિર્મળ નેત્રે નિરખતા, યથા તથ્ય પ્રકાશ; ૫૭
 સુણેલ ખોટું સો વસા, દીઠેલ વસવા વીશ; ૫૮
 એક તરફી આધાર વિણ, શી શિક્ષા શી રીત; ૫૯
 સાઠ વરસ શ્રવણ કર્યું, આગ્યું ન આતમ જ્ઞાન; ૬૦
 કહેણી રહેણી લિખતા, તે ઠગ ખગ સમાન; ૬૧
 દયા દાને દંભી નહિ, કહેણી રહેણી એક; ૬૨
 વરતે સરલ સ્વભાવથી, જ્ઞાન વિજ્ઞાન વિવેક; ૬૩
 લિંગ લેહમાં આંતરે, એ તો બાહ્યાચાર; ૬૪
 અભ્યંતર સમ અંત લગી, એજ ખરો ઉદ્ધાર; ૬૫
 ઇન્દ્રિય વશ વરતાય તો, બને શત્રુ મહાન; ૬૬
 વશ વરતાવ્યે ખંતથી, તો તે મિત્ર સમાન; ૬૭
 દયા શીલ સંતોષ ને, નિતિ નિયુણ નર જોડ; ૬૮
 શોભા પામે સર્વથા, સદ્ગતિ પામે તેડ; ૬૯
 ઉલટા ગુણ હોય એ થકી, ભરે ભૂમિ પર ભાર; ૭૦
 આ ભવ અપકિર્તિ લહે, પર ભવ દુઃખ અપાર; ૭૧

કુચુર કુદેવ કુધર્મનો,
 સુચુર સુદેવ સુધર્મમાં,
 પાપ સ્થાન સેવ્યાં સહુ,
 નવ તત્વ નવિ ઓળખ્યાં,
 લક્ષ ચોરાસી જીવની,
 વિવિધ વેર વસાવીયાં,
 કાયા કંચન કામની,
 મહીરા સમ સંસારીને,
 કાયા કંચન કામની,
 તે તજવાથી સહજમાં,
 કાયા કંચન કામની,
 બાહ્ય અભ્યંતર ત્યાગી તે,
 નારી નરકનું બારણું,
 સતિ શિરોમણિ થઈ ઘણી,
 ચયું થાય છે ને થશે,
 તેને તે શો જોરતો,
 ભુતકાળમાં ભોગવે,
 ભવિષ્યમાં ભય નવિ રહે,
 કર્યો ભરોસો ખાસ;
 રાખ્યું દીલ ઉઠાસ. ૬૩
 નિશ્ચય રહી નચિંત;
 ખટ દ્રવ્ય ખચીત. ૬૪
 પડી નહિ પિછાન;
 રહી અંત અજ્ઞાન. ૬૫
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 કરે ખડું જોલાન. ૬૬
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 ઉપજે આતમ જ્ઞાન. ૬૭
 મહા મોહનાં સ્થાન;
 મહા ભોગ્ય ભગવાન. ૬૮
 એ એકાંત ન હોય;
 ગઈ મુક્તિએ જોય. ૬૯
 ઉદય કર્મ આધાર;
 અચળ નિયમ નિર્ધાર. ૭૦
 વર્તમાન સમભાવ;
 એવો કર્મ પ્રભાવ. ૭૧

વિચારપુર્વક જે રસે,	વરતન કોય વિરૂદ્ધ;
કર્મ બંધાયે તે રસે,	લોગવવાં આણી શુદ્ધ. ૭૨
અનળુતાં સંલેગમાં,	થયું વરતન વિરૂદ્ધ;
પસ્તાવાથી પતી રહે,	કહ્યું વિતરાગી શુદ્ધ. ૭૩
જળ ભૂમિ એકજ છતાં,	સ્વભાવને અનુસાર;
દિલ્લિજ એક રસનાં નહિ,	પાત્ર અપાત્ર વિચાર. ૭૪
વાણી શ્રી વિતરાગની,	અવિરૂદ્ધ શુદ્ધ આચાર;
યાત્રતા લેદે મત પડી,	પરવર્યા ગચ્છ અપાર. ૭૫
ગચ્છ ગચ્છાંતર મમતમાં,	મૂઢી મારગ મૂળ;
રાગ દ્રેષ્ટ રમંખાણમાં,	કરી કરણી પ્રતિકૂળ. ૭૬
ગચ્છ ગતાંતર મોહને,	તણ સણ સમભાવ;
મૂળ માર્ગ આરાધવો,	એજ મોક્ષનો દાવ. ૭૭
ગચ્છ કદાચહ કરી પરા,	ધરો સનાતન ધર્મ;
બંધ શ્રદ્ધા હઠવાદથી,	બંધાયે છે કર્મ. ૭૮
જેન ધર્મ જાણ્યો કહે,	મમતામાં સુંઝાય;
મે જાણ્યામાં માલ શો?	મૂળગી સુડી જાય. ૭૯
એકજ મૂળથી ઉપજ્યાં,	હાળાં હાળી અનેક;
થક જોશો તો એક છે,	વીર પ્રભુથી નેક. ૮૦

પર્યુસણનાં પર્વ તે, નિવૃત્તિ નિધાન;
 એ અવસર પ્રવૃત્તિને, દેવું ન ઘટે સ્થાન. ૮૧
 વેર વિરોધથી વીરમી, મૈત્રી લાવનો દાવ;
 પડી અવળીએ આતમા, ખુએ પર્વનો લાવ. ૮૨
 સ્થાનક સ્થાન નિવૃત્તિનું, ધરવાને શુભ દ્યાન;
 કષાય વિકથા ત્યાં નહિ, થવા નાખવું લાન. ૮૩
 તણ દોષ નિર્દોષ થવા, પર્વ આલોચણ આજ;
 ખાનપાન પટ ભુષણે, નાર્યો બુઝો સમાજ. ૮૪
 દેખા દેખી રૂઢીયો, ગૃહીએ જે વિપરીત;
 યુષ્મં પર્વ અધિરાજનો, મળે ન લાભ ખચીત. ૮૫
 પ્રતિક્રમણના હેતુઓ, સમજણથી સચવાય;
 પુર્વ દોષ હરે જઈ, આશ્રવ ઓછો થાય. ૮૬
 સંવત્સરની આખરે, ભેવું જમા ઉધાર;
 સરવૈયું સંભાળીને, મુધારવો વ્યવહાર. ૮૭
 યતિ ધર્મોદય અંતરે, પડે પ્રતિભા બહાર;
 વચ્ચનો તે વિતરાગનાં, ઉતારે લવ પાર. ૮૮
 ધર્મોદય અંતર નહિ, બોધે બોધ વિશેષ;
 તે વંતાના વચનથી, ટળે ન આત્મ કલેષ. ૮૯

પ્રતિગિર્જા પડી હૃદયમાં, પ્રસરે રંગ પ્રદેશ;
 તોજ શ્રવણ સાક્ષ્યતા, નહિ તો લાલ ન લેશ. ૯૦
 ચિત્ત શાન્તિ આતુરતા, વક્તા પ્રત્યે ભાવ;
 આતા હોય એ લક્ષણે, લહે શ્રવણનો ભાવ. ૯૧
 ચિત્ત શાન્તિ રૂચી હૃદયમાં, સિદ્ધાંત સુણવા ભાવ;
 મનન કરીને આચરે, તોજ શ્રવણનો ભાવ. ૯૨
 ચિત્ત ચંચળ રૂચી નહિ, અંતર રહે અભાવ;
 શ્રવણ કરી શું મેળવે, મનુષ્યપણનો ભાવ. ૯૩
 લખ્યું વદ્યું વાંચ્યું સુણ્યું, સફળ વરતને થાય;
 વિના એકડે શુન્યની, કિંમત કેમ ગણાય? ૯૪
 લખ્યું વદ્યું વાંચ્યું સુણ્યું, સફળ વરતને થાય;
 પુષ્પચંદ્ર વરતન વિના, મિથ્યા મહેનત જાય. ૯૫

દોહરો.

આત્મા મુનિ ભક્તિ શશિ, વિજ્યા દશમી નેક;
 પુષ્પ ગ્રંથ પૂર્ણ થયો, પશુ સંશ્લેષે છેક.

શ્રી વીર વિહરમાન ભગવાનને નમસ્કાર

મનહર છંદ.

દીર	બુગમંદીર,	ખાહું સુખાહું સુખત,
વયંમ	રીખવાનંદ,	પ્રભુ ખ્યારા બાણીએ.
નંત	વીરજનાથ,	સુરને વિશાળ પ્રભુ.
જધર	ચંદ્રાનન,	ચંદ્રખાહું બાણીએ.
યંગદેવ	હંશ્વર,	નેમ નેમેશ્વર સ્વામી,
ર સેન	મહાશંકર,	પ્રભુજી પ્રમાણીએ.
ચવંતા	દેવજશ,	વીરમા અજીત વીર્ય,
વી દેહ	ક્ષેત્ર વિષે,	વાંડું ગુણુ ખાણીએ.

શ્રી વંતમાન ચોવીસીને નમસ્કાર

મનહર છંદ.

અવ અજીત અને,	સંલવ અલીતંદન,
મતિ પદમપ્રભ,	સુપારથ સ્વામી છે.
દ્રપલ શ્રી સુવિધિ,	શીતળ ને અંશનાથ,
સુ પુજ્ય શ્રી વિમળ,	શીવગત ગામી છે.

અનંત ધરમ શાન્તિ, કુંથુ અંર મલિનાથ,
 શ્રી મુનિસુવૃત્ત સ્વામી, અચલ આરામી છે.
 તમી નેમ પાર્શ્વનાથ, ચોવીસમા વર્ધમાન,
 ત્રીકરણ શુદ્ધે વાંડું, એ અંતર જામી છે.

પડિકમાણુ વિષે સમ્રાથ.

(જાય છે જગત ચાલ્યું—એ રાગ)

પડિકમાણું કરીને રે હું મારી માણું (એ ટેક)
 શ્રી શ્રી મંદીર સ્વામી, આપ છો અંતર જામી,
 વાડું છું હું શીર નામી રે, મંદીરસ્વામી—પડિકમાણું કરીને રે
 સામાયક શુદ્ધ કરી, સમભાવ ચિત્તે ધરી,
 નિર્જરા નિરજરી રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 ચોવીસથો સ્તત્તી કરી, વંદણા ભાવથી ભરી,
 સમકીર્ત શુદ્ધ ધરી રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 ખાર વૃત્ત તણા દોષ, અજોબ્યા મેં નિરદોષ,
 અતિ કરી અદ્વિગોષ રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે
 અઠારે પાપનાં સ્થાન, તેનું પણ થયું ભાન,
 રખડાવે છે નિદાન રે, મંદીર સ્વામી—પડિકમાણું રે

મિથ્યાત્વને પરં કરી, જાણ્યા જૂના આઠે અરી,
 સુ સરણા ચાર ધરી રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૫
 ચઉદ્ધ સ્થાનકે જીવ, વિરાધું છું હું સદૈવ,
 તોજી લાન જીવા જીવ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૬
 સમણ સુત્ર વિચાર્યું, ધાર્યા જેવું તે મેં ધાર્યું,
 છાંડ્યા જેવાને નકાર્યું રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૭
 અરિહંત સિદ્ધ સંત, ગુરૂ આદિ ભગવંત,
 સ્થમાળ્યા ધરીને ખંત રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૮
 જીજી જીવ તણા જથ્થા, હુણ્યા હુણ્યા મેં વૃથા,
 માફ માગી છે સર્વથારે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૯
 ચર્મ ધ્યાન ધર્યું ચિત્ત, લાગી ઠાઉસગે પ્રીત,
 રાકી ઈંદ્રિયો અજીત રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૧૦
 આહાર સંસાર અનાદી, અહો રાત્રીએ સવાદી;
 ચચળાણે મરીયાદી રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૧૧
 સમે સમે જાંધું પાપ, જાણી દેખી રહ્યા આપ;
 માફ કરો જપું જાપ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૧૨
 આવશ્યક અહોનિશ, દરજ શ્રાવક શિષ્ય;
 ઉપદેશ્યું જગદીશ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમણ. ૧૩

આજ સુધી દોષ થયા, શુભ ભાવે આજોવીયા;
 ક્ષમા માગું હોય રહ્યા રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમાણું. ૧૪
 હવે નહિ થવા દોષ, ચિત્તમાં રાખું અંકોષ;
 યુષ્પચંદને સંતોષ રે, મંદીર સ્વામી-પડીકમાણું. ૧૫

અંત સમયની ક્ષમાપના.

જાય છે જગત ચાલ્યું-એ રાગ.

જગતના જીવ પાસેરે,	હું માણી માગું-(એ ટેક.)	
ત્રસને સ્થાવર જીવ,	હણા હણાવ્યા સદૈવ;	
કંઈકને પડાવી રીવ રે,	હું માણી માગું.	૧
અનાદિ ભવ આસરે,	સંજંધે જોડાઈ ખરે;	
વેર તો વસાવ્યાં અરેરે,	હું માણી માગું.	૨
ચોનિ જે લક્ષ ચોરાસી,	અવતરીને અલ્યાસી;	
નારકીયી ગયો ત્રાશીરે,	હું માણી માગું.	૩
વિકલ ઈંદ્રિય સુધી,	કીધાં પાપ વિશુ બુદ્ધિ;	
આલોચણથી વિશુદ્ધિ રે,	હું માણી માગું.	૪
તિર્થંચ પંચેંદ્રિયણે,	સમગ્ર અમગ્ર હણે;	
કીધી હિંસા કૂરપણે રે,	હું માણી માગું.	

મનુષ્ય જનમે આજ,	મળી ધરમની સાજ;	
સત્ય જે જૈની સમાજરે,	હું માપી માણું.	
વર્ષ જેંતાલીસ સુધી,	કેળવી જાણોની બુદ્ધિ;	
નીતિ સાથે જ્ઞાન વૃદ્ધિરે,	હું માપી માણું.	
ડર રાખી જગદીશ,	કરી શિક્ષા તજી રીસ;	૮
માફ કરો સહુ શિષ્ય રે,	હું માપી માણું.	
સગાં સંજંધી સંઘાતે,	મત ભેદ વાત વાતે;	૯
વિરોધ પાડ્યા મેં જાતેરે,	હું માપી માણું.	
સંજંધમાં આવ્યા હોય,	અન્ય જનો હુલ્યા હોય;	૧૦
ક્ષમા સહુ કરો તોય રે,	હું માપી માણું.	
ગરબ ગરબાંતર પ્રત્યે,	વસ્ત્રો વિરૂદ્ધ મતે;	૧૧
જાણી મારા દોષ સત્ય રે,	હું માપી માણું.	
અશુભ આશ્રવ સ્થાન,	સેવ્યા જે જે તજી ભાન;	૧૨
આલોચણને નિદાન રે,	હું માપી માણું.	
આયુષ્યના અંત સુધી,	કરી કરમની વૃદ્ધિ;	૧૩
કરવા તેની વિશુદ્ધિ રે,	હું માપી માણું.	
દરદ અસાધ્ય જાણી,	કરવા છેલ્લી કમાણી;	૧૪
શુદ્ધ ભાવદીપ આણી રે,	હું માપી માણું.	

સકામ મરણ સારું, સમાધિ બોધ વિચારું; ૧૫
 શુભ ગતિનું જે બારું રે, હું મારી માથું.
 ભવો ભવ તણા દોષ, આલોચ્યા તજીને રોષ,
 પુપ્પચંદને સંતોષ રે, હું મારી માથું. ૧૬

દોહરો.

ઉદય વેદની કર્મનો, વેદો એ સમભાવ;
 થઈ નિર્જરા આ સમે, આયુષ્ય કર્મ પ્રભાવ. ૧૭

શ્રી મહાવીર પ્રભુની આરતી.

શ્રી સિદ્ધારથ નંદન, પ્રભુશ્રી ત્રીશક્તાના જાયા,
 પ્રભુ શ્રી ત્રીશક્તાના જાયા,
 શુણ નિપત્ત દીધું નામ પ્રભુનું,

(૨) વર્દમાન સુખદાયક.

જય જય જય મહાવીર. (૧)
 બાળપણે ગિરિરાજ ચળાવી, સુરપતિ સમજાયા,
 પ્રભુ સુરપતિ સમજાયા,
 અતુલ્ય બળ પ્રભુ જન્મથી પાસ્યા,

(૨) કંચન વર કાયા,
જય જય જય મહાવીર. (૨)

સિંહ લંછન સુકોમળ અંગો, હાંસે હુલરાયા,
પ્રભુ હાંસે હુલરાયા,
દેવ દેવી દરશણથી રીઝી,
(૨) બહુ વિધિ ગુણ ગાયા,
જય જય જય મહાવીર. (૨)

ગાળ કોડામાં દેવ હરાવી, ભૂતળમાં આપે,
પ્રભુ ભૂતળમાં આપે,
ઉદ્ધ વચન પ્રમાણ કરી દેવ,
(૨) મહાવીર પદ આપે,
જય જય જય મહાવીર.

ત્રીશંવરસ ગૃહવાસ વિલસતાં, અલિગ્રહ ઉર આવે,
પ્રભુ અલિગ્રહ ઉર આવે,
અવતરસ દધ દાન પ્રભુજી,

(૨) સંયમ ચિત્ત લાવે.

જય જય જય મહાવીર. (૫)

અડગ ધ્યાનથી ઉચ્ચ તપસ્યા, વરસ ધાર વિચરે,

પ્રભુજી વરસ ધાર વિચરે,

કર્મ અરિને જીતી,

(૨) દેવળ જ્ઞાન વરે.

જય જય જય મહાવીર. (૬)

કૌંડાલિક સદુ દેવ મળીને, કલ્યાણીક ઉજવે,

પ્રભુનું કલ્યાણીક ઉજવે,

નાદ દશ દિશે,

(૨) વધામણું સૂચવે.

જય જય જય મહાવીર. (૭)

તે જડીત સિંહાસન, આમ છત્ર ધારી,

પ્રભુજી આમ છત્ર ધારી,

અતિશયની એ શોભા,

(૨) પ્રભુતો નિશ્ચય અણુગારી.

જય જય જય મહાવીર.

ત્રિગરા ગઢની રચના, સમવસરણ શોભે,

પ્રભુજી સમવસરણ શોભે,

અતિશય પ્રભુતા દેખી,

(૨) ચિત્ત દર્શન લોભે.

જય જય જય મહાવીર.

અમિય રસ વાણીથી, ઉપદેશ પ્રભુ આપે,

ઉપદેશ પ્રભુ આપે,

સવિને પાત્ર પ્રમાણે,

(૨) ચારિત્રમાં સ્થાપે.

જય જય જય મહાવીર.

ચતુર્વિધ તિર્થ સ્થાપીને, અહિંસા વર્તાવે,

પ્રભુજી અહિંસા વર્તાવે,

૩૫૨

લેઈ

ટાળીને,

(૨)

સમભાવ

સમજાવે,

જય જય જય મહાવીર. (૧૧)

સિદ્ધાંત પ્રકાશી, આત્મજ્ઞાન આપે,

પ્રભુજી આત્મ જ્ઞાન આપે,

અનુભવતાં ભવિજન,

(૨)

કર્મેની

કાપે.

જય જય જય મહાવીર. (૧૨)

ધર ગૌતમ પ્રબદામાં ઝીલે, ઉપદેશ વાણી,

પ્રભુની ઉપદેશ વાણી,

સૌની ભાષામાં સમજે,

(૨) દેવ મનુષ્ય પ્રાણી.

જય જય જય મહાવીર. (૧૩)

૨ વર્ષની વયમાં પાળી, પ્રવજ્યાં જહેંતાલી,

પાળી પ્રવજ્યાં જહેંતાલી,

મોક્ષ મંદીરે પહોંચ્યા,
 (૨) દિન શુભ દીવાળી,
 જય જય જય મહાવીર. (૧)
 વીર પ્રભુની આરતી આ, જે ભાવે ગાશે,
 ભવિ જે ભાવે ગાશે,
 યુધ્ધ પ્રભુ પરતાપે,
 (૨) સુખ સંપત્તિ થાશે,
 જય જય જય મહાવીર. (૧)



॥ अथ ऋजनावली लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध साधु नमुं, निचो
शिस निवाय ॥ ऋजन कथुं मै प्रेमसुं,
नुंवा देउं वणाय ॥ १ ॥ पंचपद ध्याउं
सदा, गुणसहु कह्या न जाय ॥ थोडासा
प्रगट करू, ते सुणजो चितलाय ॥ २ ॥

॥ अथ चोवीस जिन स्तवन लिख्यते ॥

मतझुलो हरीका नाम, जपो तुम ईश्व-
रकी माला ॥ एदेसी ॥ तुम जपो प्रभुका
नाम, जप्यासे कटै कर्मजाला ॥ ए आं. ॥
आदि अजित संभव अग्निनंदन, सुमति
सुमत धारा ॥ कोइ पदम सुपार्थ, चन्द्र

(२)

सुबोध, जिन, सितल मुखकारा ॥ सी. ॥
जिनंदजी, ॥ सी० ॥ तु० ॥ १ ॥
श्रेयांस बासपूज्य, विमलही कृपाला ॥
कोइ अनंत धर्म सान्ती कुंथु अरी,
स्याम मेरे दयाला ॥ स्याम. ॥ जि. ॥
॥ स्याम. ॥ तु. ॥ २ ॥ मल्ली सुनी-
सुव्रत नमिजिन, रिष्टनेम निहाला ॥ पार्श्व
प्रभु और वृद्धमानकुं, ध्याय मनां महाला
॥ ध्याय. ॥ जि. ॥ तु. ॥ ३ ॥ चोवीस जि-
नको नित्य जेसे, होगा निसतारा ॥
कोइ लिखमो पैय जरणे करजोडी, चाकर
चर्णारा ॥ चा. ॥ जि. ॥ चा ॥ तु. ॥ ४ ॥ इति ॥
॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥ राग प्रभाती ॥

जोर जयो अब जाग प्राणी, आदि
 जिनंदजीको रटन करो ॥ आदि नाम
 आदेस्वर दाता, रिखव जिनंदन नाम
 खरो ॥ जो. ॥ मरुदेव माय नाचनों नंदन;
 तिण कूखे अवतार धरो ॥ जो. ॥ इखु-
 वांग भूमि नगर प्रभुको, देश कोशलको
 राज करो ॥ जो. ॥ चैत बदि एकमके
 दिवसे, जन्म थयो प्रभुजी केरो ॥ जो. ॥
 देव इन्द्र सव प्रभुजीकेरा, मोछव कर दिल
 हर्ख धरयो ॥ जो. ॥ देह कंचन वर्णी
 प्रभुजीकी, पांचसे धनुष सिध्यात कह्यो
 ॥ जो. ॥ चैत बदि अष्टमीके दिवसे, प्र-
 भुजी दिल बेराग धरो ॥ जो. ॥ चार

सहस्र परवार सहित प्रभु, संयम साहिब
 आप वरयो ॥ जो. ॥ प्रथम अहार श्रे-
 यांस घर लिनो, ते धन सफल जमार
 करयो ॥ जो. ॥ आदिकाढी प्रभु धन-
 मेरे स्वामी, नव्य जिवांरो निस्तार करयो
 ॥ जो. ॥ माता मुक्त पिता देवगतीमें,
 धन २ बां धन स्वाम जणयो ॥ जो. ॥
 फागण बदि एकमके दिवसे सर्व ग्यान
 जिनराज वरयो ॥ जो. ॥ तीन लक्ष अर्जा
 गुणाखानी, नित उठ ध्यान सुजान धरो
 ॥ जो. ॥ सहस्र चोरासी संत सुग्यानी,
 दर्श प्रभुजीको नित्य वरो ॥ जो. ॥ ग-
 णधर चोरासी प्रभुजीके आगल, मुक्तपु-

रीमें डेरो करयो ॥ जो. ॥ लिखमो सु-
 राणो नित्य रटे प्रभु, सत्य गुरुके ए सण
 लियो ॥ जो. ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिनस्तवन ॥ राग टप्पो ॥

विजे स्वामकुं हमारी बंदनारे ॥ अ-
 जितनाथकुं हमारी बंदनारे ॥ ए आंकणी ॥
 भवदुख भंजन स्याम निरंजन तोडत
 कर्मनां फन्दनारे ॥ बी. ॥ नगरी अयोध्या
 पीता जितशत्रु, जन्में आप जिनंदनारे
 ॥ बी. ॥ मात विजयादेनै ऊदरे उपना, प्र-
 भुजी आप दिनंदनारे ॥ बी. ॥ नक्षत्र
 रोहणी रास वृषभकी, सोवर्णा बर्णे अंगनारे
 ॥ बी. ॥ बहोतर वर्ष लख आउखो पायो,

जिन घनस्यामसुरिंदनारें ॥ बी. ॥ संसार
 सागर असार जानके, लिनो संयम सुजं
 मनारे ॥ बी. ॥ माहा बदि नवमी दिवस
 जलेरो, दिक्का ली जिनंदनारे ॥ बी. ॥ सप्त
 बणके निचे बैठा, ग्यान पायो जिन पं-
 चमारे ॥ बी. ॥ गणधर निनाणु एक लख
 साधु, तीन लख आर्जा बंदनारे ॥ बी. ॥
 पीता ईशानकल्पनी मांही, माता मुक्त
 सुजमनारे ॥ बी. ॥ लिखमो सुराणो
 ध्यान धरे प्रभु, निचो सीस निवायतारे
 ॥ बी. ॥ इति ॥

॥ अथ संचवाजिन स्तवन ॥ राग खंजाच ॥
 बतादे सखी कोन गली गयो स्याम

॥ ए देशी ॥ सुगण जिन तजिो जिने-
 स्वर स्याम ॥ ए आंकणी ॥ मिंगसर सुक
 जन्म पडवाने, सावछी नगरी गांव ॥ सु. ॥
 पीता जितारथ माता सेन्याजन, उन्हीको
 नंदलाल ॥ सु. ॥ साठ पूर्व लख आउखो
 जिनको, संजव थाहरो नाम ॥ सु. ॥ पर-
 णोडा परवार सहस्रो प्रभु, मेरो तोय चर्णा
 चीत ध्याम ॥ सु. ॥ दिक्ता असार संसार
 जाणली, जगको छोडयो कांम ॥ सु. ॥
 एकसो दोय गणधर प्रभु आगल, सबही
 गुणको ठाम ॥ सु. ॥ लाख पूर्व लग सं-
 यम पालो, तप बारे सिधान ॥ सु. ॥
 पन्द्रह सहस केवली प्रभु आगल, पांचु

ग्यान निधान ॥ सु. ॥ केवल पाम्यो प्रभु
 अतिय हर्ख मोय, साल वृक्ष निचे ग्यान
 ॥ सु. ॥ मात पीता प्रभु मोक्ष सिधाये
 तोरा, धन उनको नाम ॥ सु. ॥ लि-
 खमो जजनकरे प्रभु तोरा, राजगढे
 गांम ॥ सु. ॥ प्रभु जजनकर अतिय ह-
 र्खमु, मनवंगित हो काम ॥ सु. ॥ असाढ
 सुकल बारसके दिन, प्रभुगुण किनो ग्राम
 ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ अजिनंद जिन स्तवन ॥
 रामचंद्र जब युं उठ बोले, डिगो मो-
 रचो हारो ॥ एदेशी ॥ प्रभुका दर्स लगे
 मोय प्यारो ॥ एआंकणी ॥ चवन वैशाख

सुकृ चोथने, अयोध्या नगर मंजारो ॥
 कर जोडीके बीनवुं प्रभु, मे चाकर चर्णी-
 रो ॥ प्रभु. ॥ पीता जितसंवर घरमोछव,
 प्रभुजी लियो अवतारो ॥ मात सिद्धारथ
 कीय कुखमे, अंजेनंद कुमारो ॥ प्र. ॥ नक्षत्र
 पुनर्वस रास मिथुनकी, लंछन बंदर वारो
 ॥ पचास पूर्व लख आउखो जिनको, बी-
 नतडी अवधारो ॥ प्र. ॥ राज अवसथा
 मुख जोगवे, सहस्रो जेना परवारो, संसार
 नागर असार जानके, लिनो संयम जारो
 । प्र. ॥ माघ सुदि वारसने दिक्षा, अ-
 योध्या नगर मंजारो ॥ देव इंद्र सब मोहो-
 ठव करते, धन २ थाहरो अवतारो

॥ प्र. ॥ वृद्ध प्रवालके निचे बेठा, पांचू
 ग्यान अधारो ॥ इणखव ओर परजवामे,
 सणो चाहुं थाहरो ॥ प्र. ॥ एक लाख
 पूर्व लग संयम, चोथा जिनजी पाल्यो ॥
 चोथा जिनका गुण गांवता, हर्षत हियो
 हमारो ॥ प्र. ॥ येकसो ईग्यारे गणधर
 बंदु, बारम्बार हजारो ॥ संत तीन लाख
 प्रभुजी आगल, गुणकी खान भंडारो
 ॥ प्र. ॥ सासण बडो मेरे प्रभुजीको, ह-
 रित हियो हमारो ॥ मोक्ष पहुंचे जग
 अलवेश्वर, तेतीस दिन संधारो ॥ प्र. ॥
 नामे लिखमो ओसमे, में चाकर चरणारो ॥
 हाथजोडके करुं विनती, बारम्बार ह-

जारो ॥ प्रभु. ॥ असाढ सुळ तेरसके
दिवसे, हुलसत हियो हमारो ॥ नोंहरे वेठा
थका, किनो मंगलाचारो ॥ प्रभु. ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति जिन स्तवन ॥

॥ राग स्याम कल्याण ॥

सुरत परवारी जाउ सुमती जिनंदा
॥ ए टेर ॥ मात सुमंगला पिता मेघराया,
जिन जन्म्याहै नारिंदा ॥ सु. ॥ वैशाख
सुळ अष्टमीने जन्म्या, मोछ्खी किये देव-
इंदा ॥ सु. ॥ रासी सिंघ केरो लंठन, राता
बर्ण मुनिंदा ॥ सु. ॥ कंचन नगरी सुंदर
दिपे अति, गोडी पंचम जिनंदा ॥ सु. ॥
वैशाख सुळ नवमीने दिक्का ली, सेवकरे

सब बंदा ॥ सु. ॥ वृद्ध प्रिठांगुनाणा निचे
 केवल, हर्ख करतहै गणीदा ॥ सु. ॥ पांच
 लख तीस सहस्र आजीते, लख बीस स-
 हस्र संता ॥ सु. ॥ चैत्र नवमी शुक्ल मोक्ष
 सिधाये, तीन लोक हर्खदा ॥ सु. ॥ माता
 मोक्ष पिता ईशाने, गुण गावे सब बंदा
 ॥ सु. ॥ चालीस पुर्व लख, आउखो जि-
 नको, महा मोटा सुरिदा ॥ सु. ॥ लि-
 खमो कर जोडीने विनवे, बहोत हर्ख
 मुखकंदा ॥ सु. ॥ तोरा भजन करणें सेती
 प्रभु, हो शिवपुरका वासिदा ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ पद्मजिन स्तवन ॥

ठठा पद्म जनेस्वरास कोई, कोसंवी

नगरी गांव ॥ अछा म्हारा प्रभुजी, को-
 संबी, कोसंबी. ॥ पुत्र घररायको ॥ में
 सीस निवाउं, हारे हां जलाजी प्रभु सीस
 निवाउं, समकित द्रढ करजो माहरी
 ॥ ए आंकणी ॥ मात सुचिमा चीत्र बेस
 कोई, कन्या जिनकी रास ॥ अछा,
 कन्या. ॥ रातो रंग अंगको ॥ में० ॥
 कातिक मुदि बारस नेस कोई, जन्म,
 अछा, जन्म लियो जिनराय ॥ बहु जीव
 तयारबा ॥ में० ॥ मोठव करवा कराणैस
 कोई, आये अछा आये इंद्र देव ॥ हख
 बहोतो कियो ॥ में. ॥ कातिक बदि तेर-
 सनेस कोई, दिहा, अछा दिहाली जि-

नराज ॥ कर्म फंद तोडवा ॥ में. ॥ सोम-
 देव घर पारणोस प्रजु किनो, अछा किनो
 स्याम सुग्यान ॥ अहार कियो खीरको
 ॥ में. ॥ संयम साथे मुनिस्वरास कोई,
 सहस्र, अछा सहस्र जना परवार ॥ दिहा
 उन आदरी ॥ में. ॥ गत्रा वृक्षके नियचे
 कोई, केवल, अछा, केवल पायो जिन-
 राज ॥ चैत्र शुक्ल उतरे ॥ में. ॥ सठोत्र
 सौगणी जिनवर आगेस कोई, सोहत,
 अछा, सोहत हे महाराय ॥ सिवपुर पा-
 मिया ॥ में. ॥ तीन लाख तीस सहेस संत
 कोई, हर्दम, अछ, हर्दम खातिर वास ॥
 ध्यान तुमरो घरे ॥ में. ॥ चौ लाख बीस

सहेस साधवी, प्रगट, अछा, प्रगट तपे
 सुग्यान ॥ सिंघ जुं गुंजता ॥ में. ॥ सिद्ध
 गमण परवार आठसे. त्रण, अछा, त्रण
 मुनिस्वर साथ ॥ अंतर निज आपका
 ॥ में. ॥ मिसगर कृष्ण ईग्यारसनेस कोई
 मोक्ष, अछा, मोक्ष पहुंचे जिनराय ॥ नवी
 समजायके ॥ में. ॥ इशान पिता माता
 मोक्षहीस कोई, वंश, अछा, वंश ईद्वान्गे
 नाथ ॥ वन्दु कर जोडने ॥ में. ॥ तीस
 लाख पूर्व आउखोस कांई धनधन, अछा,
 धनधन महा धनस्याम ॥ वंदु जिनरायने
 ॥ में. ॥ केवल नाणी वारा सहस कोई
 गिणाती, अछा, गिणातयिसे गिणाय ॥

जिव बहू तारीया ॥ में. ॥ एक लख पूर्व
 सोलेहीस कोई, दिक्का, अच्चा, दिक्का ली
 जिनराय ॥ पैय लिखमों चणे ॥ में. ॥
 जात सुराणो असबंस कोई, तोय, अच्चा,
 तोय चर्णा चित ध्याम ॥ रुटुं चित लाय-
 के ॥ में. ॥ सावण सुळ पडवायनेस कोई,
 घरे, अच्चा, घर बेठे गुणग्राम ॥ हर्ख चित
 मायके ॥ में. ॥ इति ॥

॥ अथ सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥
 मन बिंदराबिंद चाल बसोरे, मानतो
 घटो चाहे लोग हंसोरे ॥ ए देशी ॥ मन
 सुपार्श्वनाथ नजोरे, हर्ख धरो मनरलीयां
 करोरे ॥ ए आंकणी ॥ जेष्ट शुक्ल वारस-

न जन्म्या, देव इंद्र मोछवजो कियोरे
 ॥ मन. ॥ देवी इंद्राणी गावे बजावे, हर्षकरे
 मन चाव घणोरे ॥ मन. ॥ पिता प्रति-
 ष्ठाय घरमोछव प्रश्वी, रयरंजन मात
 जणयोरे ॥ मन. ॥ बणारसी नगरीमें मं-
 गल गावत, नरनारी सब हर्ष करयोरे
 ॥ मन. ॥ नक्षत्र विशाखा स्वस्ती लंछन,
 अंग स्वर्णके रंग थयोरे ॥ मन. ॥ दो-
 यसो धनुष काया प्रभुजीकी, बीस पुर्व
 लख आउखोरे ॥ मन. ॥ परणोडा पर-
 वार सहस्रो प्रभु, राज करयो बहु सुख
 दियोरे ॥ मन. ॥ संसार सागर असार
 जाणके, दिक्काली प्रभु हर्ष करारे ॥ मन. ॥

एक सहस्र मुनी साथ निकला, त्रण
 लख साधु ग्रंथ जणोरे ॥ मन. ॥ पीता
 गमन इशान देवता, माता मुक्तपुरी जो
 बरीरे ॥ मन. ॥ एक पूर्व लख दिहा
 पाली, आखिर सीवपुर डेरो करचोरे
 ॥ मन. ॥ लिखमो अर्जकरे करजोडी,
 नव नव सणीं चाहूं तोरोरे ॥ मन. ॥
 श्रावण शुक्ल छट दिवस, घर बेठे नजन
 करचोरे ॥ मन. ॥ इति ॥
 ॥ अथ चंद्रजिन स्तवन ॥ राग टुमरी ॥
 प्रभु गुण गाउंगा में जिनवर गुण
 गाउंगा ॥ गवि परवारी में चंद्र प्रभु ध्या-
 उंगा ॥ छवी परवारी ॥ ए आंकणी ॥

चैत्र कृष्ण पंचम चवन विमाना ॥
 ध्यान धरत मेंही हर्खाउंगा, मेही हर्खा-
 उंगा ॥ में प्रभु. ॥ पीता महासेन माता
 लहमणा ॥ जिनके चर्णाबीच, ससि नि-
 वाउंगा ॥ सीस. ॥ में. ॥ लंछन चंद्र वृ-
 श्चिक रासी ॥ स्वेतवर्णा, देखत हर्खाउंगा
 ॥ देखत. ॥ में प्रभु. ॥ काया धनुष प्रभु
 डोडसे कहिये ॥ हर्ख करी प्रभु तुम गुण
 गाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ दस लख
 पूर्व आउखो जिनको ॥ में तोय चर्णा
 बीच ध्यान लगाउंगा ॥ ध्यान. ॥ में प्रभु. ॥
 पोह कृष्ण तेरसनें दिक्का ॥ करजोडीके
 तुम पद गाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ मीष्ट

(२०)

प्रोजन प्रभु पारणो किनो ॥ सोमदत्त
कहे खरि बहराउंगा ॥ स्त्री ॥ में प्रभु ॥
फागुन कृष्ण सप्तम केवल ॥ मोछव करत
महाजन साहुंका ॥ महा ॥ में प्रभु ॥
नाग वृद्धके निचे केवल ॥ महासेन कहे
दर्शन पाउंगा ॥ द. ॥ में प्रभु ॥ गणधर
त्रण ओर नेवे कहिये ॥ संत अढी
लख नित्य उठ घ्याउंगा ॥ नित्य ॥
॥ में प्रभु ॥ अस्सी सहस्र त्रण लख
साधवी ॥ मन वच सुद्धकर सीस निवा
उंगा ॥ सी. ॥ में प्रभु ॥ जादव कृष्ण
सप्तम मोहे ॥ चन्द्र प्रभुके चर्णा चिं
लाउंगा ॥ चर्णा ॥ में प्रभु ॥ माता मोह

प्रीता गमन ईशाने ॥ हर्ष धरी प्रभु तुम
 पद पाउंगा ॥ तु. ॥ में प्रभु. ॥ डेढ पुर्व
 लख संयम पाल्यो ॥ सीद्ध थया प्रभु को
 मन घ्याउंगा ॥ को. ॥ में प्रभु. ॥ लिखमो
 पैय हर्ष घर गावे ॥ गुर पुज्य डालकुं
 सीस निवाउंगा ॥ सी. ॥ में प्रभु. ॥ इति ॥

॥ अथ सुबुधिजिन स्तवन ॥

सुबुधि जिनंदन सुबुधिके दाता ॥
 कुबुधिउवारण तुही विधाता ॥ ए आं-
 कणी ॥ सुबुधि जनेस्वर सुबुधिके बंदन,
 सुग्रीव राय तणो तुं नंदन ॥ लंछन म-
 गर रास जो धनकी, रामादे जो माता
 ॥ सु. ॥ दोय लक्ष पूर्व आउखो, स्वेत

वर्ण नगरी काकंदी ॥ मिगसर कृष्ण पं-
 चमीने जन्म्या, मंगल गावे राणी इंदकी
 ॥ घरररररर गर्जत बादल इंद्र मेह व-
 र्षाता ॥ सु. ॥ मिगसर कृष्ण छठने दिहा,
 सिवपूरकी बांदी पाबंदी ॥ कातिक सुक
 तीजने पाचुं, ग्यान थये जिनवरजी ॥
 फररररररर ध्वजा तीन लोक हर्षाता
 ॥ सु. ॥ गणधर अठ्यासी दोय लख साधु,
 तपे महा मुनीराई ॥ एक लख बीस स-
 हस्र आर्जा, बंदत हर्ष अथाई ॥ हररररररर
 हाथ जोडता निचो सीस निवाता ॥ सु. ॥
 चाद्रव सुक नवमीने मुक्ती, गये नवां जि-
 नराई ॥ संतकुमर देवी जो देवता, मात

पीता गति पाई ॥ हररररररर हर्ष करूं
 में मन वच सुद्ध गुण गाता ॥ सु. ॥ लि-
 खमो सुराणो ओसवंसमें, पूज्य चर्ण चि-
 तलाई ॥ जव जव में हुं सर्णा चाहूं अर्ज
 सुणो सुनीराई ॥ तन मन दिल और
 हुलसे हिवडो, घर बैठे गुण गाता ॥ सु. ॥
 श्रावण कृष्ण एकादसीके दिन, हर्ष हर्ष
 गुण गाई ॥ बादलकेरी गायो बेठा जिन
 चर्णा चितलाई ॥ सु. ॥ इति ॥

॥ अथ सीतलजीन स्तवन ॥

सीतलजिन सीतल थये प्रभु, में चाकर
 चर्णाकेरा ॥ ए आं. ॥ सोवण वणों स-
 रीर तुम्हारो, रूप अनुपम हे तेरा ॥ सी. ॥

जदिलपुर जोये नगर तुम्हारा, बालप-
 णाका हे डेरा ॥ सी. ॥ माघ कृष्ण द्वा-
 दसने जन्म्या, हर्ष करतहे वहोतेरा ॥ सी. ॥
 इंद्र देव आये जदिलपुरमें, मोठव करवाकुं
 तेरा ॥ सी. ॥ छपन कुंवारी मंगल गावे,
 हर्षतहे हिवडा मेरा ॥ सी. ॥ इति ॥

दसवां जिनंदजीसे प्रीति लगीहे, नित
 समस्यां सुख दायाजी ॥ ए. आ. ॥ जव-
 दधि तारण दुख निवारण जिनचर्णा
 वितलायाजी ॥ द. ॥ मात नंदापुत्रा
 भीता दिठरथ जन्म्या त्रीलोकी रायाजी
 ॥ द. ॥ बाजा अनेक रंगका बाजे हर्ष
 अंग नहीं मायाजी ॥ दस. ॥ रासी ध-

नकी श्रीवृद्ध लंछन नवे धनुषकी काया-
 जी ॥ द. ॥ संसार सागर असार जा-
 एके खोटी जानी जग मायाजी ॥ द. ॥
 माघ कृष्ण छठने दिहा असोक तरुलकी
 छायाजी ॥ द. ॥ करजोडीके करूं विनती
 सण तुम्हारी आयाजी ॥ द. ॥ गणधर
 बियासी एक लख साधु बिहार निर्वद
 गुण गायाजी ॥ द. ॥ एक लख खट स-
 हस्र आर्जा सबकुं सीस निवायाजी ॥ द. ॥
 पोष कृष्ण बिलवके निचे ग्यान पंचमा
 पायाजी ॥ द. ॥ माता पिता संतकुमर
 देवता सुर्ग सुखके माह्याजी ॥ द. ॥
 वैशाख कृष्ण दुजके दिवसे मोक्ष गये

जिनरायाजी ॥ द. ॥ लिखमो सुराणो
 ओस बंसमें जिन चर्णा चित लायाजी
 ॥ द. ॥ घर बेठे में प्रभु गुण गाया हर्ख
 अंग नहीं मायाजी ॥ द. ॥ आसोज कृष्ण
 दुजके दिवसे सितलना गुण गायाजी
 ॥ द. ॥ अरिहंत सिद्ध पुज्य सासणकुं
 बारंवार सीस निवायाजी ॥ द. ॥ इति ॥
 ॥ अथः श्रेयांसजिन स्तवन ॥ राग वसंत ॥
 श्रेयांस जनेस्वर जग परमेश्वर, वीणु
 रायरो नंदनोए ॥ श्रे. ॥ फागुण कृष्ण
 बारसकुं जन्म्या, उदरे तो विष्णवी राणीरे
 ए ॥ श्रे. ॥ चोसठ इंद्र और देव सबी
 मील, मेरुगिरीपे ले गयेए ॥ श्रे. ॥ मो-

छव कियो व्हां अतिय हर्खसुं, अनाद
 कालकी रीतियाए ॥ श्रे. ॥ छपनकुंवारी
 मंगल गावेहो, हर्खमनु देव इंदहीए ॥ श्रे. ॥
 सिंहपुर नगरमें जन्म प्रभुको, वंस ईकांकु
 अवतराए ॥ श्रे. ॥ श्रवण नक्षत्र प्रभुजी
 केरो, लंछन गेंडे वारोईए ॥ श्रे. ॥ वर्ण
 सोवर्णासो रूप अनंतो बलतो अनंत अ-
 थायोईए ॥ श्रे. ॥ अस्सी धनुष देह प्र-
 भुजीकी, राज करत जिनरायोए ॥ श्रे. ॥
 सुख संसारका असार जानके, आदरयो
 संयम सारोईए ॥ श्रे. ॥ सहस्र सूर संयम
 साथे लिना, फागुण अंधेर त्रयोदसीए
 ॥ श्रे. ॥ सतहतर गणधर संत चोरासी

सहस, अर्जा एक लख त्रण सहसए ॥ श्रे. ॥
 माघ अमावस केवल पायो प्रभु, तिहु वृ-
 क्कने हेठेइए ॥ श्रे. ॥ चोरासी लक्ष वर्षनी
 उमर, पाई श्रेयांस जनेस्वराए ॥ श्रे. ॥
 श्रावण तजि कृष्ण पक्षमें, मोक्ष गये जि-
 नरायाए ॥ श्रे. ॥ मात पीता संतकुमर
 जो कुमरी, देवगतीके माह्या जोए ॥ श्रे. ॥
 लिखमो सुराणो अस बंसमें, सर्ण लियो
 प्रभु थारोईए ॥ श्रे. ॥ आसोज कृष्ण
 चोथके दिवसे किनो मंगलचारोईए
 ॥ श्रे. ॥ इति ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवन ॥
 मित्र नहीं हंसो थारो ए सुंदर माहरी

॥ ए देशी ॥ नज वासुपुज्य निजरायो ए
 सुगण सखी ॥ नज. ॥ ए आंकणी ॥ ज-
 यवंती सुत वारमो जनेस्वर, तात वासपु-
 ज्य रायो ॥ चवदस फागुण कृष्णने जन्मा,
 त्रिलोकीरो रायो ए ॥ सु. ॥ न. ॥ चंपा
 नगरीको राय सुहामण, वारमोछे जिन-
 रायो ॥ इंद्र देव सब मोठव किनो, मंगल
 गावे नरनारोए ॥ सु. ॥ न. ॥ ठपन कुं-
 वारी मंगल गावे, माताके हर्ख अपारो ॥
 तात वासुपूज्य बाटत बघाइ, घरघर मंग-
 लचारोए ॥ सु. ॥ न. ॥ लंछन महिख देह
 राते रंग, रूप अनंता पिछानो ॥ सतर ध-
 नुषकी देहीजो उंची गुण अनंता जानोए

॥ सु. ॥ ज. ॥ लक्ष बहोतर वर्षकी आयु,
पाइये जिनरायो ॥ करजोडीके करुं जो
बिनती, हर्ष अंग नहीं मायोए ॥ सु. ॥
॥ ज. ॥ संसार सागर असार जानके,
आदरयो संयमसारो ॥ छवसो मनु जिन
साथ थयेहे, संयम ले प्रजु लारोए ॥ सु. ॥
॥ ज. ॥ माघ सुक्ल दुजके दिवसे, पाडल
वृद्ध निचे आये ॥ केवल पायो अतिय हर्ष
मोय, मोछव किये इंदरायोए ॥ सु. ॥
उणंतर गणधर जिनजी आगे, बहोतर
सहंस मुनीरायो ॥ एकलक्ष आर्जाकु ध्याउं,
सबकुं सिस निवायोए ॥ सु. ॥ मात पिता
संतकुमर जो कुमरी, देवगतिके माह्यो

॥ आगंतर वे मोक्ष सिधासी, धन २ थे
 जिन जायोए ॥ सु. ॥ लिखमो सुराणो
 ओस बंसमें, जिन चर्णा चित लायो ॥
 गुर पुज्य डालनीकुपट सप्तम, लुल लुल
 सिस निवायोए ॥ सु. ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिन स्तवन ॥

नजो क्युंनी राधा कृष्ण, फेर पठ-
 तावोगे ॥ ए देशी ॥ नजो क्युंनी वि-
 मल जिनंदकुं, फेर पछतावोगे ॥ ए आं. ॥
 पांचाल देश कम्पीलपूर नगरी, राय तणे
 गुण गावोगे ॥ गुणतो गायसे बंदा, पार
 लंघ जावोगे ॥ पा. ॥ जी पा. ॥ न. ॥
 माघ सुकृ तिजके दिवसे, जन्म प्रभुने

पायाहेजी ॥ प्रभु गुण गाता बंदा, शिव मुख
 पावोगे ॥ सी. ॥ जी सीव. ॥ न. ॥ इंद्र-
 देव सब मोठव करके, माता संग सुला-
 याहेजी ॥ एण जिनंदने नजता बंदा स-
 मकित पावोगे ॥ स. ॥ जी स. ॥ न. ॥
 पीता कृतवर्म माता स्यामा वंश ईश्वरकु
 थायेहेंजी ॥ एण जिनंदने नजता बंदा,
 सुद्वगति जावोगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ न. ॥
 छपन कुमारी मंगल गाये, नाथ त्रिलोकी
 जायेहेंजी ॥ बीमल जिनंदकुं नजता कर्म
 खपावोगे ॥ क. ॥ जी क. ॥ न. ॥ बाराह
 लंछन साठ धनुषकी देह, जिनवरने पाइ-
 हेंजी ॥ एण जिनंद नजता, मुक्त सि-

धावोगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ ज. ॥ स्वर्ण
 वरणों सरीर बल और, रूप अनंत अ-
 थायोहेंजी ॥ जजन करेसु अवागमन
 मिटावोगे ॥ अ. ॥ ज. ॥ संयम लिनो
 सहस्र जनासु, यह संसार असारोहेंजी
 ॥ धन्य जो मेरे नाथा, पार लंघावोगे
 ॥ पा. ॥ ज. ॥ पोह सुकृ छठके दिवसे,
 केवल जिनंदा पायोहेंजी ॥ केवल पाये
 बंदा, सिवपूर जावोगे ॥ सी. ॥ ज. ॥
 सत्तावन गणधर आगे, धर्म देव सिख
 रायेहेंजी ॥ अडसठ सहस्र साधु, नित
 उठ ध्यावोगे ॥ नि. ॥ ज. ॥ एक लक्ष
 आठसो श्रमणी, गुणकी खान भंडारो-

हैंजी ॥ कर्म तुष्टणका रसता, गुर पासे
 पावोगे ॥ गु. ॥ जी गु. ॥ न. ॥ लिखमो
 सुराणो अस बंसमें, जिनजीके गुण गा-
 येहैंजी ॥ धर्म देवकुं नजता, अमरगति
 पावोगे ॥ अ. ॥ जी अ. ॥ न. ॥ आ-
 सोज कृष्ण दुजके दिवसे, घरबेठे गुण
 गायेहैंजी ॥ सर्णतो गुरके जाता, मुक्ती
 पावेगे ॥ सु. ॥ जी सु. ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

मेरे गिरधारीजीसैं कोनसी लडी
 ॥ ए देशी ॥ अनंत जिनंदजीसैं विन-
 तडी हैसो अनंत जिनंद ॥ ए आ. ॥
 नगरी अयोध्या देव रमणसिम, ओपम

बहुत बड़ी ॥ चवन कल्याण श्रावण
 कृष्ण सप्तम, नक्षत्र चवरेवती ॥ हैसो अं. ॥
 तात सिंहसेन मात सुजसा, संत कुमार
 गती ॥ जन्म लियो प्रभुजी इण घरमें,
 तेरस वैशाख वदी ॥ है. ॥ एकसो अष्ट
 जल कलस पखाली, चोसठ इंद्र देवही ॥
 नरनारी सब मंगल गावे, त्रिहुं लोक हर्ष
 धरी ॥ है. ॥ वंश इक्कांकुं राज योगव्या
 त्रिहुं ग्यान गर्व धरी ॥ चवदे स्वपन प्र-
 भुनी माता जो देख्या, कह्यो पती आ-
 पणेकूंही ॥ है. ॥ लंगन सिंचाणो वर्ण
 सोवरणसो, अनंत गुण अनंत बली ॥
 एक सहस्र अष्ट गुण द्विपे, धन धन्य

स्याम धनी ॥ है ॥ संसार सागर अ-
 सार जानके, संयम नेहधरी ॥ बैशाख
 कृष्ण चवदसके दिवसे, संयम सुख बरी
 ॥ है ॥ एण तिथीमें केवल पायो, पढ़
 मास एहीजिही ॥ अश्वस्थ वृद्धके निचे
 बैठा ग्यानी, थये जिनजी ॥ है ॥ तीस
 वर्ष लख आयुजो पाइ, गणधर आघ-
 सोही ॥ चैत्र कृष्ण सातुंके दिवसे मोक्ष
 गये जिनजी ॥ है ॥ छसठ सहस्र संत
 जिन आगे, गुण निधान बरी ॥ वासठ
 सहस्र श्रमणी जिन आगे, धन र ध्यान
 धरी ॥ है ॥ लिखमो पैय जणे घर बेठे,
 धन र नाथधनी ॥ में हुं दीन तुमजो

दयाला, अधम उंघारणही ॥ है ॥ आ-
 सोज कृष्ण अष्टमीके दिन, दर्वाजेके
 माही ॥ लुल २ बंदन करूंजो स्वाम मै,
 सुनो प्रभु विनतडी ॥ है ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजीन स्तवन ॥ राग पीलू ॥

धर्म जिनंद प्रभु धर्मके धोरी, आय
 लियो अब सर्ण मै तेरो ॥ ध. ॥ माघ
 सुकृ तिजनें जन्म्या, मोख देवा कियो
 घनेरो ॥ ध. ॥ मात सुव्रता पुष्प नक्षत्र,
 तात जानु राजा थयो तेरो ॥ ध. ॥ पे-
 तालसि धनुषकी देही आउखो दस लख
 वर्षाही केरो ॥ ध. ॥ सोनो बणौ सरिर
 प्रभुको, अनंत रूप अंग सोनत तेरो

॥ ध. ॥ संसार सागर असार जानके,
 संयमभुं नेह किनो नेडो ॥ ध. ॥ माघ
 सुकृ तेरस दिक्का ली, लोच करयो पंच
 सुष्टीया केरो ॥ ध. ॥ दहीवन वृद्धके निचे
 बैठा, साध संतको वृन्द जलेरो ॥ ध. ॥
 पोह पून्युं दिन केवल पाम्यो, चंवर दुलत
 और हर्ष बहुतेरो ॥ ध. ॥ जेष्ठ सुकृ पं-
 चमीके दिवसे मोक्ष, पहुंचो स्याम हे मेरो
 ॥ ध. ॥ गणधर पेतालीस चोसठ सहस्र
 साधु, में चाकर चर्णाही केरो ॥ ध. ॥
 मात पीता संतकुमारजो, कुमरी परचव
 सिवपूर होयसी डेरो ॥ ध. ॥ हाथ जोड
 प्रभु विनती करतहुं, जब र सणों चाहुं

तेरो ॥ ध. ॥ आसोज सुकल वारसकेदिवसे,
वीनवें लिखमों दासहै तेरो ॥ ध. ॥ इति ॥

अथ सांतिजिन स्तवन ॥ राग कव्वाली ॥

वांकी कवान वाले २ ॥ ए चाल ॥
जिनंद गुण गाले २ प्रभुके गुनानुं गाले
॥ ए आं. ॥ सांति सुजान सोलवा जि-
नंदहे, स्वाम धर्मके उध्योतकुं ॥ पेर देने
वाले २ ॥ जि. ॥ चादव मास कृष्ण पख
तीथि सप्तमें, जन्मे जो धर्मकुं ॥ उध्योत
करने वाले २ ॥ जि. ॥ हथणायपूर नग-
रमें हे, जन्म बास रंग सोवर्णसो ॥ अनंत
रूप वाले २ ॥ जि. ॥ अचराके नंदन अ-
श्वसेन तात, गति संत कुमारही ॥ दोनुं

पाने वाले २ ॥ जि. ॥ चालीस धनुष देही हे
 आत्मगुल, आय एकलक्ष वर्षकी ॥ उमर
 पाने वाले २ ॥ जि. ॥ जेष्ठ बदि चवदस
 दिनके माह संसारकु असार जान ॥ दिहा
 लेने वाले २ ॥ जि. ॥ पोष सुदि नवमी
 नंदिकी छांह केवली थये नवी ॥ जीव ता-
 रण वाले २ ॥ जि. ॥ गणधर छतसिहे वा-
 सठ सहस्र साधु इकसठ सहस्र साध्वी ॥
 बहुत गुणवाले २ ॥ जि. ॥ लिखमो मुराणो
 औस वंस राजगढ माह प्रभुके ॥ चणकुं
 नित्य नमनेवाले २ ॥ जि. ॥ इति ॥

॥ अथ कुंथुजिन स्तवन ॥

धन २ नेम नाथ नगवान पशुके बंद

बुडाने वाले ॥ ए देसी ॥ धन २ कुन्थु नाथ
 जिन राजजी ॥ शिवपूर पहुँचाने वाले २
 ॥ सिद्धगतिके देने वाले ॥ धन. ॥ ए आ. ॥
 तात थये सुरराय, माताहे श्रीनाम, वंदि
 चउदस बेशाखमें, जन्म धराने वाले ॥ ध. ॥
 गजपुर सहर सुजान कुन्थु देस महमान,
 तीस धनुष देही जान ॥ धन प्रवीयन ता-
 रन वाले ॥ धन. ॥ लंठन बकरो जान,
 स्वर्ण बणी स्यान ॥ बेशाख पंचमी माह,
 प्रभु दिक्षा लेने वाले ॥ धन. ॥ तिथि नवमी
 सुज बार, सुद्ध चैत्र मासके माह ॥ निलक
 तणजो गंह, जिन केवल पानेवाले ॥ ध. ॥
 संत सहस्रहे साठ, श्रमणी ठेसे उपरांत ॥

गणी पैंतीस सुग्याँन, धन जो सासण-
 के रखवाले ॥ धन. ॥ रात्री थये निर्वाण,
 पडवा बदि बेशाख ॥ प्रभु महामोटा गु-
 नखान, तुम मुक्ती देनेवाले ॥ धन. ॥ लि-
 खमो सुराणो नाम, ओस वंसके माह ॥
 मोहे गुरू मीले गण स्वाम, तुमके गुण
 गानेवाले ॥ धन. ॥ इति ॥

॥ अथ अरिजिन स्तवन ॥

कहां तेरे कानका मोती, कहांवे जा-
 तका गोती ॥ ए देसी ॥ अरि जिन स्वाम
 तुं मेरा, सर्णमें आ लिया तेरा ॥ हथणापूर
 नगर हे जारी, जन्मे अरि स्वाम अवतारी
 मिंगसर सुदि दसमकिं जन्मे, देव इंद्र

आगये छिनमें ॥ सुदर्शन रायहें, रेवती
 देवी है माता ॥ तीस धनुषकी देही, वर्ण
 स्वर्णके सेही ॥ संसार असार जाणयो हे,
 दिक्षा ली बैराग आणयो हे ॥ कार्तिक
 सुदि दवादसी माही, आभ्रवृक्ष हेठे थे
 सांइ ॥ केवल पावियो जिणराया, देव
 इंद्रादि हर्खाया ॥ मिंगसर सुदि छठ तीथी
 मांही, सिवपूरमें जा रहे सांइ ॥ पीता म-
 हेंद्रही देव, मात सुद्धगातिकी सेव ॥ ते-
 तीस गणधर सुर्ग्यान, मुक्त पहुंचे टाम-
 हमान ॥ पचास जो सहस्र संतनहें,
 आर्जा साठ सहस्रहीहे ॥ लिखमो प्रभुके ये
 गुन गाता, नित्य उठ गुरकुं ध्याता ॥ इति ॥

॥ अथ मल्ली जिन स्तवन ॥

अटारियांपे गिरयोरे कबूतर आधी-
 रात ॥ ए देशी ॥ मल्ली जिन बंदु हाथ
 जोरीके सिसनायरे ॥ ए आं. ॥ पीता
 कुंजर राजा राणी प्रभावती माय ॥ म. ॥
 इस्त्रीलिंग पायो लंठन कलसको थाय
 ॥ म. ॥ नील वर्ण प्रभुको पचीस धनुष-
 की काय ॥ म. ॥ मिंगसर सुदि इग्या-
 रस अश्वनी जन्म कहाय ॥ म. ॥ मोठव
 करवाने देव इंद्र गये आय ॥ मल्ली. ॥
 मंगल बहु गावे उपन कुमारी नरनार
 ॥ म. ॥ नगरी प्रभु मिथुला देश पायोहे
 विदेह ॥ म. ॥ सुदि माघ इग्यारस दि-

काली जिनराय ॥ म. ॥ एण तीथि एण
 मासे केवल पायो मुनिराय ॥ म. ॥ ग-
 णधर अठाविस चालीस सहस मुनिराय
 ॥ म. ॥ पीचपन सहस श्रमणी नित्य
 उठीके ज्यो ध्याय ॥ म. ॥ पीचपन स-
 हस बर्षा उमर पाइगे जिनराय ॥ म. ॥
 निर्वाण थये जिन फागण दवादसी माह
 ॥ म. ॥ लिखमो तुम ध्यावे नित्य उठ
 जिन गुण गाय ॥ म. ॥ इति ॥

॥ अथ मुनीसुव्रत जिन स्तवन ॥

अस्सी धमक पर खेल मन मोयला,
 जुगमें जिवणा थोडाजी ॥ ए देसी ॥ विस-
 वा जिनंदजीने ध्याय मन मोयला, जी-

वनें कर्म दवायाजी ॥ ए आं. ॥ पीता
 सुमीत्र मात पद्मावती जिनकी कुक्षे जा-
 याजी ॥ रंग बधावा बंटत अनंता मोछव
 बहोत करायाजी ॥ बी. ॥ जेष्ट कृष्ण अ-
 स्टमीके दिवसे जन्म जिनंदने पायाजी ॥
 मगध देश राजग्रही नगरमें मोछव होत
 सवायाजी ॥ बी. ॥ इंद्रदेव सब मोछव
 करते नरनारी हर्षावेजी ॥ उपन कुंवारी
 मंगलगावे बाजा अनेक बजावेजी ॥ बी. ॥
 बीस धनुस काया प्रभुजीकी आत्मगुलें
 बतायाजी ॥ लंगन काठवो स्याम वर्ण
 जिन रूप अनंत अथायाजी ॥ बी. ॥
 सत्री सुखानें असार जानके संयम आ-

दर लायाजी ॥ फागुण सुकृद्वादसीके दिन
 दिखा ली जिनरायाजी ॥ बी. ॥ फागुण
 कृष्ण द्वादसीके दिन चंपक निचे आया-
 जी ॥ केवल पायोहे जिनंदजी देव इंद्र
 हर्षायाजी ॥ बी. ॥ गणधर अठारे संत
 तीस सहस सबकुं सीस निवायाजी ॥
 मात पीता महेंद्र गतिमें, दुजे भव सुख-
 दायाजी ॥ बी. ॥ जेष्ठ वदि नवमीके दि-
 वसे मोक्ष गये जिनरायाजी ॥ लिखमो
 सुराणो हाथ जोडके बारबार सीस ना-
 याजी ॥ बी. ॥ आसोज कृष्ण नवमी
 दुजीकुं जिनपद घरमें गायाजी ॥ सप्तम
 पाट श्रीकु गन्तीकेरे डाल अग्या सुख

दायाजी ॥ बी. ॥ इति ॥

॥ अथ नमि जिन स्तवन ॥

अजनतो बनता नाहिंओ जिवरो से-
 लानी ॥ ए देसी ॥ नमि जिन अजले
 चाईरे मुक्त निशानी ॥ ए आं ॥ मात
 तो प्रभुजी केरी बीप्रा जो रानी ॥ बीजे
 नृप तात जिनको जिनघर ज्यानीरे
 ॥ न. ॥ श्रावण कृष्ण अष्टमी जन्मेहें स-
 वामी ॥ देश तो विदेह कहिये मथुरा म-
 ह्मानीरे ॥ न. ॥ नरनारी इंद्र देवा हर्ष
 सुग्यानी ॥ छपन कुंवारी मंगल गावे म-
 धुर बानीरे ॥ न. ॥ देह प्रभुजी केरी पं-
 द्रह धनुषांनी ॥ राज पंच सहस वर्षां किनो

अंतरजामीरे ॥ न. ॥ दिखा तो लिनी
 प्रभुजी छांडे कुटंब रानी ॥ वर्षी तो दान
 दिनो सबी अंतरजामीरे ॥ न. ॥ वकुल
 वृक्ष नीचे आयेहैं स्वामी ॥ माघ इग्या-
 रस सुकृ थये पंचग्यानीरे ॥ न. ॥ सतरा
 तो गणधर जिनके गुणकी जोखानी ॥
 संत तो बीस सहस्र सत्या एक चालीरे
 ॥ न. ॥ बेशाख कृष्ण दसमी स्वाम नि-
 र्वानी ॥ लिखमो प्रभुने ध्यावे धनमेरे
 स्वामीरे ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ रिष्टनेम जिन स्तवन ॥

तुम नेमनाथ जगवाना, अब कृपा मोपे
 लाना ॥ कर कंचन पार लंघाना ॥ तु. ॥

मात सिवादे जाया, कोइ तात समुद्रबजि
 राया ॥ सोरीपूर नगर मुहाना ॥ तु. ॥
 श्रावण सुदि पंचमहमाना, जन्म्या जिन
 जग हुलसाना ॥ आये इंद्रदेव ओर दाना
 ॥ तु. ॥ नरनारी बजंतर बजावे, उपन
 कुंवारी मंगल गावे ॥ सब हर्षत बालक
 स्याना ॥ तु. ॥ संख लंछन प्रभु केरो,
 में दास थयो प्रभु तेरो ॥ में बालक हुं
 नादाना ॥ तु. ॥ रंग स्याह प्रभुकेरो, बल
 रूप अनंतो तेरो ॥ धन्य स्याम मेरे सु-
 र्याना ॥ तु. ॥ संसारना सुख विसारा,
 प्रभु लास्या थाने खारा ॥ संयम ले गिर-
 १ जाना ॥ तु. ॥ वेडसट्टम निचे आया,

अमावस्या दिवस सवाया ॥ आसोजा पंच-
 चम ग्याना ॥ तु. ॥ इग्यारह गणधर सोहे,
 मुनी अठारे सहस मन मोहे ॥ महागु-
 णकी खान सुजाना ॥ तु. ॥ जिन आप
 थये निर्वाणों, आवण मुदि पद प्रमाणो ॥
 आठुंनै मोक्ष सिधाना ॥ तु. ॥ सब सण
 तुम्हारी चावे, लिखमों प्रभुका गुण गावे ॥
 मेरी नाथा ओर निजाना ॥ तु. ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवन ॥

मत महीडो विगाडे मेंहुं मथुराकी
 कानां गुजरी ॥ ए देशी ॥ मत दिवस
 गमावे पार्श्वजिन अजले पार उतारसी
 ॥ ए आं. ॥ मात वाम दे तात अश्वत्थेन,

जन्म लियो जिनराई ॥ मन मोयल
॥ जन्म ॥ देव इंद्र और देवी तो आइ
मोछव करणें ताईजी ॥ मत ॥ छपन कु-
वारी मंगल गावेजी, हर्खत सब नरनारी
॥ मन ॥ ह ॥ बणारसी नगरी अतिय
सुहामणीहे देश काशीके माहीजी ॥ म ॥
हस्त नवकी देह प्रभुजीकी बलतो अनंत
अथाय ॥ म ॥ व ॥ रूप अनंतो नील
वर्णगे वंश इक्ष्वांकु मांहीजी ॥ मत ॥ पोष
कृष्ण दसमीकुं संयम, आदारियो जिन-
राइ ॥ म ॥ आ ॥ चार ग्यान संयमकी
बेल्या सब जिनवरके मांहीजी ॥ मत ॥
धातकी द्रुम चैत्र कृष्णपक्ष, चौथ तिथि-

(१३)

के माही ॥ म. ॥ चो. ॥ पांचु ग्यान नि-
धान थये जिन महा मोटा जिनराइजी
॥ मत. ॥ दस गणधर प्रभुजीके तो आ-
गल, बंदत हर्ष अथाई ॥ म. ॥ वं. ॥
सोला सहस्र संत जिनंदतणा बंदु मन
चितलाइजी ॥ मत. ॥ मात पीता महेंद्र
गतिमें, देव योनीके माही ॥ मन. ॥ दे. ॥
सावण भुक्त अष्टमके दिवसे आप थये
निर्वाणीजी ॥ मत. ॥ लिखमो सुराणों
ओस बंसमें, घर बैठे गुणगाये ॥ मन. ॥
॥ घ. ॥ हाथ जोड पुज्य डालके सणें निचो
रीस निवांईजी ॥ मत. ॥ इति ॥

॥ अथ ब्रह्ममान जिन स्तवन ॥

कालहे सखी ईन ठोर बंसुरी जुल वि-
सारी ॥ ए देशी ॥ तात सिधार्थ राय
मात नशलादे तिहारी ॥ चैत्र कृष्ण पक्ष
मांह जन्म जो लिनो मुरारी ॥ नाम है
वीर जिनंदनों प्यारे २ ॥ सबकोइ करते
सेव ॥ कंडलपूर पूर्व देशमें प्यारे २ ॥
जन्में हेंगे जिनेस ॥ वीनती मानिये हो
जगनाथ ॥ ए आं. ॥ इंद्र देव सब आय
महोछव किने जो चारी ॥ छपन कुंवारी
नरनार मंगल गावत हर्ष धारी ॥ हर्ष
करत त्रीहुं लोकमें प्यारे २ ॥ बांटे व-
धाइ देव ॥ चौबीसमें जगनाथकी प्यारे २

(५१)

॥ नित्य उठ करजो सेव ॥ वी. ॥ लं-
ढन सिंधको जान रूप अनंत अपारी ॥
अनंत बली जगनाथ देह रंग सुवर्ण वारी
॥ हस्त सातकी देही है प्यारे २ ॥ बंदो नित
हमेश ॥ संसार असारही जानके प्रभु २
॥ संयम लियो जिनेस ॥ वी. ॥ साल
दुम निचे आय पंच ग्याना जो धारी ॥
वैशाख सुक्ल पख दिवस दसमीं सुनकारी ॥
केवल पा सुक्ती गये प्यारे २ ॥ चौबीसमां
महादेव ॥ मात प्रीता स्वर्ग गये प्यारे २
॥ बारमां देवी देव ॥ वी. ॥ गणधर इ-
ग्यारे गुणखान सुक्त गये है निर्वानी ॥
संत चवदा सहस्र आर्जा छतीस हजार ॥

केइयक मुक्तीमें गये प्यारे २ ॥ केइ और
 गतिया मांय ॥ लिखमो सुराणो ध्यावता
 प्रभु २ ॥ निचो शिश निवाय ॥ बी. ॥ इति ॥

॥ अथ जिन वर्ण सुगण स्तवन ॥

धनष तोरन धर्न जज मन धनष तो-
 रन धर्न ॥ ए देशी ॥ प्रम गुरको सन,
 जज मन प्रम गुरको सन ॥ ए आं. ॥
 चन्द्र सुबुधि दोय जिनका, मुकु उनका
 वर्न ॥ ज. ॥ पदम वासुपूज्य जिन तना,
 रक्त जिनका वरन ॥ ज. ॥ मल्ली पार्श्व
 नील वर्ण, वंदत जिनका चरन ॥ ज. ॥
 सुनी सुवत रीष्ट स्याम रंगे, चर्न जिनका
 वंदन ॥ ज. ॥ सेख सोलै नित्य वंदु, देह

कंचन वर्न ॥ न. ॥ चौबिस जिनकी क-
 रत पूजा, भाव पूजा करन ॥ न. ॥ सिध
 और आचारज उपाध्या, सर्व साधु बंदन
 ॥ न. ॥ निहु नारी रिप जै जस, मधव
 मांतीक बंदन ॥ न. ॥ ढाल गणी सोनै
 जिनंद जिम, लिखमो करता बंदन
 ॥ न. ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेसकी ढाल लिख्यते ॥
 तुंही तुंही याद आवै दर्दमै ॥ ए देशी ॥
 युंही २ कर्म बंधावे सुफतमें ॥ युं. ॥
 ॥ ए आं. ॥ वीर जनेसर नीन २ नाषी,
 साचा हाल सुनाया गोयमसे ॥ युंही. ॥
 धर्म हेत जोय जीव हणै वे, नीच गतिकुं

जावे कर्मसे ॥ गुं. ॥ पथर मंगाय तामीर
 करावे, जिव हणावे मंदिरसे ॥ गुं. ॥ पृ-
 थ्वीकाय हण प्रतमा बणावे, केसर घसी
 लगावे चंदनसे ॥ गुंही. ॥ अपकाय हण
 सनान करावे, अछा तरह नुहावे जलनसे
 ॥ गुंही. ॥ तेउ काय हण धुपज खेवे, पीछे
 नोग लगावे फुलनसे ॥ गुंही. ॥ खुलै
 मुखवै तवन पढैवे, बाउ काय हणावै जि-
 ननसे ॥ गुंही. ॥ छउं कायाका चुर क-
 रैया, मुख पुजा रचावै दर्व्यनसे ॥ गुंही. ॥
 लिखमो कहे सत गुरके सणै, साचा हाल
 सुनावै मित्रनसे ॥ गुंही. ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेशकी ढाल दुजी लिख्यते ॥
 हंसारे ओलख्यो नहीं जिन धर्म अग्यानी
 तुं रह्योजीरे ॥ हंसारे अबही गुरू सणों
 पाय कबु नहीं विगड्योजीरे ॥ हंसारे
 पांच प्रमेश्वर नाम अज्या मुक्ती लहेजीरे
 ॥ हंसारे आठुं दे फोज खपाय गुरारे
 साजसुंजीरे ॥ हंसारे पांचु बैरी जीत मु-
 क्तफल पावसीजीरे ॥ हंसारे सुगुरूनी
 अग्या पाल सिद्ध सिधायसीजीरे ॥ हं-
 सारे लिखमो चाषे एम बीर अग्या चा-
 लीयेजीरे ॥ हंसारे मात तात अरू नाह
 सज्जन कोइ नहींजीरे ॥ हंसारे सज्ज-
 नहै जिनधर्म सद्धि मिलायसीजीरे ॥ हं-

सारे चेत सकैतो चेत एहवी बिघतो मि-
लीजीरे ॥ हंसारे उतम गुर सुध जात
सुद्ध संगत मिलीजीरे ॥ इति ॥

॥ अथ पुज्य ढालचंदजी महाराजके ॥

॥ गुणांकी ढाल लिख्यते ॥

मुर्ज थाने पुजसा जर मोतयिनको
थाल ॥ जराक मोडा उगजो ॥ कंथ
दिसावर जायवो ॥ आज मेरो कं. ॥
संग चलुंगी मेरी ज्ञान वो पिया तोरे
संग चलुंगीरे ॥ ए देशी ॥ थाहारे दर्सको
चाय, वो सतगुर मोनें थाहारे दर्सको
चाय ॥ ए आ. ॥ सहेर लाडनूं आपहो
यें हूं राजगढ माह ॥ अंतरायके वसथकी

कैसे दर्स होजाय ॥ वो सत. ॥ सतगु-
 रको दर्सन जलो साचा जिनका चैन ॥
 सतगुरके दर्सन बीना घरी परै नहीं चैन
 ॥ वो सत. ॥ मुननितीकी रीतहै ध्वांस
 अन विनाह ॥ थें जिन सांसण सेहरा
 महा मोटा मुनीराय ॥ वो सत. ॥ सास-
 ण अधिको दिपतो संत बहु बुद्धवान ॥
 पंच महाव्रत पालवै सवही गुणकी खान
 ॥ वो. ॥ सहेर उजीण मालवै ओस वंस
 श्रीकार ॥ जात पिपाडा दिपती तुम सां-
 सणके सिणगार ॥ वो. ॥ डालचंद निहु
 तणै सप्तम बैठे पाट ॥ संत सत्यां बहु
 विनवे धर्म ध्यानका ठाठ ॥ वो. ॥ लिखमो

सुराणो विनवे निचो सिस निवाय ॥ जे
थाहारा दर्सन होवैतो लुल २ लागुं पाय
॥ वो सत. ॥ इति ॥

॥ अथ डालचंदजी महाराजके गुणांकी ॥

॥ डाल दुजी लिख्यते ॥

डालगणी नित बंदसांजी बंदत होत
आनंद ओ महारा सतगुरुजी ॥ १ ॥

जन सासणमें दिपतारे सोचता जेम जि-
नंद ओ महारा सतगुरुजी ॥ २ ॥ संत

सत्यांबीच दिपतारे जेम देवांबीच इंद ओ
महारा सतगुरुजी ॥ ३ ॥ ध्यानधरे नित

थाहारे करसी वे खेवो पार ओ महारा
सतगुरुजी ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत पालवैरे

बेकायानां पिहर ओ महारा सतगुरुजी
 ॥ ५ ॥ बारह भेदे तपस्या करेरे सुतरे
 संयम-सार ओ पहारा सतगुरुजी ॥ ६ ॥
 परीसह सहण समर्थछेरे सत्तावीस गुणकी
 खान ओ महारा सतगुरुजी ॥ ७ ॥ वि-
 यालसि दोस टालीयनेरे अहार पानीरा
 लेणहार ओ महारा सतगुरुजी ॥ ८ ॥
 वावन अणाचार टालवैरे ॥ सांसण अ-
 तिय सोजाय ओ महारा सतगुरुजी ॥ ९ ॥
 निरलोभी निरलालचीरे नुतोडा नही जाय
 ओ महारा सतगुरुजी ॥ १० ॥ मोल
 लियो लेवे नहीरे सामर्थ तारणहार ओ
 महारा सतगुरुजी ॥ ११ ॥ नव वाडा

सहितहीरे पालेगे ब्रम्हचार ओ महारा सत-
 तगुरुजी ॥ १२ ॥ गूण अनंतही सोन-
 तारे बएर्या न मोसुं जाय ओ महारा सत-
 गुरुजी ॥ १३ ॥ लिखमो सुराणो विन-
 वेरे लुललुल लागूं पाय ओ महारा सतगुरुजी
 ॥ १४ ॥ फागण वदि एकादसीरे दर्वा-
 जैकै मांह ओ महारा सतगुरुजी ॥ १५ ॥
 गिरवांका गुण गावियारे मनमें हर्ष अ-
 थाय ओ महारा सतगुरुजी ॥ १६ ॥ इति ॥
 ॥ अथ श्री श्री महाराजधिराज पुज्य ॥
 ॥ डलचंदजीनो स्तवन लिख्यते ॥
 मेरे घटकी घघरया रंगसे जरी
 ॥ ए देशी ॥ प्रभु थाहारे दर्सकी चाह

लगीरे ॥ प्र. ॥ ओस बंस अरू नगर उज्जी-
 णी २ ॥ पिपाडो प्रभु जात खरीरे ॥ प्र. ॥
 ॥ १ ॥ नवकी साल प्रभु जन्म तुम्हारो २ ॥
 सुन्न तिथी अरू सुन्न वार धरीरे ॥ प्र. ॥
 २ ॥ साल तेवीसकी संयम आदरयो २ ॥
 सुन्न मन दिल वैराग धरीरे ॥ प्र. ॥ ३ ॥ साल
 चोपन के पाट बिराजे २ ॥ गणनायक सिर-
 ताज सहीरे ॥ प्र. ॥ ४ ॥ वृत्तसि गुण करी
 अतिसय सोझे २ ॥ सुन्न गुणवान भंडार
 धरीरे ॥ प्र. ॥ ५ ॥ ब्रह्मचार नव बाडीसु पाले
 २ ॥ बाल जती बुधवान सहीरे ॥ प्र. ॥ ६ ॥
 पंच आचार पलावे अरू पाले २ ॥ पांचु इंद्री
 रसी जो सहीरे ॥ प्र. ॥ ७ ॥ पंच महाव्रत

(६८)

॥ ध्या. ॥ जवदधी त्यारोजी ॥ सु० ॥
॥ म. ॥ ज. ॥ हो. ॥ संत सत्या सिरमोड
॥ सु. ॥ म. ॥ ज. ॥ दर्शन दिज्योजी
॥ सु. ॥ म. ॥ द. ॥ होजी थांरी सेव कर
सुर इंद्र ॥ सु. ॥ म. ॥ द. ॥ नीत उठ ध्या-
उंजी ॥ सु. ॥ थांने ॥ नी. ॥ हो. ॥ तिरण
तारणरा जहाज ॥ सु. ॥ थां. ॥ नी. ॥ गुण
अति जारीजी ॥ सु. ॥ थांरा ॥ गुणहो ॥
मुक्ती पंथ दातार ॥ सु. ॥ थांरा ॥ गु. ॥
लिखमो ध्यावेजी ॥ सुग्यानी थांने ॥ सीस
निवावेजी ॥ हो. ॥ सोसणरा सिणगार ॥
सुग्यानी हुतो ॥ सीस निवाउंजी ॥ इति ॥

॥ समाप्त ॥



तीर्थेश्वर-महिमा

दोहा

श्रीगुरु चरण मनाय के, गणपति को शिरनाय ।
सरस्वती जननी मेरी, बेठो हिरदे आय ॥ १ ॥
भीषमजी की बुद्धि को, नहीं है पारावार ।
एक पंथकूं भूलके, तेरे दिये निकार ॥ २ ॥
मैं तो बुद्धिहीन हूं, इनके ग्रन्थ अपार ।
तटही लखि मैंने लिख्यो, इनको अत्याचार ॥ ३ ॥
बाल-वृद्ध-विद्वद्सभा, सबको नावों सीस ।
कपटि कुटिल मैं बहुत हूं, जडहूं विश्वा वीस ॥ ४ ॥
पुनि कविता आवे नहीं, सब मिलि करो सहाय ।
भूल चूक जो कहीं पड़ो, दीजो सबे बनाय ॥ ५ ॥

[२]

कवित्त

जीव कहीं मारे तो पाप एक लागे सही,
मरते कौं वचावे तो अठारे का फेरा है;
दान शाला खोले तो छकाय की हत्या लगे,
प्रतिमा की पूजा में ही आन पाप घेरा है ।
मान-क्रोध राग द्वेष निर्दयता भरी खूब,
जैसे कोई चारेसुं भरत भुसेरा है;
काबुल के काका जमाई सारी सिन्धही के,
महावीर स्वामी प्रभु पंथ एक तेरा है ॥१॥

—+—
भजन (१)

सुनो तुम तेरा पंथी भाई,
क्यों जीव दया विसराई ! (टेर)
सूत्र सपत्ते तुम नहीं मानों,
टीका निर्युक्ति नहीं जानो;
पहिले जीव का भेद बखानो,
पीछे पुद्गलकं पहिचानो ।

[३]

सबकी प्रलय समझलो पहिले,
फिर कीजो चतुराई
नाहि, पोल सभी खुलजाई, क्यों० ॥१॥
स्वास प्रलय पहिले समझावो,
पीछे मिनट प्रलय पै आओ;
घड़ी प्रलय का रस्ता लाओ,
घंटे की सीधी दिखलाओ;
पहर प्रलय का करो खुलासा,
नहीं तो पड़लो आई ।

सब अकड़ देऊ विसराई ॥ क्यों० ॥२॥
दिवस प्रलय का होना जानो,
पीछे दिवस रात्रि को मानो;
इसी तरह सब युग कर मानो,
फिर सबकी योनि पहिचानो;
फिर आयु योनि ते बांधो,
ये सब करो उपाई ।
क्यों मरे जाओ इतराई ॥ क्यों० ॥३॥

[४]

जीव सबों में रहता कैसे ?

उसका पालन होता कैसे ?

पुद्गल करे जीव की रक्षा,

जीव करे के पुद्गल की रक्षा;

जीव जीए के पुद्गल जीए,

ये सब सीखो जाई ।

नहीं सरम तुम्हें कलु आई ॥ क्यों० ॥४॥

भजन (२)

सुनो तुम तेरापंथी साधो,

क्यों पोट पाप की बांधो ? (टेर)

जीव ले जीव जीव को रचता,

जीव बिन जीव कोई नहीं वचता;

तुमरी अकल गई सब मारी,

तुम से तो अच्छी है नारी;

बिना बात क्यों अकड़ो बैया,

साधपना कलु साधो ।

क्यों पोट पाप की बांधो ॥ १ ॥

[५]

जो अनादि का चलता गेला,
उसमें तुमने दिया झमेला;
तुम से, भला कसाई जानो,
जिसका खास यही है वानो;
जिधे करावे पास ओर के,
पैसा देता आधो ।

क्यों पोट पाप की बांधो ॥ २ ॥

इतनी दया उसे भी आवे,

नहीं आप तलवार चलावे;

निबल जीव को पिटता देखे,

न्याय सभी उसका वो पेखे;

छुड़ा देय उसको जलदी से,

नहीं घंटा लगता आधो ।

क्यों पोट पाप की बांधो ॥ ३ ॥

तुमने उसको मात किया है,

ये रस्ता केसा लीया है.

मरते को वचाना पाप समझते,
 जीव दया से बिलकुल हटते;
 सोच समझकर अपने दिल में,
 दया धरम को साधो ।
 क्रयों पोट पाप की बांधो ॥ ४ ॥

—+—
 ख्याल (३)

थली के तेरे पंथी साधु, जीव दया को नहीं माने,
 बने हैं जैनी जैनकी मर्यादा कलु नहीं जाने । (टेर)
 नहीं सूत्र से काम कलु भी, ठुपरी खूब उड़ाते हैं ।
 मरते को वचाना पाप समझते, मनमानी धुन गाते हैं ॥ १ ॥
 प्रतिमा पूजा लिखी सूत्र में, उनको नहीं सुनाते हैं ।
 उलटी सीधी बात बनावकर, दुनिया खूब रिझाते हैं ॥ २ ॥

—+—

शेर

जाके पूछे जो कोई, सब सूत्र के आधार से;
 शास्त्र की बातों को उलटी, कर दिखाते प्यार से ।

प्रतिमा पूजा, जीव दया के, नामसे नफरत उन्हें;
 'घणी खमा' ओर 'पूज्यता' को ईश्वर बनके सुने
 शंका करता जो कोई जाकर,
 उस पर ओघा वे ताने । बने हैं जैनी० ॥ १ ॥
 साधु होकर झूठ बोलना, किसी शास्त्र की नहीं सलाह
 सूत्रों का कुल अर्थ पलट दिया,
 झूठ सरासर देखो भलाह ।

पत्थर को तो नाव बना कर, बैठे हैं साधुजी मलाह;
 साधु जी कहें पार लगी अब,
 श्रावक लोग कहें जलदी लगाह ॥

शेर

संसार सिन्धु अपार है, यहां धर्म से लगती सही;
 वहां पाप का बोझा भरा, और नाव पत्थर की वही ।
 मलाह को दीखे नहीं, फिर दंभ की विजया लही;
 ये नाव तो के दिन तिरेगी ? अब न डूबी अब सही ।
 जिस जिस को ये लेकर डूवे, जो कोई इनकी माने ।
 बने हैं जैनी० ॥ २ ॥

जिस साधुमें राग द्वेष हो, उस साधु का क्या हे पता ?
 साधुमार्ग से प्रीति करते, औरो में रहे खोट बता ।
 जो ये नाम भूल के रक्खा, तो मंजूर करो अपनी खता,
 दर्शन करने आप चलो और, श्रावकों को सब दीजे बता ॥

शेर

मरते हुए को बचाने में, धर्म गर कुछ समझते;
 शास्त्र को नहीं उलटते, फिर ना किसी से अटकते ।
 शास्त्र में जो समझते तो, धर्म से क्यों सटकते ?
 मोक्ष सीधी होइ जाती, नरक में क्यों लटकते ?
 सीधी गेल बताते हमतो, माने चाहे नहि माने ।

बने हैं जैनी० ॥ ३ ॥

ये लड्डू दो दिन के भैया, आखिर रोटी खानी है;
 सीधी रोटी ऊपर पानी, येही मोक्ष निशानी है ।
 राग द्वेष को जल्दी छोड़ो, प्रेमप्रीत मन लानी है;
 झूठ का विलकुल त्याग बताते, साधुजन सुझानी है ॥

शेर

जो कहा डर के कहा और थोड़े लफ्जों में कहा;
 झूठ अक्षर कुछ नहीं, फिर सच भी थोड़ा कहा ।
 डर तो है मरने का मुझको, मारने से डर रहा;
 वे धर्म को समझे नहीं कुछ, पाप घटमें अह रहा ।
 मालमस्त अन्ये क्या ज्ञाने, जाके लागी सो जाने ॥
 वने हैं जैनी० ॥ ४ ॥

—+—
 ब्याल। ४)

घर छोड़ा और मुंड मुड़ाया, साधुपना कुछ साधो तुम;
 सभी को छोड़ो राग और द्वेष झूठ सब त्यागो तुम ।
 शास्त्र गुरु कोई जरूर करलो, येही सलाह हमारी है;
 ये मत समझो कि लोक में, इज्जत जाय हमारी है ॥
 'चैत्य' शब्द के आप कहो कि, सो सो अर्थ बताते हैं ?
 कोश बताओ, नहीं तो झूठी क्यों फर्माते हैं ॥

—+—

शेर

नाम 'दूंदक' जो तुम पाया, नहीं ये सूत्र में देखा;
 जैन के नाम पर तुमने, लगादीनी है ये रेखा ।

जैन के नाम से नफरत, करी ये क्या गजब किया ?
 साध मारग बना लिया, हक असली उठा दिया ।
 सीख मानलो यही हमारी, क्यों सब जन्म गमाते तुम ।
 सबी को छोड़ो ० ॥ १ ॥

जैनशास्त्रका जो कुछ रस्ता, वो सब भूल गए भैया;
 मुँको बांधा पेटमें चल रहा इंजन का पैया ।
 धर्म कर्म सब कूँ खो बैठे, नाचे हैं ताता थैया;
 कपटका बोझा भरा बहुत है, अब नहीं तिरनेकी नैया ॥

शेर

निशीथ के चोथे उदसे दंड रखना लिख रहा;
 तुम पे ये दीखे नहीं पाखंड ये कीया कहा ?
 आज्ञा में धर्म है सो तुम नहीं चलते कभी;
 जैन का क्या धर्म है ? घरकी खबर लीजो कभी ।
 जो कुछ आज्ञा दी है जैनमें, नहीं मानी बिलकुल भीखम
 सबी को छोड़ो ० ॥ २ ॥

वार गुणे अरिहंत विराजे, पाठ कहां तुम दरसाया;
 मन कलिपत सब पंथ चलाया, वक्ते हो मन का भाया ।

भाष्य चूर्णि निर्युक्ति टीका, अर्थ से चित्त चुराया है
चोरी कीनी देव गुरु की, ये सब धब्बा खाया है ॥
शेर

झूठ तो पाटे से बँधा और कान में डोरा दिया;
दैत्य का सा रूप कीया, खास बाना धर दिया ।
प्रतिमा से नफरत तुम्हें, तसवीर क्यों खिचवा रहे;
तसवीर को खिचवा रहे, ये क्या गजब करवा रहे ?
जैन शास्त्र का रस्ता छोड़ा, न्यारा झंडा गाड़ा तुम ।
सर्वा को छोड़ो ॥ ३ ॥

भगवती सूत्र का शतक बीसमा
जंघाचारण और विद्याचारण;
करी वंदणा उन प्रतिमा की, दोनों लीनी जाके सरण ।
जीवाभिगम में विजयदेव ने, पूजा प्रतिमा की कीनी;
विजयदेव के अधिकार में, सतरह तरिया से कीनी ॥
शेर

विजयदेव के पूछने पर देवतों ने ये कहा :—
‘तुमने जो पूजा करी कल्याणमंगल ले रहा ।’

प्रश्नव्याकरण के पाठ में 'पूजा' अहिंसा नाम है;
 पूजा अहिंसा जब कही फिर, हिंसा का क्या काम
 और बहुत से प्रमाण देखो, सोच समझ हठ छोड़ो तु
 सभी को छोड़ो० ॥ ४ ॥

गजल (५)

देख सतजुग निबल राजा
 जंग कलजुग ने ठानी है;
 हुआ है पंथ इक ऐसा,
 दया बिलकुल न मानी है (टेर)
 बने हैं पात्र साधुजी,
 देवो जो सब हमें दीजो;
 नहीं देना किसी को कुछ,
 यही एक बात ठानी है ॥ १ ॥
 अगर मारे कसाई जो,
 कहीं बकरे को आकरके;
 बचाओ मत कहीं उसको,
 यही उनकी कहानी है ॥ २ ॥

[१३]

अगर गैया जलै घर में,
किसी के, जलने दो उसको;
अठारह पाप जो सेवे,
जिसे गैया वचानी है ॥ ३ ॥

खायेगी घास ओर पानी
करे मैथुन की तैयारी;
जने वचा कहीं वच्ची,
वे भी ले घास पानी है ॥ ४ ॥

लगेगा पाप उसही को,
कि जो इसको वचायेगा;
तेरेपंथी का ये मत है,
यही उनकी निशानी है ॥ ५ ॥

नहीं कुछ शास्त्र में समझे,
लिफाफा कोरा है बिलकुल;
दया से है उन्हें नफरत,
पाप में देह सानी है ॥ ६ ॥

[१४]

समझलो बात सब उनकी,
कि क्या विद्या कमाई है;
असल रस्ते को खो बैठे,
नरक की बात ठानी है ॥ ७ ॥



गजल (६)

तेरापंथी के साधुजी,
ये क्या तुम बात गाते हो ?
बनाये सूत्र जिन आगम,
उन्हें चूका बताते हो (देर)
दिया था दान बरसी का,
अगर कोई भी आजावे;
लिनी दीक्षा व जंगल में,
चले जाना बताते हो ॥ १ ॥
विप्र वन में भी जा पहुँचा,
वस्त्र आधा उसे दिया;

इसीसे दुःख उन पाया,
और चूका दिखाते हो ॥ २ ॥

करी सूर्याभने पूजा,
तरह सतरे से प्रतिमा की;

भवान्तर मोक्ष वतलाई,

लिखी जब क्यों छिपाते हो ? ॥ ३ ॥

करी द्रौपदि ने जो पूजा,

कहो मिथ्याती तुम उसको;

लिया समाकित कहाँ उसने,

उसे क्यों नहीं बताते हो ॥ ४ ॥

अगर गाड़ा चला आवे,

निचे वचा जो मरता हो;

कहो साधु वचावे नहीं,

ये क्या तुम गीत गाते हो ? ॥ ५ ॥

दरद श्रावक के चलता हो,

कि साधु हाथ नहीं फेरे;

[१६]

नजीर दीनी है जो तुमने,
ये दिन में रात लाते हो ॥ ६ ॥

रोग सबही को लगता है,
कि साधु साफ ही कहदे;
जहांपर वैद बैठा हो,
वहां तुम क्यों न जाते हो ? ॥

मगर बच्चा है लावारिस,
जभी गाढे से वो मरता;
बचाना तुम मना करते,
वहां क्या पाप लाते हो ? ॥ ७ ॥

लगाते हो यही फिक्रा,
हमें क्या गर्ज दुनिया से ?
लिखी होगी जैसी जिसकी,
वैसी तुम मोत गाते हो ॥ ८ ॥

पूछे हैं अब तुम्ही से ये,
लगे कोई रोग जब तुमको;

[१७]

यही फिक्का पढ़ो हरदम,

दवा क्योंकर कराते हो ? ॥ ९ ॥

जीव अपना सा सब देखो,

नहीं दीखे तो हमसे कहो;

दीया हम दिनमें जोरेंगे,

आप चश्मा लगाते हो ॥ १० ॥

गजल (७)

गुरु कपटी करे कोई,

नरक पहिले समझलेना;

धर्म और कर्म सब छोड़ें,

दया का कुछ पता है ना (टेर)

मजब तो बहुत से देखे,

मगर ये आज ही देखा,

पता लगता नहीं इसका,

कि इसको क्या मजब कहना ॥ १ ॥

रहम रखते नहीं कुछ भी,

बने जल्लाद ही बैठे,

[१८]

कथा सब कत्ल की गावे,
सुनो तो जाके सुनलेना ॥ १ ॥

अगर मारे कोई किसको,
उसे जाकर बचावे जो,
उसे ही पाप लागेंगे,
अठारे को समझ लेना ॥ २ ॥

अगर गरदन किसी की पे,
चले तलवार चलने दो;
जले जो आग में कोई,
इन्हें कोई मत बचा लेना ॥ ४ ॥

मती भूखों को दो भोजन,
मती दाने कबूतर को,
मती प्यासे को दो पानी,
देओ जो सब हमें देना ॥ ५ ॥

मती गायों को दो चारा,
मती नंगों को दो कपड़ा,

अगर दोगे कहीं जो तुम,

हमारा हुक्म है कि ना ॥ ६ ॥

कहीं देना पड़े दबके,

दवावट से किसी की से,

‘तस्स मिछामि और दुकडं’

यही एक मंत्र पढ़ देना ॥ ७ ॥

गती नीचीको पायेंगे,

संग भक्तों को लीने हैं,

चलो भाई संग सब श्रावक,

हमें कुछ रोटी दे देना ॥ ८ ॥

खबर ये कुछ नहीं उनको,

कि क्या रोटी वहां रखी है !

दीया हो यहां किसीको कुछ,

तो वहाँ जा करके ले लेना ॥ ९ ॥



[२०]

दोहा

तेरापंथी साधजी, रिस मत हूजो देख ।

जैसी पोथी आपकी, वैसी कीनो लेख ॥

ये तो थोड़ी सी बनी, आगे बन रही ओर ।

भोजन थारी भर रही, कीनो पेलो कोर ॥



JAINISM-IN EUROPE

Alexander Gorden's opinion
General precepts,

BY

TAPSIWJI SRI KEWAL RISHIJI AND MUNI
SRI AMOLAKH RISHIJI

"Quoted from Jain Hitechhu."

PUBLISHED BY,

LALA MANCHAND PRAGRAJ DADRIWALA,
Secunderabad Deccan,
Palton No. 6.

Printed at the Ambika Press,
Gowliguda, Hyderabad Deccan.

यूरोपमें-जैन धर्म

तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी और
बालब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलख ऋषि
जी के सहोदधसे.

‘जैनहितेच्छु’ मासिक पुस्तकसे ग्रहणकर

सिकन्दरावाद (दक्षिण हैदरावाद)

पलटन नं० ६ निवासी

लाला-मामचंद परागराज दादरीवालेने

प्रसिद्ध किया

मूल्य-जैनस्विकार

वी० २४४१, विक्रम १९७१, इस्वी १९१४

श्री अंबिका प्रेस, गौळीगुडा, हैदरावाद (दक्षिण)

प्रस्तावना

“सत्यमेव जयते”

जो सचा होता है वो सदा सचा ही बना रहता है, और वो सत्य प्रेमीजनों को प्राप्त भी होता है, वे वो प्राणों से भी अधिक प्यारा कर अङ्गीकार करते हैं, कदापि कोई उसे असत्य के परदे से छिपे तो वो छिपता नहीं है, थोड़े ही काल बाद स-प्रेमी सज्जनो उस परदे को अलग कर सत्य की यं प्रकाशी रश्मि को सर्व के दृष्टिगत करते हैं-ससे वो सत्य सदा जयवन्त बना ही रहता है, इ-आर्य्य भूमण्डल में पराचीन काल में जैन धर्म-यमान्य तो क्या? परन्तु सर्वमान्य अद्विती-न रहा था, वो अर्वाचीन (मध्यकाल) में का-

लादि के प्रभावसे मन्द प्रकाशी होने लगा था, उसे पुनः सत्यप्रेमी जनों ने प्रकाश में लाने जो तब हा मन से पर्यत्न किया तो वो अभि पहिले की तरह ही प्रकाश मय होने लगा है, यह देखे सुझे बडा ही हर्ष होना है कि सत्य है—‘सत्यमेव जयते’

इस समय में इस हिन्दभूमी से भी अधिक प्रकाश विद्याका युरोपादि क्षेत्रों में होता हुआ प्रत्यक्ष जाना जाता है, पश्चिम सत्य विद्वानों सत्यके शोकीन बन जो जो विशेष सत्यसम्य उनको जानने में आता है उसे बडे ही प्रेमपूर्वक स्वीकार करने लगें हैं: जिसका एक पूरा वा अमदावाद निवासी भाइवाडी लाल मोतीलाल शाह की तरफ से प्रसिद्ध होता ‘जैन हितेच्छु’ मासिक पुस्तक के १५ वें वर्ष के १२ वें अंक में नरेन्द्राष्टि गांचर होने से में

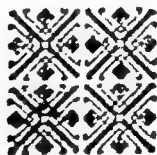
रा मन बड़ाही हार्षितहुवा, और इसका विशेष
 प्रसार लाभका कारण जाण गुजराती भाषा में
 छपेहुवे अर्थकों हिन्दी भाषा में बना कर प्रसिद्ध
 करने केलिये दिल्लीजिल्लेके दादरीग्राम के निवा-
 सी धर्मप्रेमी लाला रामचन्द परागराज कि जो
 अभी सिकन्दराच की छटे नंबर कि पलटन में का-
 रकूनहैं उनके सुपरत किया, उन्होंने इसे सभार स्वी-
 कार छपवाकर सत्य धर्मर्थियों को जो असूत्य
 लाभदिया है, इस केलिये उन्हें धन्यवाध दिया
 जाता है.

अमोलकृषि



अलेकझान्डर गार्डन, नाम के एक पाश्चात्य विद्वान महशय जैनधर्म का स्वीकार कर जैनधर्म के सम्बन्ध में कटाक्ष लिखनेवाले "मेन्चेस्टर गार्डी अन" पत्र के एक लेखकने "धीबेजीटेरीअ नमेसेन्जर ऐन्ड हॅल्थ रिव्यु" नामके पत्रद्वारा एक बहुतही गंभीर और बोधकर्ता जवाब प्रगट किया है वो अक्षरसः यहां प्रगट करनेमे आत है.

वाडीलाल मोतीलाल शाह



The Jains of India as Vegetarians



By Alexander Gordon.

हिन्दूके जैनो वनस्पत्याहारी तरीके
लिखनेवाले-अलेकझानुर गॉर्डन

A short time ago reference was made to the Manchester Guardian's "Miscellany," containing an article on the Jains of India, who are described as "a heretical and ultra-humanitarian sect of Hinduism," and also that "its founder was contemporary with Buddha.

थोडेदिन पहिले 'मेन्वेस्टर गॉर्डन' के
परचुरण विषयोंमें हिन्दू के जैनो के सम्बन्ध

इसारा किया था, और जैनों को पाखण्ड मतवाले तथा जीवदया के सिद्धान्त को हृदयसे ज्यादा तान के लेजानेवाली हिन्दु धर्म की एक शाखा रूप बताये थे, और ऐसालिखा था कि-जैनधर्म के स्थापक बुद्धके समकाल में हुवे हैं.

These words suggest a most adverse criticism, particularly from the Vegetarian point of view, which is my reason for sending this article to the Vegetarian Messenger.

इन शब्दों में बहुत वे वाजवी टीका करने में आइ है, खासकर के वेजीटेरीयन दृष्टिबिन्दु से तो यह टीका बहुतही विपरीत है, और इसके लियेही मेरा यह लेख वेजीटेरीयन मेसेन्जर में भेजा है

Regarding the statement, "its founder was

contemporary with Buddha" it will perhaps interest some of the many Messenger readers to know that Jainism was thoroughly established as a religious and philosophical system many years before the advent of Buddha. According to the teachings of the Jains, the universe is for the evolution of all living beings, and consequently all forms of life are regarded as sacred by them—"live and let live" being their guiding principle. The ideal of the Jain philosophy is the physical, mental, moral and spiritual perfection of man. This is the essential goal of every living being, hence the Jain's great respect for all manifested forms of life, and such an ideal is embodied in one of their greatest sayings "Ahimsa Paramo Dharmah"—"Noninjury to life is the highest religion." "Ahimsa (not to kill) is the first of the five principles of morality in Jainism. Compassion is the root of all virtue to the Jains consequently all their affairs of life are based on the principle of "Daya" (love.) They

have an intense detestation towards any form of blood—shedding, because any such degrading action disturbs the conditions to ensure the right progress of the soul in the course of its spiritual evolution.

“जैनधर्म के स्थापकों बुद्धके वक्तमेंथे” इस कथन के सम्बन्ध में इस पत्र के कितनेक वांचनेवालों को वाकैफ करना अच्छा होगा कि बुद्धके बहुत वर्षों पहिले जैनधर्म और जैनदर्शन सम्पूर्ण तोरसे जमाहुवा था, जैनधर्म का शिक्षण ऐसा है कि-इस विश्वके सर्वजीवों की उत्क्रान्ति (उंच दिशा प्रप्तकरने) केलियेही है, और इससे जैनमर्धी सबजाति के जीवों को पवित्र समझते हैं, और उनका मुद्रालेख “तुम जीतेरहो और दूसरों को जीनेदो” ऐसा है, शारीरिक, मानसिक, नैतिक औ

र अध्यात्मिक सम्पूर्णता येही जैनफीलसुफी की उत्कृष्ट भावना है, हरेकजीवों का खास लक्षविन्दू भी येही माना गया है, और इसी सेही जैनो तनाम व्यक्तजीवों को बडी मान दृष्टि से देखते हैं, और "अहिंसा परमो धर्मः" ऐसे उनके महान् सूत्रमें यह भावना रक्खी गइ है, किसी भी जीतेहुवे प्राणी को मारनेसे के इजा करनसे हिंसा होती है, क्रोध लोभ काम गर्व और प्रमाद (वेफिकरी) के करण से मनुष्य दूसरे जीवोंकी हिंसा कर डालता है, परन्तु जोवो आपनी आत्मा पर ऐसा अंकुश रक्खोकि आर्थात् जो ऐसी तरिका 'संयम' करेकि जिससे बिकारों उसपर कीसी प्रकार की असर कर सकें नहीं, तो वो अहिंसा को प्राप्त करता है,

To kill or injure any living being is to commit "Himsa" When man is governed by wrats, greed, lust, pride and carelessness he is prone to kill other living beings, which, from the Jain standpoint is committing "Himsa," but if man controls himself so that he is not dominated by passions, he embraces "Ahimsa." The Jains teach that the spiritual evolution of man is utterly impossible whilst he kills, or ever injures other living beings; thus they strongly assert that those who injure others injure themselves also. To the Jains it is, therefore, obvious that when a man kills another being and eats its flesh he spiritually generates heartlessness before he kills the other living being

जैनों कहते हैं कि दूसरे जीते हुए प्राणी को मारना किंवा ह्जा करना जहां तक चतुरेहगा वहां तक मनुष्य की आत्मिक उत्क्रान्ति (SPIRITUAL EVOLUTION) होना बिल्कुल ही असंभव

है; और इस शिक्षण के आधार से वो वजन देकर कहें
 तहैं कि-जो दूसरों को इजा करता है वो उसके द्वा
 रा अपनेको भी इजा करता है, जैनों को यह वा
 त स्पष्ट-खुली समझ में आती है-जो मनुष्य दूस
 रे प्राणी को मारता है, और उसका मांस खाता
 है उस मनुष्यका आत्मा निर्दय होजाता है!

Those who argue that man is superior to the animals, because of a mistaken belief that they are for his sole use, make a tragic mistake. they are not aware of the fact that through thinking such actions which involve the killing of animals for the purpose of gratifying a depraved sense of taste, they are generating most harmful conditions which retard not only the spiritual development of the victim, but their own spiritual evolution. All flesh eaters, by their very sense of taste, literally regard soul and matter as one because the eating of a dead body cannot in the

slightest degree benefit man's souls. An attribute belonging to a matter cannot be converted into an attribute of soul, and vice versa, for tangibility, taste, smell, colour, are attributes of matter and cannot become attributes of soul. Hence the Jain's practise Vegetarianism in a very strict sense, even to the point of not unnecessarily killing, with intent, any insect. Extreme as this ideal may be to the Western mind, I understand the late James Allen, of Ilfracombe, founded a brotherhood the members of which literally carried out this principle as strictly as possible.

“जानवरों मनुष्यों केलियेही हैं” ऐसीभूल से भरोहूइ मानता के आधार से जो ऐसी दलील करतेहैं कि-मनुष्य जानवरों से श्रेष्ठहै, वो एकक रुणा उत्पन्न होवे ऐसीभूलकरतेहैं, उनको इससत्य का भान नहीं है-उनके कलुषित जिभ्याके स्वाद केलिये प्राणीयों को मारने का विचार मात्रकरने

से भी वो ऐसा घातिकी संयोग उत्पन्न करते हैं
 कि-वो संयोगो उनके भोगमें आतो हुवे प्राणी की
 तैसेही आपकी आत्मिक उत्क्रान्ति को इखल क
 रते हैं, सब मांस आहारीओं जिभ्या सवादके का
 रण से आत्मा को और जडपदार्थों को एक रूप
 में मानते हैं; परन्तु जडपदार्थों का गुण कभी जी
 व का गुण बन शक्ताही नहीं है, और जावका-
 गुण सो जडपदार्थ का गुण बन शक्ता नहीं है, का
 रण कि-स्पर्श, गन्ध, रस, रंग, सब जडके गुणों हैं
 और वो गुणों कभी आत्माके गुण बन शक्ते नहीं
 हैं, इसलिये जैनों खुस्त बनस्प त्याहारी पना पा
 लते हैं, यहां तक कि-वो किसी छोटे से प्राणीको भी
 खास कारण सिवाय और इरादा पूर्वक मारते

नहीं हैं, यह भावना भलांही पश्चिम के लोको को हृदसे ज्यादा आलुप्त होवो परन्तु मैं जानता हूँ की इल्फ्राकोम्ल के वतनी स्वर्गस्थ जेइम्स अलने स्थापन किया हूँ वा "बन्धुसामज" के सभासदों येही सिद्धान्त बनसके उतनी चीवट-खांतसे पालते थे-

The Jains teach that the killing of animals involves the hindering of the evolution of the killer and killed on the path of the spiritual progress of all souls. Such is the foundation of the Jain religion, and to its true followers no morality, no religion, is higher than the precepts of Ahimsa, therefore the rightly claim to be absolute believers in the universal Brotherhood of all Living Beings. "Thou shalt not kill" is found in almost every known religion, and when its full import is acknowledged and applied to all living beings in the sense of the term "Do unto others as you would that they should

do to you," there will be found the Jaina Doctrine of Ahimsa, which is the bases of all religious ideals on account of its being the root cause of all good in the world, and which also comprises all virtuous actions and moral principles of all the religions of the world. Thus, in practising the Jain principle of Ahimsa, all Vegetarians pay homage to this Highest and Purest Principle of Virtue.

जैनधर्म ऐसा शिक्षण देता है कि प्राणियों को मारने से मारने वाला और मरने वाला दोनों की आत्मिक उत्थिति में दखल पहुँचता है, जैनधर्म का पाया नीम) ऐसा है, और इस धर्म के अनुयायियों अहिंसा व्रत करते किसी भी नीति या किसी भी धर्म को महान् गिनते नहीं हैं, इसलिये प्राणी मात्र के सर्वजनिक 'बन्धु मण्डल' के सच्चे सच्चे ज्ञान ने वाले तरीके का उनका दावा वाज-

वी है. 'अहिंसा करना मत' ऐसा (वाइयलका)
 शिक्षावचन प्रायः सब प्रसिद्ध धर्मों में देखने में
 आता है, और जिसवक्त इस शिक्षावचन का गु-
 प्त-रहस्य स्वीकारने में आता है और सब प्राणि-
 यों पर लगाने में आता है उसवक्त, "जो चलन तु
 मारे लिये होता हुआ देखने को, तुम चाहते हो, वै-
 सा ही चलन दूसरे के साथ करो" ऐसे (क्रिश्चिय-
 न धर्म के महावाक्य में जैन धर्म का 'अहिंसा' शिष-
 ण छिपा हुआ मालुम पड़ता है 'यह अहिंसा शि-
 क्षण ही सब धर्मिक भावना का पाया है. कार-
 ण कि-दुनिया के सब अच्छे काम इससे ही होते
 हैं. और दुनिया के तमाम धर्म के सब नैतिक सि-
 द्धान्तों तथा सदुणी कृतव्यों का इसीमें समावेश
 होता है. इस से समझ में आवेगा कि जैनों का अ-

हिंसा सिद्धान्तके पालन करने में सबवर्जीदेरी
अनो [वनस्पति आहारियों] मात्र सर्वोत्तम औ
र पवित्र में पवित्र सद्गुणों के सिद्धान्तों को ही पू-
जते हैं.

A well-known doctrine to be found in the religions of the East is that of re-birth, and it is also found in the philosophy of the Jains. In order that man may continue to live he is obliged to destroy life, but the less and lower manifestations of life he destroys, the less harmful Karmas he creates. This is the foundation of the very strict Vegetarian rules of the Jains who teach that there are eight classes of energies [karmas] unnatural to the pure soul. To reduce the activities connected with these karmic energies is the Jain's object in life, and following up

the principle of Ahimsa, hospitals for old and maimed animals have been erected in many towns and cities in India for these creature to be fed and carefully tended until the time of their natural death.

पहिले के धर्मों में पुनर्जन्मों का सिद्धान्त प्रसिद्ध है, और यह सिद्धान्त जैन फीलसफी में भी है. जीवन निभाने के लिये मनुष्यों से एक या दूसरे जीवोंकी हिंसातो होजाती है, परन्तु जितने कमी प्रमाण में हिंसाहोवै, और ज्योंकमी इन्द्रियों वालेजीव की हिंसा से चलासकें तैसेक. सो नुकसान कारक कर्म बन्ध को कर्ता होताहै. जैनों के चुस्त वेजीटेरीअन कानूनों का पायाय है हैं, वो ऐसा शिक्षण देतेहैं कि-आठप्रकार के कर्म हैं वो शुद्धात्मा को लगते नहींहैं, जिससेक-

संबन्ध होवै ऐसी प्रवृत्ति जैसे बने वैसे कमी करनी, येही जैन जीवन का आशय है. अहिंसाके सिद्धान्त को अनुसरके जैनोंने हिन्दके बहूत से शहरों में बड़े और अपङ्ग जानवरों के लिये पींजरापोलों का स्थापन किया है. वहां ऐसे जानवरों को खान पान कराने में आता है और छुद्रती रीत से मृत्यु आवे वहां तक उनकी बरोबर बरदास उठाने में आती है.

Also, their institutions, manners, customs, worship and ceremonial are based upon the absolute recognition of the fact that non-injury is the highest religion, with the result that Vegetarianism in the strictest sense of the word is one of the chief tenets of Jainism, which is primarily a religion of the heart. It is clear that this religion

of the Jains is built up upon love, and it can truly be said of them that they have fully realised the practical way of leaving the "Christ-like" life as presented to the Western world in the great seer Swedenborg's statement—

इतनाही नहीं परंतु जैनों कि विविध संस्थाओं रीवाजों रीत भाँत पूजाविधि और दूसरी विधियों सब अहिंसा येही परम धर्म है। ऐसे सिद्धान्त के पाये के ऊपरही रचाहुवा है, इसके परिणाम से खुस्त वेजीटेरीअन पना यह जैनधर्म का मुख्य सिद्धान्त होगया है, और येही धर्मप्रेम के पाये परबन्धाहुवा है, और उनके सम्बन्ध में सत्यतासे कहसक्ते हैं कि —“क्रिस्ट जैसा जीवन पश्चिम के लोकों को महान् गुप्तदृष्टा स्वीडन बोर्डे इन शब्दों में चताया था.

“जीवन का धर्म यह है कि सयका भलाकरना”

VEGETARIANISM AND
TENDER-HEARTEDNESS
Towards Living Beings.
AUM.

अहिंसा उपदेश के दाखले

1 Man is to treat the dumb animals with kindness: "A righteous man regardeth the life * of his beast." (Bible: Prov. xii: 10)

(१) अर्थात्-मनुष्यों को उचित है कि अवाचक (मुके) प्राणीयों के साथ दयालुता का वरताव करना चाहिये, नेक अच्छे मनुष्यों को अपने पाले हुये पशुका भी खयाल रहता है. [बाइबल]

2 Animals are not to be slighted. (Bible Eccles. iii: 18, 19, 20, and 21.)

(२) अर्थत्-जीवोंकी हिंसा नहीं होना चाहिये
[बाइबल]

3 "Thou shalt not kill." (Bible: Ex. xx: 13)

(३) अर्थत्-तुं हिंसा मत कर (बाइबल)

4 "Ma himsyat sarva bhutani" i. e. Torture not any living being. (Veda Sruti.)

(४) - "महिंसात् सर्व भूतानि" किसी भी प्राणी को मारो मत (वेदश्रुति)

5 'A tmavat sarva bhutani yah pasyati sa pasyati' i. e. He who looks upon all living beings like himself, sees God. (Veda Sruti.)

(५) "आत्मवत् सर्व भूतानि पश्यति सः पश्यति" अर्थात्-अपनी आत्मा समान सब जीवोंको जो देखता है वोही आँखोंवाला है [वेदश्रुति]

6 "Ahimsa paramo dharmah" i. e. Cessation from torture (to living beings) is highest religion (of man)—(Upanishad.)

(६) "आहिंसा परमो धर्मः" अर्थात् परमधर्म

वोही है कि जहां किंचित मात्र हिंसानहो.

7 "Prana danat param danam na bhutam
na bhavishyati" i.e. There has not been nor will
be a greater gift than the gift of life *(Bhishma-
charya: Mahabharat)

(७) प्राण दानत् परम दानम् । न भूतो न भ-
विष्यति, अर्थात्-प्राणदान देने के जैसा दान औ-
र नहुवा और नहोगा [भीष्माचार्य-महाभारता]

8 "I observe the precept to refrain from
destroying the life* of beings." BudahistDharma

(८) अर्थात्-हिंसा नहीं करने की शिक्षा को
मैं मनन करता हूं। (बौध धर्म)

9 Intoxicating liquors and drugs are
prohibited. I observe the precept to abstain from
using intoxicants." (Buddhist Dharma)

(९) अर्थात्-नशा पेदा करने वाला पानी औ-

र दवाइ कि सनाहै नशा नहीं करने, काशिक्षा में मनन करताहू [बौध धर्म]

10 Love and do good to all mankind alike without difference of caste, colour or creed. All are equally loved by God." A new commandment I give unto you, that ye love one another; as I have loved you, that ye also love one another. Bible: St. John xiii. 34.)

(१०) अर्थात्-सर्व मनुष्यों के साथ प्रेम और मेहरवानी का धरतावा कर, जात रङ्ग इत्यादिका भेद नरक्ख कर इश्वरका सबोंपर एकसा प्यारहै यह उमदा हुकम में तुल्लेदेताहू कि तूं सबके साथ प्यार कर, जैसामें तेरेसे प्यार करताहू ऐसीतरह तूंभी सब के साथ प्यारकर.

And when you spread forth your hands, I will
 bind my eyes from you, yea, when ye make many
 prayers, I will not hear your hands are full of
 blood -[HUSIA.]

अर्थात् ईश्वर कहते हैं जिस वक्त तुम [विनंति करने के
 लिये] तुमारे हाथ ऊंचे करोगे उस वक्त मैं मेरी आँ
 खों तुमारी तरफ से दूसरी तरफ फिरा लेखुंगा
 और विनंति पर मेरी विनंति करोगे तो भी मैं
 ध्यान न देऊंगा, क्योंकि तुमारे हाथ (जीवों को
 मारने से) रक्त-लोही से भरे हुए हैं (हुसीया शा
 खका आठवा अध्याय)

The true spirit of religion comforts as well as
 comprises the soul.

अर्थात्—सच्चे धर्मिष्ठ पन से आत्मा को दिला
 सा और शान्ति मिलती है वासर.

Religion what treasures untold, reside in that
 heavenly word

More precious than silver and gold all this
 earth can afford.

र अर्थात्—“धर्म” इस स्वर्गीय शब्द से कित
में अकथ्य खजाना समायो हुवा है, सोना रूपा
दि पृथ्वी के सर्व पदार्थों से भी बहुत मुल्यवा
है.

It is better to be unborn than untaught; for
ar ignorance is the root of all evils

I अर्थात्—नहीं पढ़ने से नहीं जन्मनाही अच्छ
ha है, क्योंकि—अज्ञानताही दुःखों का मूल है.

B Our passions play the tyrants in our breast
pers.

मे अर्थात्—हमारे मनोबिकारका हमारे दिलों प
साम्राज्य रहता है.

मे Have your conscience as your guide.
य तुम्हारी सद असद बिवेक बुद्धि को अपन
रहकर बनाओ.

प Do unto others as you would be done tha
तु others should do.

दूसरोंके साथ ऐसा बरताव करा जैसा के तुम
तुम्हारे साथ दूसरोंका बरताव हुवा चाहते हो.

